अनुक्रम

मई की रात, या डूबी लड़की

9323

> भगवान ही जाने कि इसका क्या मतलब लगाया जाये! अच्छे भले धर्मभीरु लोग कुछ करने का बीड़ा उठाते हैं और खरगोश का पीछा करते हुए शिकारी कुत्तों की तरह अपना खून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन उसका कोई भी नतीजा नहीं निकलता लेकिन जिस क्षण शैतान अपनी नाक घुसेड़ता है और अपनी दुम फटकारता है तब – जानते हैं आप – हर चीज़ जैसे आसमान से बरसने लगती है।

१

हान्ना

स० गाव की गलियों में एक सुरीला गीत गूंज उठा। गोधूलि की वेला थी, जब गाव के लड़के-लड़कियां दिन-भर के काम के बाद थककर संध्या के स्वच्छ आकाश की आभा में एक जगह जमा हो जाते हैं और अपनी उल्लसित आत्मा को गीतों में उड़ेल देते हैं, जिनके सुरों में हमेशा उदासी की चमक होती है। विचारों में डूबी हुई सध्या ने उदास होकर गहरे नीले आकाश को गले लगा लिया और हर चीज़ में अस्पष्टता और बिलगाव की भावना भर दी। झुटपुटा छाने लगा था फिर भी गीत शांत नही हुए। गाव के मुखिया का बेटा नौजवान कज़ाक लेव्को गीतों की धूम मचानेवालों से बचकर अपने हाथ में बंदूरा* लिये उधर आ निकला। उसने अपने सिर पर मेमने की खाल की टोपी पहन रखी थी।

---

* तारवाला उभाड़नी अधगोला बाजा जो आम तौर पर उंगली पर हड्डी की बनी मिज़राब पहनकर बजाया जाता है। – स०

रात अंधेरे में उसके उद्दीप्त नयन स्वागत की ज्योति से नन्हे-नन्हे सितारों की तरह चमक रहे थे, उसके गले में लाल मूंगों का हार पड़ा हुआ था, युवक की तीव्र दृष्टि ने उसके गालों पर बिखरी हुई लाज की गुलाबी आभा को भी देख लिया था।

"ऐसी भी बेसब्री क्या," लड़की ने दबे स्वर में उससे कहा। "इतनी जल्दी रूठ भी गये! इस वक्त आने की क्या जरूरत थी सड़क पर झुंड लोग आ-जा रहे हैं मैं तो थर-थर कांप रही हूं

"अरे, मेरी कोमल सुकुमार सोनजूही की बेल, थर-थर कांपो नहीं! आकर मेरे कलेजे से लग जाओ!" युवा प्रेमी ने उसे अपनी बांहों में समेटते हुए कहा और गले में लंबे-से पट्टे से लटके हुए बदूरे को एक तरफ हटाते हुए वह उसके साथ दरवाजे की चौखट पर बैठ गया। "तुम जानती हो कि तुम्हें देखे बिना मैं घड़ी-भर भी जिंदा नहीं रह सकता।"

"जानते हो मैं क्या सोचती हूं?" लड़की उसकी आंखों में आंखें डालकर देखते हुए बोली। "एक हल्की-सी आवाज मेरे कान में कहती रहती है कि एक वक्त ऐसा आयेगा जब हम एक-दूसरे से इस तरह बार-बार नहीं मिल सकेंगे। तुम्हारे यहां के लोग बड़े कमीने हैं सारी लड़कियां कैसे जलकर देखती हैं, और छोकरे मैंने तो यह बात भी देखी है कि मेरी मां अब मुझ पर ज्यादा कड़ी नजर रखने लगी है। सच कहती हूं कि जब मैं अजनबियों के बीच रहती थी तो मैं ज्यादा खुश थी।"

ये अंतिम शब्द कहते हुए उसके चेहरे पर उदासी छा गयी।

"अपने गांव में वापस आये हुए दो ही महीने हुए हैं और तुम अभी से उकता गयीं। मैं समझता हूं कि तुम मुझसे भी ऊब गयी होगी।"

"अरे नहीं, तुमसे नहीं," उसने मुस्कराते हुए कहा। "तुम्हें तो मैं प्यार करती हूं, मेरे सलोने कज़ाक! मुझे तुम्हारी बादामी आंखों से प्यार है, जिस तरह वे मुझे देखती हैं उससे मुझे प्यार है – मुझे ऐसा लगता है कि मेरे अंदर मेरी आत्मा मुस्करा रही है और इससे मेरा मन खिल उठता है, जिस दोस्ताना ढंग से तुम अपनी मूछें फड़काते हो उससे मुझे प्यार है, जिस तरह तुम अपना बदूरा बजाते हुए चलते हो उससे मुझे प्यार है, और मुझे तुम्हारा गाना सुनना अच्छा लगता है।"

"मेरी प्यारी हान्ना!" लड़के ने उसे चूमते हुए और उसे कसकर अपने सीने से भींचते हुए कहा।

"नही, हान्ना, भगवान के पास एक लबी-सी सीढ़ी है जो स्वर्ग से पृथ्वी तक चली आती है। ईस्टर के इतवार से पहलेवाली रात को सबसे बडे फरिश्ते यह सीढ़ी लगा देते हैं और जैसे ही भगवान उसके पहले डडे पर अपना पाव रखते हैं सारी अपवित्र आत्माए लुढककर नरक मे पहुच जाती हैं और यही वजह है कि ईसा के पुनरोत्थान के दिन पृथ्वी पर एक भी दुष्ट आत्मा नही रह जाती।"

"सुनो, पानी कैसे हिलोरे लेता हुआ चुपचाप बह रहा है, जैसे बच्चा पालने मे भूलता है!" मेपिल के गहरे रग के उदास पेडो और निराश भाव से पानी मे अपनी जटाए भुलाते हुए बेदवृक्षो से घिरे तालाब की ओर इशारा करके हान्ना अपनी बात कहती रही। दुर्बल बूढे की तरह तालाब ने अधकारमय और सुदूर आकाश को अपनी ठडी बाहो मे समेट रखा था, और वह सुलगते हुए सितारो पर अपने बर्फीले चुबनो की बौछार कर रहा था, रात की हवा की हल्की-हल्की सुखद आच मे सितारे मद ज्योति से इस तरह टिमटिमा रहे थे मानो किसी भी क्षण निशा की जगमगाती हुई देवी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हो। जगल से लगी हुई पहाडी पर लकडी की एक पुरानी झोपडी बद किवाडो के पीछे सो रही थी, उसकी छत पर काई जमी हुई थी और घास-फूस उगा हुआ था, उसकी खिडकियो को जगली सेब के घने पेडो ने पूरी तरह ढक रखा था, जगल अपनी मलिन छाया उस कुटिया पर डाल रहा था जिसकी वजह से वह अधकारमय और भयावह लगने लगी थी, कुटिया से नीचे पहाडी की ढलान पर अखरोट के पेडो का एक झुरमुट था जो नीचे तालाब तक फैला हुआ था।

"मुझे एक बार की बात याद है, बहुत पहले की जैसे कोई सपना देखा हो," हान्ना ने उसकी ओर देखते हुए कहा जब मैं छोटी-सी थी और ननिहाल मे रहती थी, तब मैंने उस पुराने घर के बारे मे एक डरावनी कहानी सुनी थी। लेस्को, तुम्हे वह कहानी जरूर मालूम होगी, मुझे सुनाओ न!"

"तुम उसके बारे मे परेशान न हो, मेरी जान! बूढी औरते और बेवकूफ लोग दुनिया-भर की बकवास करते रहते हैं। तुम बेकार परेशान होगी, तुम्हारे दिल मे डर समा जायेगा और तुम्हे नीद नही आयेगी।

"नही, बताओ मुझे, बताओ न, मेरे सलोने राजकुमार!"

उसे पानी मे खीच ले गयी। लेकिन चुड़ैल ने उन सबको चकमा दे दिया पानी के नीचे पहुचकर उसने एक डूबी हुई औरत का रूप धारण कर लिया और इस भेस मे वे औरते हरे सरकडे के कोडो से उसकी जो पिटाई करना चाहती थी उससे वह बच गयी। इन बुढ़ियो को भी कैसी-कैसी बाते सूझती है! लोग यह भी कहते हैं कि वह डूबी हुई लडकी रोज रात को अपनी मारी औरतो को जमा करती है और यह पता लगाने के लिए उनके चेहरो को घूर-घूरकर देखती है कि उनमे से वह चुड़ैल कौन-सी है, लेकिन अभी तक वह उसका पता नही लगा पायी है। और अगर कोई जिंदा आदमी उसके चगुल मे फस जाता है तो वह फौरन उसे डुबो देने की धमकी देकर यह अटकल लगाने के लिए मजबूर करती है कि उनमे से वह चुड़ैल कौन-सी है। तो, मेरी प्यारी हान्ना, बूढ़े लोग यही सब बकवास करते रहते हैं! उस घर का मौजूदा मालिक वहा शराब की भट्ठी लगाना चाहता है और उसे चलाने के लिए उसने एक शराब बनानेवाले को खास तौर पर वहा भेजा भी है. रुको, मुझे कुछ आवाजे सुनायी दे रही हैं। छोकरे गा-बजाकर लौट रहे हैं। अच्छा, हान्ना, मैं चलता हू! सुख की नीद सोना—बुढ़ियो की उन कहानियो को बिल्कुल भूल जाना!"

यह कहकर उसने कसकर उसे सीने से लगाया, उसे प्यार किया और चला गया।

"अलविदा, लेव्को!" हान्ना ने अपनी विचारमग्न आखे अधेरे जगल की ओर फेरते हुए जवाब दिया।

उसी क्षण चाद के बड़े-से दमकते हुए गोले ने क्षितिज के पीछे से बड़ी शान से उभरना शुरू किया। उसका आधा हिस्सा अभी तक छिपा हुआ था लेकिन उसकी जादू-भरी रोशनी सारी दुनिया मे फैल गयी थी। तालाब जिंदा होकर झिलमिला रहा था। अधकारमय पृष्ठभूमि पर पेडो की परछाइया साफ पहचानी जा सकती थी।

"अलविदा, हान्ना!" उसे अपने पीछे से किसी की आवाज सुनायी दी और इन शब्दो के साथ ही किसी ने उसे चूम लिया।

"तुम वापस आ गये!" उसने पीछे मुडकर देखते हुए कहा, लेकिन अपने सामने एक बिल्कुल अजनबी को देखकर उसने फिर मुह फेर लिया।

से रेंगकर उन पर चढ़ जाती है और उन्हे चूम लेती है। समस्त दृश्यावली सोयी हुई है। ऊपर आसमान सास ले रहा है, हर वस्तु भव्य तथा शातचित्त है। मन मे एक उत्कृष्ट भावना उमड़ती है और उसकी गहराइयो मे से कितनी ही झिलमिलाती हुई कल्पनाए उभरती हैं। दिव्य रात! मत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! सहसा हर चीज़ सजीव हो उठती है जगल, तालाब और स्तेपी। उक्राइनी बुलबुल का मधुर सगीत कानो मे रस घोलता है और आकाश के बीच मे चाद ऐसा ध्यान मे डूबा हुआ ठहर जाता है मानो वह भी उसका गीत सुन रहा हो ऊचाई पर बसा हुआ गाव ऐसे सो रहा है जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। झोपडियो के झुरमुट चाद की रोशनी मे चादी की तरह चमक रहे है, उनकी नीची-नीची दीवारो की सफेद रूपरेखा चारो ओर के अधकार की पृष्ठभूमि पर और भी उभरकर सामने आ जाती है। गीत शात हो गये हैं। चारो ओर सन्नाटा है। सभी धर्मभीरु नेक ईसाई गहरी नीद सो रहे हैं। कही-कही रोशनी की पतली-सी धज्जी झरोखे मे से झाक लेती है। एक-दो झोपडियो के सामनेवाली खुली जगह मे कोई सदगामी विलबी परिवार रात गये अपना भोजन समाप्त कर रहा है।

"अरे नही, ऐसे नही नाचा जाता है होपक नाच! उन लोगो की ताल ही ठीक नही पड रही थी! वह उसका भाई क्या कह रहा था?. इस तरह है उसकी ताल ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!" यह बातचीत नशे मे चूर एक बूढा किसान सडक पर नाचते हुए अपने आपसे कर रहा था। "कसम खाकर कहता हू, यह होपक नाचने का कोई तरीका नही है! भगवान कसम, ऐसे नही! मैं झूठ क्यो बोलू? ऐसे बिल्कुल नही! आ जाओ! ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!"

"इसका तो दिमाग उतर गया पटरी पर से! अगर कोई नौजवान आदमी होता तो समझ मे भी आने की बात थी, लेकिन देखो तो इस खूसट बूढे को, आधी रात को बीच सडक पर बेवकूफो की तरह नाच रहा है!" उसी की उम्र की एक औरत ने, जो हाथ मे पयाल का गट्ठा लिये चली जा रही थी, चिल्लाकर कहा। "अब घर वापस जाओ! सोने का वक्त हो गया!"

"जाता हू!" किसान ने रुककर कहा। "जाता हू। और मुखिया की मुझे परवाह ही क्या है। यह क्यो समझता है वह, उसके बाप

लेकिन आखिर यह मुखिया है कौन जिसे लोग इतनी गालियां देते है? ओहो, यह मुखिया गाव का बहुत बड़ा आदमी है। जितनी देर कलेनिक अपना रास्ता तै कर रहा है उतनी देर मे हम कुछ शब्द मुखिया के बारे मे बता दे। सारा गाव उसे देखते ही अपनी टोपी उतार लेता है और जवान से जवान लडकिया भी कहती हैं: "सलाम, चौधरी!" हर नौजवान मुखिया बनने के सपने देखता है। मुखिया को पूरी छूट होती है कि गाव मे जिसकी जितनी नसवार चाहे ले ले, हट्टे-कट्टे किसान बड़े आदर के भाव मे हाथ मे अपनी टोपी लिये खडे रहते हैं और मुखिया अपनी मोटी-मोटी भद्दी उगलियो से रग-बिरगे चित्रो से सजी हुई उनकी डिबियो मे से नसवार निकालता रहता है। गाव की पचायत मे, या ग्राम-सभा मे, इस बात के बावजूद कि उसकी सत्ता दो-चार वोटो के बल पर ही है, मुखिया का पलडा हमेशा भारी रहता है और वह जिसे भी चाहता है उसे सडक चौरस करने या खाइया खोदने जैसे कामो पर लगा देता है। मुखिया की सूरत हमेशा मनहूस लगती है, देखने मे वह हरदम भल्लाया रहता है, और उसे ज्यादा बोलना पसद नही है। बहुत दिन हुए, बहुत पहले की बात है, जब हमारी महारानी कैथरीन, भगवान उनकी आत्मा को शाति दे, क्रीमिया की यात्रा* पर गयी थी, तो उसे उनके मार्गदर्शक का काम करने के लिए चुना गया था, उसने पूरे दो दिन तक अपना यह काम किया था और उसे शाही बग्घी पर महारानी के कोचवान के पास बैठने का भी मुअवसर मिला था। तब से मुखिया की आदत पड गयी थी कि वह विचारमग्न होकर, रोबदार सूरत बनाये, अपनी लबी-लबी नीचे ऐंठी हुई नुकीली मूछो पर ताव देता हुआ सिर झुकाकर चलता था, और भवो के नीचे से चारो ओर बाज जैसी दृष्टि से देखता जाता था। और तभी से, चाहे जिस विषय पर चर्चा क्यो न हो रही हो, मुखिया इस बात का जिक्र करने का कोई मौका नही चूकता था कि किस तरह उसने महारानी को यात्रा करायी थी और शाही बग्घी पर कोचवान के पास बैठा था। मुखिया कभी-कभी यह

---

* सकेत कैथरीन महान (१७६२—१७९६) की क्रीमिया की यात्रा की ओर है, जिस पर रूस ने १७८३ मे अधिकार कर लिया था।—स०

३

अप्रत्याशित प्रतिद्वंद्वी। षड्यंत्र

"नहीं यारो, नहीं, मैं इस चक्कर में नहीं पड़ता! बस, बहुत हो चुका! तुम लोग अपनी इन शरारतों से थक नहीं जाते? मैं भी सारा गाव समझने लगा है कि हम बड़े उपद्रवी हैं। चलो, सोने का वक्त हो गया है!" यह था अपने ऊधमी दोस्तों को लेव्को का जवाब जब उन्होंने अपनी नयी शरारतों के लिए उसे भी अपने साथ ले चलने की कोशिश की। "अच्छा, मैं तो चला, दोस्तो! तुम सब लोगों को सलाम!" उसने पुकारकर कहा और तेज कदम बढ़ाता हुआ सड़क पर चल दिया।

"क्या मेरी मृगनयनी हान्ना इस वक्त सो रही होगी?" चेरी के पेडोंवाले घर के पास पहुचकर उसने सोचा। चारों ओर की निस्तब्धता में उसे कुछ आवाजों की धीमी-धीमी मरमर-ध्वनि सुनायी दी। लेव्को ठिठक गया। उसे पेडो के बीच से एक सफेद ब्लाउज साफ दिखायी दे रहा था "क्या हो रहा है?" दबे पाव कुछ और पास जाकर एक पेड के पीछे छिपकर वह सोचने लगा। उसके सामने लडकी के चेहरे पर चादनी चमक रही थी हान्ना! लेकिन यह लबा-सा आदमी कौन था जो उसकी ओर पीठ किये खड़ा था? वह उसे भाककर देखने का व्यर्थ प्रयास करने लगा परछाइयो के बीच वह आदमी बिल्कुल पहचाना नही जा रहा था। सिर्फ सामने से उस पर कुछ रोशनी पड रही थी, लेकिन जरा-सा भी आगे कदम बढाने पर लेव्को देखा जाता। चुपचाप एक पेड का सहारा लेकर उसने जहा वह था वही रुके रहने का फैसला किया। उसने साफ सुना कि लडकी ने उसका नाम लिया।

"लेव्को? लेव्को तो अभी दुध-मुहा है!" उस लबे आदमी ने भर्रायी हुई दबी आवाज में कहा। "अगर मैंने कभी उसे तुम्हारे साथ पकड लिया तो मैं उसकी माथे की लट ऐसी खीचूगा कि याद करेगा!"

"कुछ पता तो चले कि आखिर यह सुअर है कौन जो माथे की लट खीचना चाहता है!" लेव्को हर शब्द सुनने की उत्सुकता में अपनी गर्दन सारस की तरह आगे बढाकर मुह ही मुह मे बुडबुडाया।

हाथ चलाकर और पाव पटककर जोर से चिल्लाया। "मैं तुम लोगो की हान्ना कब से बन गया? जाओ, तुम लोग भी जाकर अपने-अपने बाप की तरह फासी चढ जाओ, शैतान के बच्चो! देखो तो, ऐसे टूट पडे जैसे शीरे पर मक्खिया टूट पडती है चलो, भागो यहा से! नही तो मैं अभी तुम्हे हान्ना बना दूगा। "

"मुखिया! मुखिया! यह तो मुखिया है!" लड़के चिल्लाते हुए जल्दी-जल्दी तितर-बितर हो गये।

"अच्छा, पापा!" इस रहस्योद्घाटन के आघात का प्रभाव दूर होने पर लेव्को ने मुखिया को लबे-लबे डग भरते हुए और चारो ओर गालियो की बौछार करते हुए जाते देखकर कहा। "तो ये हरकते है तुम्हारी! अच्छा चक्कर चला रखा है! और मैं यह समझने के लिए सिर खपाता रहा कि जब भी मैं शादी की बात करता हू तो वह मेरी बात अनसुनी क्यो कर देता है। ठहर जा, खूसट बूढे, मैं तुझे नौजवान छोकरियो की खिडकियो के सामने मडलाने का मजा चखाता हू, मैं बताता हू तुझे कि दूसरो की लडकिया उडा ले जाने का क्या मतलब होता है! सुनते हो, यारो! यहा आओ! इधर आओ!" उसने हाथ हिलाकर अपने साथियो को पुकारा, जो फिर गरोहबद हो गये थे। "यहा तो आओ! मैंने ही तुमसे जाकर सो जाने को कहा था, लेकिन अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और मैं तुम लोगो के साथ चलकर रात-भर हगामा मचाने को तैयार हू।"

"यह हुई बात!" चौडे कधोवाले एक तगडे-से लडके ने कहा, जो आम तौर पर गाव का सबसे बडा बाका-छैला समझा जाता था। "मैं समझता हू कि जब तक जमकर धूम न मचायी जाये और कुछ असली हंगामा न किये जाये तब तक बेकार रात बर्बाद होगी। ऐसा लगता है जैसे किसी चीज की कमी रह गयी है। जैसे हैट या पादर खो गया हो लगता ही नही कि असली त्योहार हो।"

"आज रात मुखिया की अच्छी तरह खबर लेने के बारे मे क्या ख्याल है?"

"मुखिया की?"

"मैं कहता हू, आखिर वह अपने आपको समझता क्या है? हमारे ऊपर ऐसे हुक्म चलाता है जैसे कही का सुल्तान हो। जिस तरह हम

सड़क पर जलेबी बनाते हुए टेढ़े-टेढ़े चल रहे होगे।"

यह वाक्य बोलते समय शराब बनानेवाले की छोटी-छोटी आखे कान तक फैली हुई भुर्रियो मे खोकर रह गयी, उसका सारा शरीर मस्ती-भरी हसी से हिल उठा और एक क्षण के लिए पाइप पर उसके चुलबुले होठो की पकड़ ढीली पड़ गयी।

"हम मनाते हैं कि ऐसा ही हो," मुखिया ने कहा और उसके चेहरे पर मुस्कराहट-सी दौड़ गयी। "आजकल, भगवान की कृपा से, आस-पास तो शराब की भट्टिया कम ही हैं। लेकिन मुझे याद है कि पुराने जमाने मे जब मैं महारानी की शाही सवारी के साथ पेरेयास्लाव्लवाली सड़क से गया था, तब बेज़बोरोद्को* भी, भगवान उनकी आत्मा को शाति दे ."

"कैसी बाते करते हो, चौधरी, तुम्हारी याद को क्या हो गया है! उन दिनो तो त्रेमेनचुग से रोमनी तक शराब की दो भट्टिया भी नही थी। लेकिन अब . कुछ सुना, उन कमबख्त जर्मनो ने क्या तरकीब सोची है? कहते है कि जल्दी ही वह दिन आनेवाला है जब शराब लकड़ी की आच पर नही खीची जायेगी, जैसा कि सभी भले ईसाई अब तक करते आये हैं, बल्कि उसके लिए कोई शैतानी भाप इस्तेमाल की जायेगी।" यह कहकर शराब बनानेवाला विचारमग्न होकर मेज को और उस पर रखे हुए अपने हाथो को देखने लगा। "भगवान ही जाने भाप से वे लोग कैसे यह काम करते है!"

"भगवान कसम, ये जर्मन भी निरे काठ के उल्लू हैं!" मुखिया ने कहा। "उन सबकी तो डडे से खबर ली जानी चाहिये, कुत्ते कही के! भला आज तक किसी ने सुना है कि कोई चीज भाप से उबाली जाती हो?! क्या उन्हे यह भी नही मालूम कि खौलते हुए चुकदर के शोरबे का चम्मच होठ से लगाओ तो होठ सूअर के गोश्त की बोटी की तरह भुनकर रह जाते हैं . "

"मगर यह तो बताओ, भैया," मुखिया की साली ने, जो चूल्हे के पासवाली बेच पर टागे मोड़े बैठी थी, पूछा, "कब तक अपनी घरवाली को लाये बिना तुम यहा ऐसे ही रहोगे?"

---

* बेज़बोरोद्को, अलेक्सांद्र अंद्रेयेविच (१७४७-१७९९) – १७७५ मे कैथरीन महान के सचिव, विदेश मत्री की हैसियत से वह महारानी की क्रीमिया-यात्रा पर उनके साथ गये थे। – स०

मुखिया को रोकते हुए कहा। बहुत काम का आदमी है, इसके जैसे कुछ और लोग आस-पास हो तो हमारा कारोबार चमक उठेगा

लेकिन उसने ये शब्द मानवीय दया-भाव से प्रेरित होकर नही कहे थे। शराब बनानेवाला अंधविश्वासी आदमी था और वह समझता था कि जो आदमी तुम्हारे घर आकर बैठ चुका हो उसे खदेड़कर निकाल देना अपनी तबाही बुलाना है।

'बुढ़ापा भी कैसे चुपके-चुपके आकर धर दबोचता है!' क्लेनिक बेंच पर लेटते हुए बुड़बुड़ाया। "अगर मैं पिये होता तब भी कोई बात थी लेकिन इस वक्त तो मैं बिल्कुल नशे मे नही हू। भगवान कसम मैं नशे मे नही! मैं भला झूठ क्यो बोलने लगा? खुद मुखिया के सामने मैं कसम खाने को तैयार हू। मै कोई मुखिया से डरता हू? मै तो यही मनाता हू कि वह मर जाये, कुत्ते का पिल्ला! मैं थूकता हू उस पर! भगवान करे, वह गाड़ी के नीचे कुचल जाये काना दज्जाल! वह आखिर समझता क्या है कि वह क्या कर रहा है, पाले मे ठिठुरते हुए लोगो पर पानी डाल रहा है '

"हूह! सुअर को घर मे घुसने दो तो वह सिर पर चढ आता है मुखिया ने गुस्से से उठकर खड़े होते हुए कहा लेकिन उसी क्षण एक बड़ा-सा पत्थर खिड़की के काच को चकनाचूर करता हुआ उसके पाव के पास आकर गिरा। मुखिया चौक पड़ा। अगर पता चला गया कि किस बदमाश ने यह फेका है ' वह पत्थर उठाकर गुस्से म खौलता हुआ बोला, "तो मैं उसे अभी पत्थर फेकना सिखा दूगा। आखिर यह सब हो क्या रहा है!' वह पत्थर को गुस्से से घूरते हुए कहता रहा। ' यही पत्थर गले मे फसे और दम घुट जाये उसका

"नही नही, ऐसा नही कहते! भगवान तुम्हे बनाये रखे भैया!' शराब बनानेवाले ने उसकी बात काटकर कहा दहशत के मारे उसका रग बिल्कुल सफेद पड़ गया था। ' भगवान तुम्हे बनाये रखे इस लोक मे भी और परलोक मे भी, किसी को इस तरह नही कोसते!"

"तुम उसका पक्ष क्यो लेना चाहते हो? भगवान करे उसके कीड़े पड़े! "

"ऐसी बात सोचना भी न, भैया! तुम्हे तो मालूम ही होगा मेरी स्वर्गवासी सास को क्या हुआ था?"

हर गड़बड़ी का राज जानती
मनचली की नजर पहचानती
सूने जैसा मुंह छिपाना
आगे पीछे है मंडराता
पकड़ो अपना कहा है बहुत
मगर है इसकी नजर के अंदर
चोर के उगल इसको गाड़ो
इसकी सभी मूंछ उखाड़ो
खींचो इसकी सभी चोटी
काटो इसकी बोटी-बोटी
मारो का यह भूत पुराना
बातों से कब भला यह माना।

"बहुत बढ़िया गाना है, चौधरी!" शराब बनानेवाले ने अपना सिर एक ओर झुकाकर फड़ककर कहा। उसने मुड़कर मुखिया की ओर देखा, जो ऐसी अपमान-भरी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया था। "अव्वल दर्जे का! बस, इतनी बात बुरी है कि इन लोगों ने अपने मुखिया की चर्चा कुछ भले ढंग से नहीं की है ..." एक बार फिर उसने अपने हाथ मेज पर रख लिये और आंखों में कोमलता का भाव लिये सुनने के लिए तन्मय होकर बैठ गया, क्योंकि खिड़की के बाहर से "एक बार फिर गाओ! एक बार फिर सुनाओ!" की आवाजें आ रही थीं। लेकिन थोड़ी-सी भी गहरी नजर रखनेवाला आदमी फौरन यह देख सकता था कि मुखिया अब अचरज की वजह से अपनी जगह जमा नहीं खड़ा था। पुरानी तजुर्बेकार बिल्ली नौसिखिये चूहे को इसी तरह अपनी पूछ के पास कूदने-फांदने देती है, उसी बीच वह जल्दी-जल्दी यह तरकीब सोचती रहती है कि उसका भागकर बिल में घुस जाने का रास्ता कैसे रोका जाये। मुखिया की अच्छीवाली आंख अभी तक खिड़की पर जमी थी, लेकिन उसका हाथ, जिससे उसने पुलिसवाले को इशारा कर दिया था, दरवाजे के लकड़ी के हैंडिल पर पहुंच चुका था। अचानक बाहर सड़क पर बहुत जोर से शोर मचने लगा . शराब बनानेवाले ने, जिसके बहुत-से दूसरे गुणों में उत्सुकता का गुण भी शामिल था, जल्दी-जल्दी अपने पाइप में तबाकू भरी और भागकर बाहर जा पहुंचा, लेकिन तब तक सारे छोकरे नौ दो ग्यारह हो चुके थे।

के पास आते हुए कहा, "तुम्हारा जो थोड़ा-बहुत दिमाग है वह भी तो नहीं खराब हो गया है? जब तुमने मुझे उस कोठरी मे ढकेला था तब तुम्हारी उस कानी खोपड़ी मे रत्ती-भर भी अकल बची थी कि नहीं? वह तो कहो तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि मेरा सिर जाकर उस लोहे के कुंडे से नहीं टकराया। तुमने मुझे चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते नहीं सुना था कि अरे, यह मैं हू? तुमने किसी बावले रीछ की तरह मुझे अपने फौलादी पंजो मे जकड़कर अंदर ढकेल दिया! मैं तो मनाती हू कि नरक की अंधेरी कोठरी मे तुम्हें भी शैतान ऐसे ही ढकेल दे।"

यह आखिरी बार उसने किसी निजी काम से बाहर जाते हुए दरवाजे पर से किया।

"हा, अब मेरी समझ मे आया कि वह तुम थी!" मुखिया ने अपने होश-हवास ठीक होने पर कहा। "क्या कहते हैं, मुंशीजी वह कमबख्त उस्तानी सचमुच बड़ा बदमाश था, मानते है न?"

"सचमुच, बड़ा बदमाश था, मुखियाजी।"

"उन बेवकूफों को कड़ी सजा देने का वक्त आ गया है है न? उन लोगो को किसी ढंग के काम मे लगाना चाहिये।"

"हा, बिल्कुल ठीक है, मुखियाजी।

"उन बेवकूफों ने समझ रखा है अरे, यह हंगामा क्या हो रहा है? मुझे ऐसा लगा कि सड़क पर से मुझे अपनी साली के चीखने की आवाज सुनायी दी, उन लोगो ने समझ रखा है कि मैं उनके बराबर का हू। वे समझते हैं कि मैं भी उन्ही जैसा हू सीधा-सादा कज़ाक!" – इतना कहकर मुखिया ने थोड़ा-सा अपना गला साफ किया और अपनी भौंहे सिकोड़कर घूरना शुरू किया जिससे साफ जाहिर था कि वह किसी गंभीर समस्या के बारे में बोलने की तैयारी कर रहा है। "सन् अट्ठारह सौ सात मे ये कमबख्त तारीखें मेरी जबान से कभी ठीक से निकलती ही नहीं और उस साल उस जमाने के कमिश्नर लेदाखी को यह काम सौंपा गया कि वह सारे कज़ाकों में से एक ऐसा आदमी चुने जो सबसे बढ़कर तेज और समझदार हो। वाह! –और इस 'वाह!' का उच्चारण मुखिया ने अपनी उंगली ऊपर उठाकर किया जो सबसे बढ़कर तेज और समझदार हो! महारानी के साथ रास्ता दिखानेवाले की हैसियत से जाने के लिए।

चाभी निकालकर उसे ताले मे लगाकर कई बार झटका दिया, लेकिन चाभी उसके सदूक की निकली। उन सबकी अधीरता बढती जा रही थी। जेब मे हाथ डालकर मुशीजी ने टटोलना और कोसना शुरू किया, लेकिन कोई फायदा नही हुआ। "यह रही!" उसने आखिरकार झुककर अपनी पतलून की थैले जैसी जेब की तली मे से चाभी निकालते हुए कहा। यह बात सुनकर हमारे सूरमाओ के दिल, एक तरह से, आपस मे मिलकर एक ही दिल बन गये, और यह बडा-सा दिल इतने ज़ोर-ज़ोर से धडकने लगा कि उसकी बेसुरी धडकन ताले की खडखडाहट मे भी नही दब सकी। दरवाज़ा खुला और मुखिया का रग बिल्कुल सफेद पड गया, शराब बनानेवाले को अचानक ठडी हवा के तेज़ झोके की मार का आभास हुआ और उसे ऐसा लगा कि उसके बाल उडकर आसमान पर पहुच जाना चाहते है। मुशीजी के चेहरे पर आतक का भाव छा गया और पुलिसवाले जमीन पर गडे रह गये और उनके मुह एकसाथ ऐसे खुले कि फिर उन्होने बद होने का नाम न लिया उनके सामने मुखिया की साली खडी थी!

उसे भी उन लोगो से कुछ कम आश्चर्य नही हो रहा था, लेकिन उसके होश-हवास कुछ ठिकाने आये, और उसने उनकी तरफ कदम बढाने की तैयारी की।

"रुक जाओ!" मुखिया बदहवास होकर चिल्लाया और उसने धड से दरवाज़ा उसके मुह पर बद कर दिया। "भाइयो! यह तो शैतान है!" वह कहता रहा। "आग लाओ! जल्दी से आग लाओ! झोपडी सरकारी सपत्ति है तो हुआ करे, मुझे इसकी परवाह नही। फूक दो इसे, जलाकर राख कर दो, ताकि इस धरती पर उस शैतान की बच्ची का नाम-निशान बाकी न रह जाये।"

मुखिया की साली दरवाज़े के पीछे से अपने खिलाफ यह भयानक फैसला सुनकर दहशत के मारे चीख पडी।

"क्या कह रहे हो, भाइयो!" शराब बनानेवाला बीच मे बोला। "हे दयानिधान! तुम लोगो के बाल न जाने कबके पक गये और अभी तक रत्ती-भर अकल नही आयी· मामूली आग से कही चुडैल जलती है! चुडैलो और भूतो को तो बस पाइप की आग जला सकती है। रुको मैं अभी सब ठीक किये देता हू!"

3*

छूट मिल जाये, ताकि कोई यह देखनेवाला न रह जाये कि नाना कैसे वृद्ध बन रहे है। तू समझता है कि मैं जानती नही कि आज शाम को हान्ना पर क्या डोरे डाले जा रहे थे? अरे, मुझे रत्ती-रत्ती सब मालूम है। तेरी गोबर-भरी खोपडी मे जितनी अकल है उससे कही ज्यादा अकल चाहिये मुझे बेवकूफ बनाने के लिए। मैंने बहुत बर्दाश्त किया है, लेकिन किसी दिन मैं तुझे इसका मज़ा चखाऊगी "

यह कहकर उसने मुखिया को धमकाते हुए मुक्का दिखाया और उसे वहीं भौचक्का खड़ा छोड़कर पाव पटकती हुई चली गयी। "नही, इसमे कोई शक नही है कि इसमे शैतान का गदा हाथ था," मुखिया ने अपना सिर खुजाकर सोचा।

"पकड लिया!" पुलिसवालो ने उसी समय भागकर आते हुए कहा।

"किसे पकड लिया?" मुखिया ने पूछा।

"उसी उल्टे कोटवाले शैतान को।"

"जरा लाना तो इधर, मैं अभी इसकी खबर लेता हू!" मुखिया ने कैदी की बाहो को पकडते हुए कहा। "तुम लोगो का दिमाग तो नही खराब हो गया है यह तो वह शराबी कलेनिक है!"

"क्या मुसीबत है?! लेकिन हमे पक्का मालूम है कि हमने उसे पकड़ा था, मुखियाजी!" पुलिसवालो ने जवाब दिया। "उन कमबख्त बदमाशो ने हम लोगो को सडक पर घेर लिया था, वे नाच रहे थे, हमे धक्के दे रहे थे, जीभ निकालकर हमे चिढा रहे थे, हमारी बाहे खीच रहे थे . और उसके बजाय इस कौए को हमने कैसे पकड लिया, भगवान ही जाने!"

"अपने अधिकार के बल पर और सारी जनता के अधिकार के बल पर मैं हुक्म देता हू," मुखिया ने एलान किया, "कि इस अपराधी को फौरन पकडा जाये, और जो लोग भी सडक पर घूमते हुए पाये जाये उनके साथ भी यही सलूक किया जाये, और उन्हे सज़ा देने के लिए मेरे सामने हाजिर किया जाये! "

"अरे नहीं, ऐसा न कीजिये, मुखियाजी!" कई पुलिसवाले मुखिया के सामने बहुत झुककर गिडगिडाये। "हम लोगो पर दया कीजिये· आपने उन लोगो के मनहूस चेहरे देखे होते भगवान जानता है, जबसे हम पैदा हुए हैं, या जबसे हमारा नामकरण हुआ है, तबसे

उठकर खड़े होते हुए आंखें मलकर कहा। उसने चारों ओर देखा रात की छटा और भी निखर आयी थी। चंद्रमा के प्रकाश में एक विचित्र, मंत्रमुग्ध कर देनेवाली चमक पैदा हो गयी थी। उसने ऐसा नयनाभिराम दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। आस-पास हर जगह रुपहला कुहरा छा गया था। हवा में सेब के बौर और रात के फूलों की सुगंध बसी हुई थी। आश्चर्यचकित होकर उसने तालाब के शांत जल को देखा। पुरानी हवेली का उल्टा प्रतिबिंब पानी में दिखायी दे रहा था, उसमें नयी चमक-दमक और भव्यता पैदा हो गयी थी। उसके अंधेरे दरवाज़ों की जगह चमचमाते हुए कांचवाली खिड़कियां और दरवाज़े लग गये थे। उनके निर्मल शीशों में सोने की चमक थी। फिर उसे लगा कि खिड़की खुल रही थी। वह दम साधे हुए था, तनिक भी हिलने-डुलने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी और वह अपनी नज़रें तालाब पर जमाये था। उसे ऐसा लगा कि तालाब उसे अपनी गहराई की ओर खींचे लिये जा रहा है। वह एकटक देखता रहा पहले खिड़की में एक गोरी-गोरी कुहनी दिखायी दी, फिर गहरे सुनहरे रंग के बालों की लहरों के बीच झमकता हुआ चमकदार आंखोंवाला एक नौजवान चेहरा आकर कुहनी पर टिक गया। वह टकटकी बांधे देख रहा था उस सुंदरी ने अपने सिर को हल्का-सा झटका दिया, हाथ हिलाया और हंस दी उसका दिल धक से रह गया पानी में हिलोरें उठीं और खिड़की फिर बंद हो गयी। वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ तालाब के पास से चला आया और नज़रें उठाकर उसने हवेली की ओर देखा अंधेरे दरवाज़े खुले हुए थे और खिड़कियों के शीशे चांदनी में चमक रहे थे। "इससे यही पता चलता है कि लोग कैसी बकवास करते हैं," उसने सोचा। "घर बिल्कुल नया है, रंग-रोगन ऐसा ताज़ा है जैसे आज ही लगाया गया हो। और उसमें कोई रहता भी है।" वह चुपचाप घर के और पास चला गया, लेकिन घर में कोई आवाज़ सुनायी नहीं दी। उसके चारों ओर बुलबुलों के मधुर गीतों की तेज़ गूंज पूरे वैभव से सुनायी दे रही थी, और आखिरकार जब इन गीतों ने मंद पड़ते-पड़ते बिल्कुल दम तोड़ दिया, मानो स्वयं उनकी भरपूर मिठास ने उनका गला घोंट दिया हो, तो उनकी जगह झींगुरों की री-री और तालाब के झिलमिलाते हुए पानी में अपनी चिकनी चोंच डिबोते हुए दलदली पक्षियों के कर्कश स्वर ने ले

उमने अपना गोरा-गोरा हाथ बढ़ाया, उमका चेहरा जादुई आभा मे चमक उठा उत्कठित उल्लास मे कापते हुए लेव्को का दिल जोर मे धड़कने लगा, उमने लपककर पर्चा ले लिया और जाग पड़ा।

६

जब आख खुली

"क्या वह सचमुच मपना था?" लेव्को मन ही मन मोचने लगा। 'ऐसा मच्चा, बिल्कुल जीता-जागता! कैसी अजीब बात है कैसी अजीब बात है!' " उमने चारो ओर नजर डालकर कई बार दोहराया।

चाद को देखने मे, जो अब मीधे उमके सिर के ऊपर आकर ठहर गया था, पता चलता था कि आधी रात का समय हो गया है, चारो ओर निस्तब्धता का राज था, तालाब की ओर मे ठडी हवा चल रही थी, ऊपर वह टूटा-फूटा पुराना घर अपने नम्ते जडे हुए किवाडो के पीछे उदास भाव मे खडा था, उस पर जमी हुई काई और हर जगह उगे हुए घास-फूस मे पता चल रहा था कि उसमे बसनेवाले आखिरी इसान उसे बहुत पहले छोडकर चले गये थे। उमने अपनी उगलिया फैलायी, जिन्हे उमने सोते समय भीच रखा था और अपने हाथ मे पर्चे का स्पर्श अनुभव करके वह आश्चर्य मे चिल्ला पडा। "कितना अच्छा होता अगर मैं इसे पढ पाता!" उमने पर्चे को हाथ मे उलट-पुलटकर देखते हुए भुझलाकर सोचा। उसी क्षण उसे अपने पीछे कुछ आवाजे सुनायी दी।

"डरो नही, आगे बढकर उसे पकड लो! इतना डर किसलिए रहे हो! हम दस आदमी है! मैं शर्त लगाता हू कि वह इसान ही है, शैतान तो नही!" लेव्को ने मुखिया को चिल्लाकर अपने साथियो से कहते हुए सुना, और इसके फौरन बाद लेव्को ने महसूस किया कि बहुत-से हाथो ने उसे कसकर पकड रखा था, जिनमे से कई हाथ डर के मारे बुरी तरह काप रहे थे। "आओ, यार, अब अपना यह बदसूरत मुखौटा उतार दो! बस, आज भर को बहुत शरारत कर चुके!" मुखिया ने उसका कालर पकडकर आदेश दिया। इसके बाद के शब्द उसके होठो पर जमकर रह गये, उसकी अच्छीवाली

अपना फ़र्ज़ कैसे निभाते हैं! अच्छा, लोगो, अब सोने का वक्त हो गया! जाओ तुम लोग! आज जो कुछ हुआ उससे मुझे वह ज़माना याद आता है जब मैं..." यह बात कहते हुए मुखिया ने अपने मुलाकातियों को हमेशा की तरह बड़े गौर से भौंहे सिकोड़कर देखा।

"चल पड़ा मुखिया का चर्चा कि वह महारानी की सवारी के साथ कैसे गया था!" लेव्को ने कहा और बहुत खुश होकर तेज़ कदमों से चेरी के छोटे-छोटे पेड़ोंवाले घर की ओर चल पड़ा। 'मेरी नव सुंदरी, भगवान तुम्हें हमेशा हर चिंता से दूर रखे!' उसने मन ही मन सोचा। 'अगले जनम में भी तुम सदा पाक फ़रिश्तों के बीच मुस्कराती रहो! आज रात जो चमत्कार हुआ है उसके बारे में मैं किसी को नहीं बताऊंगा, यह भेद मैं बस एक आदमी को बताऊंगा, हान्ना को। बस वही मेरी बात पर विश्वास करेगी और हम दोनों उस अभागी डूबी हुई लड़की की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करेंगे!'

यह कहते-कहते वह घर के पास पहुंच गया। खिड़की खुली हुई थी, चांद की चमकती किरणें खिड़की के पार जाकर सोती हुई हान्ना के शरीर पर पड़ रही थीं, उसके गालों पर नर्म-नर्म लाली की दमक थी। उसके होंठ हिल रहे थे और बुदबुदाकर उसका नाम ले रहे थे। "सोओ, मेरी मोतियों की खान! तुम्हें सारी सुंदर-सुंदर अच्छी-अच्छी चीज़ों के सपने आयें, लेकिन हमारा जागरण तुम्हारे इन सारे सपनों से भी सुखद होगा!" उसके ऊपर सलीब का निशान बनाकर उसने खिड़की बंद कर दी और चुपके से वहां से चला आया। कुछ ही मिनट बाद गांव में हर चीज़ सो रही थी, बस अकेला चांद वैभवशाली उक्राइनी आकाश के अनंत विस्तार पर अपनी पूरी जादुई छटा के साथ चमकता रहा। ऊपर आकाश पर इसी वैभव का राज रहा और रात, दिव्य रात, उसकी भव्यता में जगमगाती रही। नीचे उसकी रुपहली ज्योति में नहायी हुई धरती भी उतनी ही सुंदर लग रही थी, लेकिन अब इस सुंदरता को सराहनेवाला कोई भी आस-पास नहीं था। सभी लोग गहरी नींद सो रहे थे। बस कभी-कभी और बीच-बीच में कुत्तों के भूंकने और शराबी कलेनिक की आवाज़ से यह निस्तब्धता भंग हो जाती थी, जो अपनी झोंपड़ी की तलाश में सोयी हुई सड़कों पर भटक रहा था।
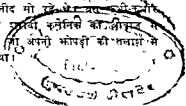
और पानी की फुहारें उनके खूबसूरत लिबास को, जिसके ऊपर पहनने का लिनेन का लबादा नही था, भिगो रही थी।

द्नेपर के बीच मे ऊची-ऊची पहाड़ियों, दूर तक फैले हुए घास के मैदानो, हरे-भरे जगलों का कितना मनोरम दृश्य दिखायी देता है! ये पहाडिया पहाडियो जैसी नही हैं: उनकी कोई तलहटी नहीं होती, बस एक तीखी चोटी नीचे होती है और ऊपर भी, और नीला आसमान उनके नीचे भी फैला रहता है और ऊपर भी। उनकी ढलानों पर उगे हुए जो जगल हैं वे जगल नहीं हैं: वे झबरे बाल हैं जो बूढे वन-दानव के सिर को ढके रहते हैं। वह अपनी दाढ़ी नीचे पानी में धोता है, और आकाश का विस्तार उसकी दाढी के नीचे भी फैला रहता है और बालो के ऊपर भी। वहा जो चरागाहे हैं वे चरागाहे नही है, बल्कि वे वह हरी पेटी हैं जो गोल आकाश को अपनी लपेट मे लेकर दो हिस्सो मे बाट देती है, और उसके ऊपरी आधे हिस्से मे चाद उसी तरह चहलकदमी करता रहता है जैसे नीचेवाले आधे हिस्से मे।

दनीलो न दाहिनी ओर देख रहा है न बायीं ओर, बल्कि अपनी नौजवान बीवी पर नजरें जमाये हुए है।

"यह तो बताओ, मेरी सुनहरी कतेरीना, कि तुम इतने गम मे डूबी हुई क्यो हो?"

"मैं गम मे डूबी हुई नही हू, मेरे सरताज दनीलो! उस जादूगर के बारे मे अजीब-अजीब कहानियो से मैं डर गयी थी। लोग कहते हैं कि जबसे वह पैदा हुआ है तभी से इतना बदसूरत है और कोई भी दूसरा बच्चा उसके साथ खेलना नही चाहता था। जैसी-जैसी भयानक बाते लोग कहते हैं उन्हे तुम सुनते, दनीलो उसे ऐसा लगता था कि सब लोग उस पर हस रहे हैं। अधेरी रात मे किसी से उसकी भेट हो जाती और फ़ौरन ऐसा प्रतीत होता कि उसने उस पर हसने के लिए अपना मुह खोला था। अगले दिन वह आदमी मरा हुआ पाया जाता। मैंने जब ये किस्से सुन, तो मैं बहुत डर गयी," कतेरीना ने गोद में सोये हुए बच्चे का मुह पोछने के लिए अपना रूमाल निकालते हुए कहा। उसने रूमाल पर लाल रेशम मे पत्तिया और बेरी के फल काढ़ रखे थे।

दनीलो चुप रहा और उसने अपनी आखे अधेरे की ओर फेर

जादूगर से डराना चाहती है!" दनीलो कहता रहा। "कज़ाक, भगवान की कृपा से, न शैतानों से डरता है न पोप के पादरियों से। अगर हम अपनी बीवियों की बात सुनने लगे तो हो चुका हमारा भला। ठीक है न, छोकरो? पाइप और तेज़ तलवार—यही कज़ाक की असली बीवी होती है!"

कतेरीना ने अपना मुह बद कर लिया, उसकी आखे ऊघते हुए पानी पर झुक गयी, हवा के झोको से पानी के धरातल पर छोटी-छोटी लहरे उठने लगी और सारी द्नेपर नदी रुपहली चमक से झिल-मिलाने लगी, रात मे जैसे भेड़िये के बाल चमकते हैं।

नाव थोड़ा-सा मुड़कर जगलो से ढके हुए किनारे के पास हो ली। अब उन्हे कब्रिस्तान दिखायी दे रहा था मौसम के थपेड़े खायी हुई सलीबे झुड बाधे खड़ी थी। उनके बीच न गेल्डर गुलाब खिले हुए थे न हरी-हरी घास उगी हुई थी, सिर्फ चाद आसमान की ऊचा-इयो से उन पर रोशनी बिखेर रहा था।

"तुम्हे किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनायी दे रही है, छोकरो? कोई हमे मदद के लिए पुकार रहा है!" दनीलो ने माझियो की ओर मुड़कर कहा।

"चिल्लाने की आवाज़े तो सुनायी दे रही हैं, उधर वहा से आती हुई लग रही है," छोकरो ने कब्रिस्तान की ओर इशारा करते हुए एक स्वर मे कहा।

लेकिन चारो ओर खामोशी छा गयी। नाव आगे को निकले हुए किनारे के साथ-साथ चलती रही। अचानक माझियो ने अपने डाडों को छोड दिया और स्तब्ध होकर सामने की ओर घूरने लगे। दनीलो भी स्तब्ध रह गया उसकी कज़ाक नसो मे भय की बर्फीली ठिठुरन समा गयी।

एक सलीब लड़खड़ायी और एक सूखी हुई लाश धीरे-धीरे कब्र मे से बाहर निकली। उसकी दाढ़ी कमर तक लटकी हुई थी, उसकी उगलियों पर उगलियों से भी लबे नाखून बढ़े हुए थे। उसने धीरे-धीरे अपनी बाहे ऊपर उठायी। उसका चेहरा काप रहा था और ऐंठा हुआ था, मानो किसी भयानक यातना से पीड़ित हो। "मुझसे सास नही

पापा, अपना हाथ इधर लाओ! आओ, जो कुछ भी हमारे बीच हुआ है उसे भूल जाये। अगर मैंने तुम्हारे साथ कोई ज्यादती की है तो उसके लिए मैं माफी मागता हू। तुम अपना हाथ क्यो नही बढ़ाते?" दनीलो ने कतेरीना के बाप से पूछा, जो उसी जगह पत्थर की तरह गडा हुआ खडा था, उसके चेहरे पर न क्रोध था और न सुलह-सफाई का भाव।

"पापा!" कतेरीना अपने बाप से लिपटकर उसे चूमते हुए चिल्लायी। "इतने कठोर न बनो, दनीलो को माफ कर दो वह अब तुमको फिर कभी परेशान नही करेगा!"

"बस तेरी खातिर, बेटी, मैं उसे माफ किये देता हू!" उसने अपनी बेटी को चूमते हुए जवाब दिया, उसकी आखो मे विचित्र चमक थी। कतेरीना थोड़ा-सा काप उठी उसे उसका चूमना और उसकी आखो की चमक दोनो ही अस्वाभाविक लगे। उसने अपनी कुहनियां उस मेज पर टिका ली जिस पर पान दनीलो अपनी जख्मी बाह पर पट्टी बाध रहा था, और लगातार यही सोच रहा था कि उसने कमजोरी का सबूत दिया था और जब उसने कोई गलती नहीं की थी तो माफी मागकर उसने ऐसा आचरण किया था जो किसी कज्जाक को शोभा नही देता।

लेरीना और नीले और पीले जुपान पहने दस वफादार छोकरे।
"मुझे गलूश्की बिल्कुल अच्छी नही लगती।" बाप ने एक-दो ग्रास खाकर चम्मच नीचे रखते हुए कहा, "उनमे कोई जायका नही होता।"
"मैं जानता हू तुम्हे क्या ज्यादा अच्छा लगेगा थोडे-से वह यहूदियोवाले नूडल," दनीलो ने मन ही मन सोचा।
"क्या वजह है, ससुरजी," उसने क्रम जारी रखते हुए कहा, "कि तुम्हे ये गलूश्की अच्छी नही लगती? क्या तुम्हारा कहने का मतलब है कि वे अच्छी बनी नही हैं? मेरी कतेरीना ऐसी अच्छी गलूश्की बनाती है जैसी हेटमैन* ने भी कभी न खायी होगी। तुम्हारे लिए नाक-भौं सिकोडने की कोई जरूरत नही है। यह ईसाइयो का बहुत अच्छा खाना है। सभी धर्मात्मा लोग और ईश्वर-भक्त सत गलूश्की खाते थे।"
बाप ने एक शब्द भी नही कहा दनीलो भी चुप हो गया।
बदगोभी और आलूबुखारे मिलाकर तैयार किया गया सुअर का भुना हुआ गोश्त परोसा गया।
"मुझे सुअर का गोश्त अच्छा नही लगता।" कतेरीना के बाप ने बदगोभी मे अपना चम्मच गडाते हुए कहा।
"लेकिन तुम्हे सुअर का गोश्त अच्छा क्यो नही लगता?" दनीलो ने पूछा। "सिर्फ यहूदी और तुर्क सुअर का गोश्त नही खाते।"
बाप का गुस्सा और भी भडक उठा।
आखिर मे बाप ने सिर्फ थोडा-सा कूटू का दलिया दूध के साथ खाया, और वोद्का के बजाय उसने एक बोतल मे से, जो वह अपनी कमीज के अदर रखता था, किसी काले पानी की चुस्की लगायी।
जब सब लोग खा-पी चुके तो दनीलो गहरी नीद सो गया और शाम को जाकर उसकी नीद खुली। वह उठकर बैठ गया और कज़ाको की फौजी छावनी के नाम खत लिखने लगा, इसी बीच कतेरीना चूल्हे के चबूतरे पर बैठी अपने पाव से पालना झुलाती रही। दनीलो एक आख, अपनी बायी आख, अपने खत पर और दाहिनी आख खिडकी पर जमाये रहा। दूर खिडकी के पार द्नेपर नदी और पहाड

---

* कज़ाक फौज के सेनापति और प्रमुख शासक। – स०

बद करके ताला लगा दो और चाभी अपने साथ लेते जाओ। तब मुझे इतना डर नहीं लगेगा ; कज़ाकों को दरवाज़े के सामने लिटा दो।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी!" दनीलो ने अपनी बदूक पर से गर्द पोछते हुए और उसके तोड़े मे बारूद भरते हुए कहा।

वफ़ादार स्तेत्स्को अपनी कज़ाक वर्दी पहने तैयार खडा था। दनीलो ने अपनी मेमने की खाल की टोपी पहनी, खिडकी बद की, दरवाज़े के कुडे लगाये, उसमे ताला लगाया, सोते हुए कज़ाकों के बीच कदम रखता हुआ चुपचाप आगन के बाहर निकला और पहाडियो की ओर चल दिया।

आसमान अब तक लगभग बिल्कुल साफ़ हो चुका था। द्नेपर की ओर से ताज़ा हवा का झोका आया। अगर दूर से समुद्री बगुलो के पुकारने की आवाज़ न आ रही होती तो ऐसा लगता कि हर चीज़ गूगी हो गयी है। लेकिन इतने मे उन्हे एक हल्की-सी सरसराहट की आवाज़ सुनायी दी दनीलो और उसका वफ़ादार नौकर कटीली झाडी के पीछे छिप गये जहा से लकडी का परकोटा दिखायी नहीं देता था। एक आदमी लाल ज़ुपान पहने, दो पिस्तौलें लिये, बगल मे तलवार लटकाये, पहाडी से नीचे उतर रहा था।

"यह तो ससुर है!" दनीलो ने अपनी छिपने की जगह से उसे ध्यान से देखते हुए आश्चर्य से कहा। "वह क्या कर रहा है, और इस वक्त रात को कहा जा रहा है? स्तेत्स्को! जम्हाई लेना बद करो, अपनी आखे खुली रखो और देखते रहो कि ससुर कहा जाता है।" लाल ज़ुपान पहने हुए वह आदमी नदी के किनारे पहुचा और पानी मे आगे को निकली हुई ज़मीन की पतली-सी पट्टी पर मुड गया। "अच्छा, तो वहा जा रहा है!" दनीलो ने कहा। "क्या कहते हो, स्तेत्स्को, वह सीधे जादूगर के अड्डे पर जा रहा है।"

"वहीं जा रहा है, पान दनीलो, कहीं और नहीं! वरना वह हम लोगो को दूसरी तरफ बाहर निकलता हुआ दिखायी देता। लेकिन वह क़िले के पास कहीं ग़ायब हो गया।"

"एक क्षण ठहरो, फिर हम यहा से निकलकर ऊपर चढ़ेगे और उसके कदमो के निशान देखते हुए आगे बढ़ेगे। इस तरह हमें कुछ पता चल जायेगा। तो, कतेरीना, मैंने तुमसे कहा था न कि तुम्हारा

की ओर ध्यान देता कि कोई खिड़की मे से देख रहा है या नही। वह गुस्से से भरा हुआ, बिफरा हुआ अदर आया, झपटकर उसने मेज पर से कपडा हटाया, और अचानक कमरे मे हल्की-हल्की नीली रोशनी फैल गयी। लेकिन कमरे मे जो धीमी-धीमी [illegible] हो रही थी उसकी लहरे इस नीली रोशनी की चमक मे फैल [illegible] जा रही थी इसके बजाय ऐसा लग रहा था कि उनमे नीले समुद्र की ज्वार-भाटे की लहरो की तरह उतार-चढ़ाव आ रहा है, और उनमे मखमल जैसी धारिया बन रही है। इसके बाद उसने मेज पर एक बर्तन रखा और उसमे जडी-बूटिया डालने [illegible]

दनीलो ने और ध्यान से नजर डाली और देखा कि वह अब लाल जुपान नही पहने हुए था, उसके बजाय उसने एक ढीला पतलून पहन रखा था जैसा कि तुर्क पहनते हैं, उसकी पेटी मे पिस्तौल खुसे हुए थे, सिर पर उसने एक अजीब-सी टोपी पहन रखी थी, जिस पर कोई विचित्र लिखावट थी, जिसके अक्षर न रूसी थे न पोलिस्तानी। दनीलो ने उसके चेहरे को देखा – और वह भी बदल गया नाक लबी हो गयी और झुककर उसके मुह के ऊपर आ गयी, एक क्षण मे उसका मुह फैल गया और उसके छोर उसके कानो तक पहुच गये, उसमे से एक दात बाहर को निकल आया और बगल की तरफ मुड गया – और अपने सामने उसने उसी जादूगर को खडा देखा जो येसऊल के यहा शादी की दावत मे आ धमका था। "तुम्हारा सपना बिल्कुल सच्चा था, कतेरीना!" दनीलो ने सोचा।

जादूगर मेज के चारो ओर टहलने लगा, दीवार पर प्रतीक-चिन्ह जल्दी-जल्दी सरकने लगे और चमगादड ज्यादा तेजी से इधर-उधर ऊपर-नीचे उडने लगे। नीली रोशनी मद्धिम होती गयी और लगभग बिल्कुल धुधली पड गयी। अब कमरा एक गुलाबी आभा से भर गया था। ऐसा लग रहा था कि कमरे के कोनो मे फैली हुई इस अजीब रोशनी मे से गूज पैदा हो रही थी, और फिर वह अचानक धुधली पड गयी और अधेरा छा गया। बस एक हल्की-हल्की गुजार सुनायी दे रही थी, जैसे शाम की हवा के कोमल झोके पानी की चिकनी सतह से खेल रहे हो, और रुपहले बेदवृक्षो को पानी के ऊपर और भी नीचा झुकाये दे रहे हो। दनीलो को ऐसा लगा कि कमरे मे चाद खुद चमक

जादूगर जहा खड़ा था वहीं निश्चल खड़ा रहा।

"कहा थी तुम?" उसने पूछा और जो औरत उसके सामने थी वह काप उठी।

"उफ़! तुमने मुझे बुलाया क्यो?" उसने धीरे से कराहकर कहा। "कितनी खुश थी मैं। मैं वही थी जहा मैं पैदा हुई थी, और जहा मैं पद्रह साल तक रही थी। ओह, कितना अच्छा था वहा। कितनी हरी-भरी और सुगध से बसी हुई है वह चरागाह जहा मैं बचपन मे खेलती थी, जगली फूल अब भी वैसे ही हैं, और हमारा घर, और हमारा बाग़! ओह, कितने प्यार से मेरी मा मुझे अपने कलेजे से लगाती थी! उसकी आखो मे कैसा प्यार चमकता था! वह मेरे लाड करती थी, मेरे होंटो और गालो को चूमती थी, मेरे सुनहरे बालो को अपनी महीन कघी से सवारती थी पापा!" उसने अपनी निस्तेज आखें जादूगर पर जमा दीं। "तुमने मेरी मा को क्यो मार डाला?"

जादूगर ने धमकी देते हुए अपनी उगली उसकी ओर हिलायी।

"क्या मैंने तुमसे ऐसी ही बाते करने को कहा था?" वह वायवीय सुदरी फिर काप उठी। "तुम्हारी मालकिन इस वक्त कहा है?"

"मेरी मालकिन कतेरीना इस वक्त सो रही है, और खुशी के मारे मैं उछलकर उनके सीने से बाहर निकल आयी और उड गयी। मैं अपनी मा को देखने के लिए तरसती रही हू। अचानक मैं फिर पद्रह साल की हो गयी, मैं बिल्कुल चिडिया जैसी हल्की-फुल्की हो गयी थी। तुमने मुझे क्यो बुलाया?"

"कल मैंने जो कुछ तुमसे कहा था वह सब तुम्हें याद है?" जादूगर ने इतने धीमे स्वर मे पूछा कि दनीलो उसकी बात मुश्किल से ही सुन पाया।

"मुझे याद है, बिल्कुल याद है; लेकिन उसे भूल जाने के लिए मैं क्या कुछ नही देने को तैयार हू! बेचारी कतेरीना! उसकी आत्मा को जो कुछ मालूम है उसका कितना थोडा ही सा हिस्सा वह जानती है।"

"यह तो कतेरीना की आत्मा है," दनीलो ने मन ही मन कहा, फिर भी उसकी हिलने-डुलने की हिम्मत न हुई।

५

"कितना अच्छा हुआ कि तुमने मुझे जगा दिया!" कतेरीना ने अपने ब्लाउज की कढी हुई आस्तीन से आखे पोछते हुए और सामने खडे हुए अपने पति को सिर से पाव तक देखते हुए कहा। "कैसा भयानक सपना देख रही थी मैं! सास लेने मे भी कितनी कठिनाई हो रही थी मुझे! ओह! ऐसा लगता था कि मैं मर रही हू! "

"मुझे अपना सपना बताओ, क्या वह इस तरह था?" और दनीलो ने अपनी बीवी को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था।

"लेकिन तुम्हे कैसे मालूम, मेरे सरताज?" कतेरीना ने आश्चर्य मे पूछा। "हालाकि जो तुम मुझे बता रहे हो उसमे बहुत कुछ ऐसा है जो मुझे मालूम नही है। नही, सपने मे मैंने यह नही देखा कि मेरे बाप ने मेरी मा को मार डाला था, न मैंने सपने मे लाशे देखी, मैंने सपने मे यह कुछ नही देखा। नही, दनीलो, तुम मुझे ठीक से नही बता रहे हो! ओह, कितना डर लगता है मुझे अपने बाप से!"

"इसमे कोई ताज्जुब की बात नही है कि तुमने इनमे से बहुत-सी बाते सपने मे नही देखी। तुम्हारी आत्मा को जो कुछ मालूम है उसका दसवा हिस्सा भी तुम नही जानती। क्या तुम्हे यह मालूम है कि तुम्हारा बाप ईसा-विरोधी है? अभी पिछले साल, जब मैं पोलिस्तानियो के साथ (उस वक्त तक उन विधर्मियो के साथ मेरी साठ-गाठ थी) क्रीमियाई तातारो के खिलाफ लडने जा रहा था तो ब्रात्स्क मठ के बडे पादरी ने – और वह बडे पवित्रात्मा हैं – मुझे बताया था कि ईसा-विरोधी मे इस बात की शक्ति होती है कि वह किसी भी आदमी की आत्मा को बुला ले जब आदमी सो रहा होता है तो उसकी आत्मा स्वच्छद विचरती रहती है, वह सबसे बडे फरिश्तो के साथ ईश्वर के निवासस्थान के चारो ओर मडलाती रहती है। मुझे तुम्हारे बाप की सूरत शुरू से ही अच्छी नही लगती थी। अगर मुझे मालूम होता कि तुम्हारा बाप सचमुच कौन है तो मैं तुमसे शादी न करता, मैं तुम्हे त्याग देता और कभी ईसा-विरोधियो की नस्ल के साथ अपना नाता जोडने का पाप न करता।"

"दनीलो!" कतेरीना ने हाथो से अपना मुह ढापकर सिसकते

गभीर था· उसके दिमाग मे अधेरी रात जैसे काले विचार उठ रहे थे। अब उसके जिदा रहने का बस एक ही दिन बचा था कल वह इस दुनिया से विदा होनेवाला था। वह मौत के घाट उतारे जाने की राह देख रहा था। उसकी मौत इतनी आसान भी नही होनेवाली थी, अगर उसे कढ़ाव मे जिदा उबाल दिया जाता या उसकी हड्डियो पर से उसकी पापी खाल खीच ली गयी होती तब उसे समभना चाहिये था कि उसके साथ बड़ी दया की गयी। जादूगर बहुत उदास था और सिर लटकाये बैठा था। शायद जैसे-जैसे उसका अतिम समय निकट आता जा रहा था वैसे-वैसे उसे पछतावा हो रहा था, लेकिन उसके पाप ऐसे नही थे कि भगवान उन्हे माफ कर सकता। उसके ऊपर एक खिड़की थी जिसमे एक-दूसरे को काटती हुई लोहे की छड़े लगी थी। अपनी जजीरे झनझनाता हुआ वह उचककर खिड़की तक पहुच गया और देखने लगा कि बाहर उसकी बेटी तो उधर से नही गुज़र रही है। वह फाख्ता जैसी सीधी थी और अपने मन मे किसी की तरफ कोई द्वेष नही रखती थी, शायद उसे अपने बाप पर दया आ जाये लेकिन वहा कोई नही था। नीचे सड़क जा रही थी उस पर कोई राही नही चल रहा था। और उसके नीचे द्नेपर नदी हर चीज से बेखबर बह रही थी उसकी लहरे उमड रही थी और हहरा रही थी, और उसकी सपाट नीरस गरज सुनकर कैदी का दिल उदासी से भर उठा।

इतने मे सड़क पर एक आदमी दिखायी दिया – एक कज्ज़ाक! कैदी ने गहरी आह भरी। एक बार फिर वहा कोई नही रह गया। अब बहुत दूर कोई पहाडी से नीचे उतर रहा था एक हरा लिबास हवा से गुब्बारे की तरह फूला हुआ दिखायी दे रहा था एक सुनहरी टोपी हवा मे चमक रही थी वही थी! वह खिड़की से और सट आया। वह पास आती जा रही थी

"कतेरीना! बेटी! दया करो, बूढे पर रहम खाओ!"

वह हठधर्मी से चुप रही, उसने निश्चय कर लिया था कि उसके शब्दो को नहीं सुनेगी, और तहखाने की तरफ नजर तक घुमाये बिना वह सामने से गुज़र गयी और आखो से ओझल हो गयी। सारी दुनिया मे कोई भी प्राणी नही था। द्नेपर नदी अपने किनारो के बीच उदास

चिरतन ज्वाला मे झुलसती रहेगी, उन लपटो मे जिन्हे कोई कभी नही बुझायेगा: वे लगातार और तेज और गरम होती जायेंगी, कभी ओस की एक बूद भी उन पर नही गिरेगी, हवा का एक झोका भी नही आयेगा "

"मेरे पास उस सजा को कम करने की ताकत नही है," कतेरीना ने मुह फेरते हुए कहा।

"कतेरीना! मेरी एक बात और सुनती जाओ तुम अब भी मेरी आत्मा को बचा सकती हो। तुम नही जानती कि ईश्वर कितना दयालु और कितना नेक है। क्या तुम धर्मप्रचारक सेंट पॉल के बारे मे जानती हो, कैसे भयानक पापी थे वह, फिर भी उन्होने प्रायश्चित किया और सत बन गये।"

"लेकिन तुम्हारी आत्मा को बचाने के लिए मैं क्या कर सकती हू?" कतेरीना बोली, "मैं, एक अबला नारी, इसके बारे मे सोचने का साहस भी कैसे कर सकती हू?"

"अगर मैं किसी तरह बस इस तहखाने से बाहर निकल सकू तो मैं अपने सारे पुराने तौर-तरीके छोड दूगा। मैं प्रायश्चित करूगा मैं गुफा मे चला जाऊगा, बदन पर बालो की बुनी हुई मोटी कमीज पहनूगा, और दिन-रात ईश्वर की प्रार्थना करूगा। मास ही नही, मैं मछली भी खाना छोड दूगा! मैं चारपाई पर बिस्तर नही बिछाऊगा! और मैं हर वक्त बस प्रार्थना किया करूगा! और अगर ईश्वर ने दया करके मुझे मेरे पापो के सौवे भाग से भी मुक्त न किया तो मैं गर्दन तक अपने आपको जमीन मे गाड दूगा या पत्थर की दीवार मे अपने आपको चुनवा दूगा, मैं न कुछ खाऊगा न पिऊगा और इसी तरह मर जाऊगा, और इस दुनिया मे जो कुछ मेरे पास है वह सब मैं भिक्षुओ को दे दूगा कि वे चालीस दिन और चालीस रात मेरी आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना करे।"

कतेरीना विचारो मे डूब गयी।

"अगर मैं दरवाजा खोल भी दू तब भी मैं तुम्हारी जजीरे नही खोल सकती।"

"मुझे जजीरो का कोई डर नही है," वह बोला। "तुम कहती हो कि उन लोगो ने मेरे हाथ-पाव जजीरो से जकड रखे हैं?

उसे धोखा दिया है। ओह, उसके सामने झूठ बोलना मेरे लिए कितना कठिन, कितना भयानक होगा। कोई आ रहा है! वही है! मेरा [illegible] शौहर!" वह घोर निराशा से [illegible] पर गिर पडी।
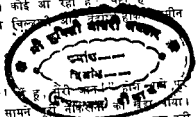
"मैं हू, मेरी प्यारी बेटी! मैं हू, मेरी [illegible]!" [illegible] कतेरीना ने सुना और अपने सामने बूढ़ी नौकरानी को [illegible] पाया। ऐसा लग रहा था कि वह बुढिया झुककर उसके कान में कुछ कह रही थी और अपना सूखा हुआ हाथ आगे बढाकर उसने कतेरीना पर ठडा पानी छिडका।

"मैं कहा हू?" कतेरीना ने उठते हुए चारो ओर देखकर पूछा। "मेरे सामने दनेपर की कल-कल ध्वनि सुनायी दे रही है, मेरे पीछे पहाड हैं तुम मुझे कहा ले आयी हो, माई?"

"यह पूछो कि कहा से लायी हू मैं तुम्हे मैं उस दम घोटनेवाले तहखाने से अपनी बाहो मे उठाकर लायी हू। मैंने वहा से निकलकर दरवाजा कसकर बद कर दिया था और उसमे ताला लगा दिया था ताकि दनीलो कोई मुसीबत न खडी करे।"

"लेकिन चाभी कहा है?" कतेरीना ने अपना कमरबद देखते हुए कहा। "मुझे कही दिखायी नहीं देती।"

"तुम्हारे शौहर खोल ले गये हैं, वह उस जादूगर को देखने गये है, मेरी भोली बच्ची।"

"जादूगर को देखने? अरे नही, तब तो मैं तबाह हो गयी!" कतेरीना ने चिल्लाकर कहा।

"भगवान दया करके हमे ऐसा होने से बचाये, मेरी बच्ची। तुम बस अपनी जबान बद रखना, मेरी सलोनी मालकिन, फिर किसी को कभी कुछ पता नही चलेगा!"

"वह भाग गया, वह मनहूस ईसा-विरोधी! सुनती हो, कतेरीना? वह भाग गया!" दनीलो ने अपनी बीवी के पास आकर कहा। उसकी आखो से आग बरस रही थी, उसकी तलवार उसकी कमर से टकराकर झनझना रही थी।

शब्दो की भरमार रहती थी। नौकर-चाकर भी हर बात मे अपने मालिको की ही नकल करते थे वे अपने फटे-पुराने जुपान की आस्तीने पीछे भुलाते हुए मुर्गों की तरह सीना ताने इतरा-इतराकर चलते थे। पोलिस्तानी ताश खेल रहे थे और हारनेवालो की नाक पर ताश के पत्तो से चोट कर रहे थे। वे अपने साथ दूसरे लोगो की बीविया लाये थे। कितना शोर मचाते थे वे और कितना हुल्लड करते थे! फिर उन्होने वहशियो जैसी हरकते करना शुरू किया उन्होने किसी अभागे यहूदी की दाढी पकड ली और उसके विधर्मी माथे पर सलीब का निशान बना दिया। वे औरतो पर खोखली कारतूसे चलाते थे और उस अधर्मी पादरी के साथ त्रेकोवियक नृत्य नाचते थे। पवित्र रूस मे ऐसे पापी कुकर्म तो तातारो के ज़माने में भी नही देखे गये थे। ऐसा लगता था कि ईश्वर ने रूस को उसके पापो की वजह से लज्जित करने के लिए यह सब कुछ उस पर थोपा था! भाति-भाति की आवाज़ो के इस शोर-गुल के बीच द्नेपर के पार दनीलो की जागीर और उसकी गोरी-चिट्टी ख़ूबसूरत बीवी की चर्चा भी सुनायी दे रही थी साफ लग रहा था कि ये लफगे अपने दिमाग मे बुरे कामो का विचार लेकर वहा जमा हुए थे।

६

दनीलो अपने कमरे मे हाथो पर ठोडी टिकाये मेज पर विचारमग्न बैठा था। कतेरीना चूल्हे के चबूतरे पर बैठी गाना गा रही थी।

"न जाने क्यो मेरा मन उदास है, मेरी प्यारी बीवी!" दनीलो ने कहा। "मेरा सिर भारी है, और मेरा दिल दुख रहा है। मैं अपने ऊपर एक बोझ महसूस कर रहा हू! मौत पास ही कहीं मेरी घात मे होगी।"

"मेरे अनमोल शौहर! अपना सिर मेरे सीने पर टिका लो! तुम ऐसे मनहूस विचार अपने मन मे क्यो पालते हो?" कतेरीना ने मन ही मन सोचा लेकिन इस बात को ज़ोर मे कहते वह डरती थी। अपने अपराध की इस हालत मे अपने पति का प्यार-दुलार प्राप्त करना उसके लिए बहुत अप्रिय था।

बढिया घोडे हम अपने साथ हाककर लाये थे! अफसोस, अब वैसी लडाई मुझे कभी देखने को नही मिलेगी! ऐसा लगता है कि मैं बूढा नही हू और मेरे जिस्म मे अभी ताकत है, लेकिन मेरी कज्जाक तलवार मेरे हाथ से छूट जाती है, मैं खाली बैठा हू, और मेरी समझ मे नही आता कि मैं जिदा किसलिए हू। उक्राइन मे कोई व्यवस्था नही है कज्जाक कर्नल और येसऊल आपस मे कुत्तो की तरह लडते हैं। उन्हे अपने वश मे करनेवाला कोई नेता नही है। हमारे लगभग सभी सामतो ने पोलिस्तानियो के तौर-तरीके अपना लिये हैं, उनकी चालाकी सीख ली है और यूनिया को मानकर अपनी आत्माए बेच दी हैं। यहूदी गरोह हमारे गरीब लोगो को दबाते हैं। आह, कैसा वक्त आन पडा है हम लोगो पर! और बीते हुए बरसो का जमाना! तुम कहा गायब हो गये, मेरी जवानी के दिनो? ऐ छोकरे, भागकर तहखाने से मेरे लिए शहद की शराब की एक सुराही ले आओ। मैं गुजरे हुए जमाने की याद मे पिऊगा, उन बरसो की याद मे जो बीत गये हैं!"

"हम अपने मेहमानो की खातिर किस चीज से करेंगे, मालिक? पोलिस्तानी चरागाह पार करके इधर ही आ रहे है!" स्तेत्स्को ने घर मे आते हुए एलान किया।

"मैं जानता हू वे यहा किसलिए आ रहे हैं," दनीलो ने उठकर खडे होते हुए कहा। "घोडो पर जीन कस दो, मेरे वफादार बहादुरो! उनकी लगामे चढा दो! अपनी तलवारे म्यान से निकाल लो! और छर्रों की थैली साथ ले चलना न भूलना। हमे अपने मेहमानो का उचित स्वागत करना होगा।"

लेकिन इससे पहले कि कज्जाक अपने घोडो पर सवार होते और अपनी बदूके भरते, पोलिस्तानी पहाडी पर जमा हो चुके थे, जमीन पर उनका जमाव इतना घना था जैसे पतझड की पत्तिया।

"वाह, अब पुराने हिसाब चुकाने का मौका आया है!" दनीलो ने मोटे-मोटे सामतो को सोने के साज से कसे हुए घोडो पर अपने सामने बडी शान-शौकत से उछलते हुए देखकर कहा। "ऐसा लगता है कि इस बार फिर हमे एक और शानदार लूट का मौका मिलेगा। खुश हो, कज्जाक आत्मा, आखिरी बार खुश हो लो! खुशी मनाओ, जवानो,

6*

बढिया घोडे हम अपने साथ हाककर लाये थे ! अफसोस, अब वैसी लडाई मुझे कभी देखने को नही मिलेगी। ऐसा लगता है कि मैं बूढा नही हू और मेरे जिस्म मे अभी ताकत है, लेकिन मेरी कज़ाक तलवार मेरे हाथ से छूट जाती है, मैं खाली बैठा हू, और मेरी समझ मे नही आता कि मैं जिंदा किसलिए हू। उक्राइन मे कोई व्यवस्था नही है कज़ाक कर्नल और येसऊल आपस मे कुत्तो की तरह लडते हैं। उन्हे अपने वश मे करनेवाला कोई नेता नही है। हमारे लगभग सभी सामतो ने पोलिस्तानियो के तौर-तरीके अपना लिये हैं, उनकी चालाकी सीख ली है और यूनिया को मानकर अपनी आत्माए बेच दी हैं। यहूदी गरोह हमारे गरीब लोगो को दबाते हैं। आह, कैसा वक्त आन पडा है हम लोगो पर ! और बीते हुए बरसो का ज़माना ! तुम कहा गायब हो गये, मेरी जवानी के दिनो? ऐ छोकरे, भागकर तहखाने से मेरे लिए शहद की शराब की एक सुराही ले आओ। मैं गुज़रे हुए ज़माने की याद मे, ज़िल्मा, उन बरसो की याद मे जो बीत गये हैं!"

"हम अपने मेहमानो की खातिर किस चीज़ से करेंगे, मालिक? पोलिस्तानी चरागाह पार करके इधर ही आ रहे है!" स्तेत्स्को ने घर मे आते हुए एलान किया।

"मैं जानता हू वे यहा किसलिए आ रहे हैं," दनीलो ने उठकर खडे होते हुए कहा। "घोडो पर ज़ीन कस दो, मेरे वफ़ादार बहादुरो! उनकी लगामे चढा दो! अपनी तलवारे म्यान से निकाल लो! और छर्रों की थैली साथ ले चलना न भूलना। हमे अपने मेहमानो का उचित स्वागत करना होगा।"

लेकिन इससे पहले कि कज़ाक अपने घोडो पर सवार होते और अपनी बदूके भरते, पोलिस्तानी पहाडी पर जमा हो चुके थे, ज़मीन पर उनका जमाव इतना घना था जैसे पतझड की पत्तिया।

"वाह, अब पुराने हिसाब चुकाने का मौका आया है!" दनीलो ने मोटे-मोटे सामतो को सोने के साज़ से कसे हुए घोडो पर अपने सामने बडी शान-शौकत मे उछलते हुए देखकर कहा। "ऐसा लगता है कि इस बार फिर हमे एक और शानदार लूट का मौका मिलेगा। खुश हो, कज़ाक आत्मा, आखिरी बार खुश हो लो! खुशी मनाओ,

आसुओ मे इतनी काफी गरमी नही है कि वे तुम्हे गरमा सकें! न मेरे रोने की आवाज़ इतनी तेज है कि तुम्हे जगा सके! अब तुम्हारे रिसालो की अगुवाई कौन करेगा? तुम्हारे काले घोडे की पीठ पर सवार होकर अपनी तलवार चमकाता हुआ और ज़ोरदार ललकारो से कज़ाको की अगुवाई करता हुआ सरपट कौन भागेगा? कज़ाको, ऐ कज़ाको! वह कहा है जिस पर हमे गर्व था, जो हमारा गौरव था? जिस पर हमे गर्व था, जो हमारा गौरव था, वह अपनी आखे बद किये गीली धरती पर यहा पडा है। मुझे भी दफन कर दो, मुझे भी इसके साथ ही दफन कर दो! मेरी आखो पर मिट्टी डाल दो। मेरी सफेद छातियो पर मेपिल की लकडी के तख्ते ठोक दो। मुझे अब अपनी इस सुदरता की कोई जरूरत नही रही!"

कतेरीना रो-रोकर अपने बाल नोचती रही; इतने मे बहुत दूर गर्द का एक बादल उठा वूढा येसऊल गोरोबेत्स अपना घोडा दौड़ाता हुआ उनकी मदद को आ रहा था।

१०

शात मौसम मे द्नेपर कितनी अद्‌भुत लगती है, जब उसकी भरपूर जलधारा उन्मुक्त और सुगम रूप से जगलो और पहाड़ो के बीच से धीरे-धीरे आगे बढती जाती है। न कोई कलकल ध्वनि सुनायी देती है, न कोई सरसराहट। देखकर आप यह नही बता सकते कि उसकी शानदार चौडी सतह हिल भी रही है या नही; वह बिल्कुल काच की ढली हुई मालूम होती है, हरी-भरी दुनिया के बीच से लहराकर और बल खाकर जाती हुई बेहद चौडी, बेहद लबी आईने जैसी चिकनी नीली सडक की तरह। इस समय सूरज को अपनी ऊचाइयो से नीचे झाककर देखने और उसके काच जैसे पानी की ठडक मे अपनी किरने डुबोने मे, किनारे के जगलो को उस पानी मे अपनी साफ परछाइयो को सराहने मे कितना सुख मिलता है। हरे बालोवाली वन-बालाओं की तरह ये परछाइया खेतो के फूलो को साथ लिये झुड बाधकर पानी तक आती हैं और अपना निखरा हुआ रूप अतृप्त नयनो से सराहती रहती हैं और हस-हसकर उसका अभिवादन करने को

अपने होंठ हिलाकर मंत्र पढ़ने लगा। कमरे में गुलाबी रोशनी फैल गयी, उसकी सूरत देखने में भयानक लग रही थी ऐसा लगता था कि उसके चेहरे पर, जिस पर ढेरो गहरी-गहरी काली झुर्रियां थी खून पुता हुआ है और उसकी आखे आग-सी दहक रही हैं। मनहूस पापी! उसकी दाढ़ी न जाने कब की सफ़ेद हो चुकी थी उसका चेहरा झुर्रियों से ऊबड़-खाबड़ हो गया था, वह सूद सूखकर काटा हो गया था, लेकिन वह अपनी विश्वासघाती विधर्मी हरकतों से बाज नही आता था। झोपड़ी के बीच छोटा सफ़ेद बादल प्रकट हुआ और जादूगर का चेहरा खुशी से चमक-सा उठा। लेकिन अचानक वह अपनी जगह गड़कर क्यों रह गया था, उसका मुह खुला हुआ क्यों था वह अपने हाथ पाव हिलाने तक की हिम्मत क्यों नही कर पा रहा था, और उसके बाल खड़े क्यों हो गये थे? उसके सामने बादल के बीच एक अजीब चेहरा उभरा। अनचाहे और बिना बुलाये वह उसके यहा आ गया था जैसे-जैसे वह घूरता रहा वैसे-वैसे उसका नाक-नक्शा ज्यादा साफ दिखायी देने लगा और उसने अपनी निश्चल आखे जादूगर पर टिका दी। उस आकृति की हर चीज से – उसकी भौहो से, उसकी आखो से उसके होंटो से – वह सर्वथा अपरिचित था। उस चेहरे में कोई भयानक बात नही थी लेकिन जादूगर के दिल में बेहद दहशत समा गयी। वह अजीब अनजानी सूरत हिले-डुले बिना बादल के बीच से उसे सिर से पाव तक ध्यान से देखती रही। फिर बादल गायब हो गया लेकिन उस चेहरे का नाक-नक्शा और भी स्पष्ट रूप धारण करता गया और उसकी बेधनी हुई आखे जादूगर पर जमी रही। जादूगर का रग चूने की तरह सफ़ेद पड गया। वह डरावनी आवाज से चिल्लाया और बर्तन उलट गया हर चीज धुधली हो गयी।

११

"अपना जी न कुढ़ाओ, मेरी प्यारी बहन," बूढे येसऊल गोरो-बेत्स ने कहा। "शायद ही कभी ऐसा होता है कि सपनो की बात सच्ची हो।"

"लेट जाओ, बहन!" नौजवान बहू ने कहा। "मैं जादू करनेवाली

और बच्चे ने उसकी पेटी से चादी से मढा हुआ पाइप और चकमक पत्थर के साथ थैली लटकी देखकर अपने हाथ उसकी ओर बढा दिये और हस पडा।

"बिल्कुल अपने बाप जैसा दिल पाया है," बूढे येसऊल ने पाइप निकालकर बच्चे को देते हुए कहा, "अभी पालने से पाव नहीं निकाले और पाइप पीने का शौक पैदा हो गया।"

कतेरीना ने चुपचाप आह भरी और पालना भुलाने लगी। उन्होने रात साथ ही बिताने का फैसला किया और थोडी ही देर मे सब सो गये। कतेरीना भी सो गयी।

घर के अदर और बाहर खामोशी छायी हुई थी, सिर्फ पहरे पर खडे हुए कज़ाक जाग रहे थे। अचानक कतेरीना चीखकर जाग पडी और उसके साथ ही बाकी सब लोग भी जाग गये। "उसे मार डाला गया है, उसकी हत्या कर दी गयी है!" वह चिल्लायी और पालने की ओर झपटी।

सब लोग पालने की ओर लपके और जब उन्होने मरे हुए बच्चे को उसमे लेटा हुआ देखा तो वे दहशत के मारे वही गडे रह गये। उनके मुह से एक आवाज़ तक नही निकली, इस नीच और जघन्य दुष्कर्म को देखकर वे स्तब्ध रह गये थे।

१२

उक्राइन की भूमि से बहुत दूर, पोलैड के भी पार, लेम्बर्ग के घने बसे हुए शहर से भी परे ऊचे-ऊचे पहाडो की शृखला फैली हुई है। पर्वत पत्थर की भारी-भरकम ज़जीर की कडियो की तरह ज़मीन के टुकडो को पृथ्वी पर दाहिने-बाये फेकते रहते हैं, उन्हें इन मज़बूत ज़जीरो मे कसकर जकडे रहते हैं और कोलाहलमय तूफानी समुद्र को दूर रखते है। पत्थर की ये ज़जीरे वल्लाचिया और ट्रासिलवेनिया तक पहुच जाती हैं, और वे घोडे की नाल की शक्ल मे एक विशाल दीवार बनकर गैलीशियनो और हगरीवासियो के बीच खडी रहती है। हमारे इलाके मे इस तरह के कोई पहाड नहीं हैं। दृष्टि अपनी परिधि मे उन्हे

टिकी हुई हैं – वह सो रहा है। सोते-सोते वह घोडे की बाग थामे हुए है; उसके पीछे उसी घोडे पर उसका नौकर लडका बैठा हुआ है, वह भी सो रहा है और सोते-सोते सूरमा को कसकर पकडे हुए है। वह कौन है और किसलिए, कहा अपने घोडे पर सवार जा रहा है? – यह किसी को नही मालूम। कई दिन से वह पहाडो के पार घोडा दौडाता रहा है। जब पौ फटती है और सूरज निकलता है, तब वह दिखायी नही देता, बस कभी-कभी पहाडो पर रहनेवाले एक लबी-सी छाया को तेज़ी से पहाडो के पार गुजरता हुआ देखते हैं, लेकिन आसमान बिल्कुल साफ होता है और उस पर बादल का कोई टुकडा भी दिखायी नही देता। रात होते ही जब अधेरा छा जाता है तब वह फिर दिखायी देता है, झील मे उसका अक्स पडता है, और दूर के पहाडो पर उसकी परछाईं घोडा दौडाती हुई, कापती हुई दिखायी देती है। आखिरकार जब वह त्रिवान पहुचता है तब तक वह कितने ही पहाड पार कर चुका होता है। कार्पेथियन पर्वतमाला मे कोई पहाड इससे ऊचा नही है, दूसरे पहाडो के मुकाबले वह राजा की तरह सबसे ऊचा दिखायी देता है। यहा पहुचकर घोडा और उसका सवार रुक जाते हैं और सूरमा पहले से भी गहरी नीद मे डूब जाता है, तूफान के काले-काले बादल नीचे उतर आते हैं और उसे छिपा लेते है।

१३

"शि चुप रहो, माई! इतने ज़ोर से न खटखटाओ, मेरा बच्चा सो रहा है। बडी देर से रो रहा था मेरा लाल, लेकिन अब सो गया है। मैं जगल मे जा रही हू। लेकिन तुम मुझे इस तरह क्यो देख रही हो? तुमसे मुझे डर लगता है तुम्हारी आखो से लोहे की चिमटिया निकल रही हैं अरे, कितनी लबी-लबी हैं वे! और कैसी दहक रही हैं वे! तुम ज़रूर चुडैल हो! अगर तुम चुडैल हो तो चली जाओ यहा से! तुम मेरे बेटे को चुरा ले जाओगी। येसऊल भी कितना नादान है वह समझता है कि मुझे कीएव मे रहना अच्छा लगता है; नही, मेरा शौहर और मेरा बच्चा यहा हैं, उनके घर का काम-काज कौन देखेगा? मैं इतने चुपके से चली आयी कि किसी कुत्ते

दफन किया था। सोचो तो, उन लोगो ने उसे जिंदा दफन कर दिया
कितनी हसी आयी मुझे इस बात पर! सुनो, यह सुनो!" यह कहकर
उसने एक गाना छेड दिया

देखो, धून में लथपथ गाडी जाती
धीरे-धीरे लहराती, बल खाती
वह अपने सिपाही को घर ले जा रही है
बहादुर जवान कज़ाक की अर्थी उठा रही है
जिसका सीना है गोलियो की बौछार से छलनी
काट डाली गयी है जिसकी बोटी-बोटी
थाम रखा है उसने एक तीर हाथ मे
जिसने टपक रही हैं लहू की बूदें
बह रही है नदी लाल खून की
है उस नदी के किनारे खड़ा
पेड मेपिल का एक बहुत ही बड़ा
उस पेड की डाल पर बैठा हुआ
काव-काव कर रहा है एक कौआ
और एक मा अपने कज़ाक के गम मे रो रही है
अपने चेहरे को आसुओ से धो रही है।
न रो, मा, कि तुम तो अकेली नहीं हो,
कि बेटा तुम्हारा दुल्हन ब्याह लाया है।
हा, बडी ही सलोनी-सी दुल्हन है उसकी नवेली
घाटी की गोदी मे उसने भी अपनी कुटिया बनायी
जिसमे न कोई दरवाज़ा था और न कोई खिडकी
यहीं पर खतम है बस यह मेरी कहानी।
नाच रहे है केकडे, नाच रही है मछलिया,
कि जो भी न मुझसे मुहब्बत करेगा
नरक मे वह जाकर हमेशा सडेगा!

कई गानो के टुकडो को आपस मे इस तरह मिलाकर वह गा रही थी। एक दिन तक, दो दिन तक वह अपने घर मे ही रही और गीएव वापस जाने की बात वह सुनती ही नही थी, और वह प्रार्थना भी नही करती थी, बस दूसरे लोगों से दूर भागकर सुबह-सबेरे से रात को बहुत देर तक अधेरे जगलो मे भटकती रहती थी। नुकीली

झुटपुटे मे उसके सफेद दातो की दो पक्तिया चमक उठीं। जादूगर के रोंगटे खडे हो गये। वह जोर से चिल्लाया और रोने लगा पागल आदमी की तरह, और अपने घोडे को एड लगाकर सीधे कीएव की ओर चल पडा। उसे ऐसे लगा कि चारो ओर से उसका पीछा किया जा रहा है घने अधेरे जगल ने उसका दम घोट देने की कोशिश की उसके पेड चारो ओर से जीवित प्राणियो की तरह अपनी काली-काली दाढिया हिलाते हुए और अपनी लबी-लबी डाले आगे फैलाये हुए उसकी ओर बढे चले आ रहे थे, ऐसा लग रहा था कि सितारे उसके आगे-आगे भाग रहे थे और इशारा कर-करके सभी को अपराधी का पता दे रहे थे. मुद सडक भी उसका पीछा करने के लिए दौडती हुई मालूम पड रही थी। हर उम्मीद खोकर जादूगर कीएव की ओर, शहर के पवित्र उपासना-गृहो की ओर सरपट भागा।

१५

सन्यासी अपनी गुफा के एकात मे बैठा देव-प्रतिमा के दीप के प्रकाश मे पवित्र ग्रथ पर दृष्टि जमाये उसे पढ रहा था। जिस दिन उसने अपने आपको सबसे अलग करके इस गुफा की शरण ली थी तब मे कई वर्ष बीत चुके थे। उसने अभी से अपने लिए चीड का एक ताबूत बनवा लिया था, जो उसके पलग का काम देता था। उस बूढे धर्मात्मा ने पुस्तक बद कर दी और प्रार्थना करने लगा अचानक एक विचित्र और भयानक चेहरे-मोहरे का आदमी गुफा मे घुस आया। बूढा सन्यासी पहली बार तो बहुत चकराया और उस आदमी को देखकर पीछे हट गया। अजनबी सिर से पाव तक पत्ते की तरह काप रहा था, उसकी उन्मत्त ऐचो-तानी आखो से भयानक चिगारिया बरस रही थी उसकी डरावनी सूरत देखकर आत्मा सिहर उठती थी।

"बाबा, प्रार्थना करो! प्रार्थना करो!" वह घोर निराशा से चिल्लाया। "एक पतित आत्मा के लिए प्रार्थना करो!" और यह कहकर वह जमीन पर ढेर हो गया।

सन्यासी ने अपने सीने पर उगलियों से सलीब का निशान बनाया और एक किताब उतारकर खोली—डर के मारे वह पीछे हट गया

बिल्कुल ही उल्टी दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाता रहा था। उसने अपना घोड़ा कीएव की ओर मोड़ा और दिन-भर सरपट घोड़ा दौड़ाने के बाद वह शहर पहुंच गया, लेकिन वह कीएव नहीं बल्कि गालिच था, कीएव से जिस शहर की दूरी शुम्स्क से भी ज्यादा थी, और वह हंगरी से बहुत दूर नहीं था। बौखलाकर उसने अपना घोड़ा एक बार फिर मोड़ा, लेकिन थोड़ी ही देर में उसने महसूस किया कि वह गलत दिशा में जा रहा था, लगातार अपनी मंजिल से ज्यादा दूर होता जा रहा था। दुनिया का कोई आदमी नहीं बता सकता था कि कौन-सी भावनाएं जादूगर की आत्मा को झंझोड़ रही थी, और अगर कोई उसकी आत्मा में झांकता और यह देख पाता कि उसमें क्या हो रहा था तो उसे रात को नींद न आती और वह उसके बाद कभी हंस न पाता। वह गुस्सा नहीं था, डर नहीं था, कटु खीझ भी नहीं थी। भाषा में उसे बयान करने के लिए कोई शब्द नहीं है। उसके अंदर एक आग धधक रही थी, वह सारी दुनिया को अपने घोड़े की टापों से रौंद डालना चाहता था, कीएव से लेकर गालिच तक के पूरे इलाके पर उसमें बसनेवाले सारे लोगों और हर चीज समेत कब्जा कर लेना चाहता था और उसे काले सागर में डुबो देना चाहता था। लेकिन वह द्वेष की भावना से ऐसा नहीं करना चाहता था, नहीं, इसका कारण वह खुद भी नहीं जानता था। जब कार्पेथियन पर्वतमाला और सबसे ऊपर क्रिवान की ऊंची चोटी सुरमई बादल का मुकुट पहने उभरकर उसकी आंखों के सामने आयी तो वह कांप उठा। उसका घोड़ा सरपट आगे भागता रहा, और थोड़ी ही देर में वह पहाड़ों के पार छलांगें लगा रहा था। बादल अचानक बिखर गये और उसने अपनी आंखों के सामने घुड़सवार को उसके पूरे वैभव में देखा उसने ज़ोर से बाग खींचकर घोड़ा रोकने की कोशिश की, घोड़ा बिफरकर हिनहिनाया, उसने अपनी गर्दन के बाल झटके, और हवा की तेजी से घुड़सवार की ओर चल पड़ा। तब जादूगर यह देखकर दहशत के मारे हक्का-बक्का रह गया कि निश्चल घुड़सवार हिला और उसने अपनी आंखें खोलीं, उसने एक तूफानी ठहाका लगाकर पास आते हुए जादूगर का स्वागत किया। उसके उन्मत्त कहकहे पहाड़ों के बीच बिजली की कड़क की तरह प्रतिध्वनित हो उठे और जादूगर के दिल में रह-रहकर

ने देखा नही था क्योकि सभी लोग उधर से गुज़रने से डरते थे मरकर जी उठनेवाले लोगो की उस मुर्दा आदमी को कुतर-कुतराकर खाने की आवाज़ थी। अकसर ऐसा भी होता था कि सारी दुनिया एक छोर से दूसरे छोर तक काप जाती थी विद्वान लोग हमे विश्वास दिलाते है कि ऐसा समुद्र के पास स्थित किसी ऐसे पहाड की वजह से होता है जिसमे से लपटे निकलकर ऊपर हवा मे उठती रहती हैं और दहकती हुई नदिया बहती रहती हैं। लेकिन हगरी और गैलीशिया के बूढे लोग ज्यादा जानकार हैं और वे बताते हैं यह वह मुर्दा आदमी है जो धरती के अदर बेहद बडा हो गया है, जो उठने के लिए जोर लगाता है और पृथ्वी को हिला देता है।

१६

एक दिन ग्लूखोव शहर मे लोग एक बूढे बदूरा* बजानेवाले के चारो ओर जमा हो गये और घटे-भर से ज्यादा तक उस अधे को अपना बाजा बजाते और गाते सुनते रहे। उससे पहले किसी गवैये ने ऐसी मधुर धुने नही बजायी थी, न इतनी खूबसूरती से गाया था। पहले तो उसने पुराने हेटमैनो के बारे मे, सगाईदाचनी और ख्मेलनीत्स्की** के ज़माने के बारे मे गीत गाये। वह ज़माना दूसरा ही था कज़ाक अपने गौरव के शिखर पर थे, अपने घोडो पर सवार होकर उन्होने दुश्मन को पावो तले रौद डाला था और किसी को उनका मज़ाक उडाने का साहस नही होता था। बूढे ने मस्ती-भरे गीत भी गाये और अपनी अधी नज़रे भीड पर इस तरह दौडायी जैसे वह देख सकता हो, इसके साथ ही उसकी उगलिया, जिन पर उसने हड्डी की मिज़राबे पहन रखी थी, तारो पर उडती हुई मक्खियो की तरह दौड रही थी

---

* एक उक्राइनी बाजा। – स०

** ख्मेलनीत्स्की, ज़िनोविय बोग्दान मिखाइलोविच (लगभग १५६५–१६५७) – उक्राइन के हेटमैन, प्रमुख राजनेता, जिन्होंने १६४८–१६५४ मे पोलैड के खिलाफ मुक्ति-युद्ध का नेतृत्व किया, उक्राइन और रूस को एक सूत्र मे बाधने (१६५४) के प्रणेता तथा निर्माता। – स०

पेत्रो से कहा 'चलो, पाशा को पकड़ लायें!' कज़ाक अपने घोड़े दौड़ाते हुए दो अलग-अलग दिशाओं में चल पड़े।

यह तो हमें मालूम नहीं कि पेत्रो उसे पकड़ पाता या नहीं लेकिन इवान पाशा के गले में फंदा डालकर उसे सीधा राजा के सामने ले आया। 'शाबाश बहादुर!' राजा स्तेफान ने कहा और उसे पूरी सेना की तनख्वाह के बराबर रकम ईनाम में देने का हुक्म जारी कर दिया और यह भी हुक्म दिया कि वह जहां भी चाहे उसे ज़मीन दे दी जाये और जितने मवेशी वह चाहे उसके हवाले कर दिये जायें। राजा से ईनाम मिलते ही इवान ने उसे पेत्रो के साथ आधा-आधा बांट लिया। पेत्रो ने राजा के ईनाम का आधा हिस्सा तो ले लिया लेकिन वह इस बात को बर्दाश्त न कर सका कि इवान को राजा के यहां से इतना सम्मान मिला था और उसकी आत्मा की गहराई में प्रतिशोध का कीड़ा रेंगने लगा।

"दोनों सूरमा कार्पेथियन के पार उस इलाके की ओर चल पड़े जो राजा ने इवान को दिया था। इवान ने अपने बेटे को अपने पीछे घोड़े पर बिठाकर उसे कसकर बांध लिया। झुटपुटा हो चला था — लेकिन वे अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहे। बच्चा सो गया और इवान को भी झपकी आ गयी। सोना नहीं, कज़ाक, पहाड़ी रास्तों में बड़ा धोखा होता है! लेकिन कज़ाक के पास ऐसा घोड़ा था जो कहीं भी अपना रास्ता ढूंढ़कर निकाल सकता था, और वह न कभी लड़खड़ाता और न गिरता! पहाड़ों के बीच एक गहरा खड्ड है, जिसकी तली किसी भी ज़िंदा आदमी ने नहीं देखी है, आकाश से पृथ्वी तक की जितनी दूरी है उतनी ही दूर उस खड्ड की तली है। खड्ड के किनारे-किनारे रास्ता इतना सकरा है कि हद से हद दो आदमी एक-दूसरे की बगल में अपने घोड़ों पर सवार होकर उस पर जा सकते हैं, तीन आदमी कभी नहीं। सोते हुए सवारवाला घोड़ा बड़ी सावधानी से आगे कदम बढ़ा रहा था। उसकी बगल में पेत्रो अपने घोड़े पर चल रहा था, उसका सारा शरीर कांप रहा था और वह खुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था। उसने चारों ओर नज़र डाली और अपने मुंहबोले भाई को दरार के नीचे ढकेल दिया। कज़ाक उसके नन्हे बेटे समेत और घोड़ा अथाह खड्ड में जा गिरा।

हो जैसा कि पृथ्वी पर कभी न देखा गया हो! और उसका हर कुकर्म इतना नीच हो कि उसके दादाओ-परदादाओ को अपनी कब्रो मे भी शाति न मिले और ऐसी यातनाए सहते हुए जिनसे मनुष्य अपरिचित है, वे मुर्दों के बीच से जी उठे! और इस जूडास की औलाद पेत्रो को कभी अपनी कब्र से उठने की ताकत भी नसीब न हो और इसलिए इसे और भी ज्यादा तकलीफ सहनी पडे, और यह पागलो की तरह मिट्टी खाये और जमीन के नीचे पडा-पडा असह्य पीडा से छटपटाता रहे!

"'और फिर जब इस आदमी के कुकर्मों की थाह लेने की घडी आये तो मुझे उठाकर मेरे घोडे पर सवार कर देना, प्रभु, और इस खड्ड मे से निकालकर सबसे ऊचे पहाड की चोटी पर पहुचा देना, और इसे मेरे पास आने देना, और तब मैं इसे उस पहाड पर से सबसे गहरे खड्ड मे फेक दूगा, और तब ऐसा हो कि इसके सारे पुरखे इसके दादा और परदादा, वे अपनी जिंदगी मे चाहे जहा रहते हो, पृथ्वी के चारो कोनो से आकर जमा हो और इसने उन्हे जो कष्ट पहुचाया है उसके बदले वे इसे चीर-फाडकर इसके टुकडे-टुकडे कर दे, और वे अनत काल तक इसकी हड्डियो को कुतरते रहे, ताकि मैं इसकी तकलीफो को देख-देखकर खुश होता रहू! और ऐसा हो कि जूडास पेत्रो धरती मे से उठ न पाये, और ऐसा हो कि मुर्दे की हड्डी कुतरने की लालसा मे वह खुद अपने को कुतरता रहे, और उसकी हड्डिया लगातार बडी होती रहे, ताकि उसकी तकलीफ लगातार बढती रहे। यह यातना इसके लिए सबसे भयानक यातना होगी क्योकि इससे बडी यातना कोई और नहीं हो सकती कि आदमी बदला लेने के लिए तरसता रहे और उसे उसका मौका न दिया जाये!'

"'ऐ इसान! तूने जो सजा सोची है वह बहुत भयानक है!' ईश्वर ने कहा। 'तू जैसा चाहता है वैसा ही होगा, लेकिन तुझे भी हमेशा अपने घोडे पर सवार रहना पडेगा, और जब तक तू अपने घोडे पर बैठा रहेगा तब तक तू स्वर्गलोक मे नही घुस पायेगा!' और जैसा कहा गया था वैसा ही हुआ और आज तक यह अनोखा सूरमा कार्पेथियन पहाडो मे अपने घोडे पर बैठा मुर्दों को अथाह गर्त्त मे अपने भाई की हड्डिया कुतरते देखता रहता है और धरती के नीचे उसे

बढता हुआ महसूस करता है, जो भयानक पीडा से तडपकर अपनी हड्डिया कुतरता रहता है और पृथ्वी के आर-पार भूकप की लहरे भेजता रहता है "

यह कहकर बूढे ने अपना गीत खत्म कर दिया ; उसने फिर अपने बदूरे के तारो पर उगलिया रखी और खोमा और एर्योमा के बारे मे, स्त्कल्यार और स्तोकोजा के बारे मे हसने-हसानेवाले गीत सुनाने लगा लेकिन उसके सभी सुननेवाले, बूढे-बच्चे सभी, बडी देर तक वहा हक्का-बक्का खडे रहे, और अपने सिर भुकाये बहुत पुराने जमाने के उस भयानक किस्से के बारे मे सोचते रहे।

कता और ऐसी सादगी टपकती है कि आप कम से कम थोडी देर के लिए कल्पना की सारी साहसपूर्ण उडानो को त्याग देने और अनजाने ही पूरी तरह उस सीधी-सादी ग्रामीण जीवन-पद्धति मे लौट जाने पर मजबूर हो जाते हैं।

आज तक मैं एक बीते हुए जमाने के दो ऐसे बूढो को भुला नही सका हू, जो दुर्भाग्यवश अब हमारे बीच नही हैं, लेकिन जब भी मैं सोचता हू कि अब जब मैं उनके पुराने घर के सामने से होकर गुजरूगा तो जहा पर कभी उनका छोटा-सा घर हुआ करता था वहा मुझे निर्जनता के एक दृश्य, टूटी-फूटी झोपडियो के एक समूह, घास-फूस से अटे हुए पोखर और झाड-झखाड से पटी हुई खाई के अलावा कुछ भी दिखायी नही देगा, तो मेरा दिल अब भी उदासी से भर जाता है और मैं अपने अदर एक शून्य अनुभव करता हू। कितने दुख की बात है, मैं अभी से उदासी महसूस करने लगा हू। लेकिन, आइये हम अपनी कहानी की ओर लौट चले।

अफ़ानासी इवानोविच तोव्स्तोगूब और उनकी बीवी पुल्खेरिया इवानोव्ना, या तोव्स्तोगूबिखा, जैसा कि वहा के लोग उन्हे कहते थे, वे दो बूढे लोग थे जिनकी मैं चर्चा कर रहा था। अगर मैं चित्रकार होता और फिलेमोन और बावकिदा* का चित्र बनाना चाहता, तो अपने चित्र के नमूनो के लिए मुझे इससे अच्छा जोडा नही मिल सकता था। अफ़ानासी इवानोविच साठ साल के थे और पुल्खेरिया इवानोव्ना पचपन की। अफ़ानासी इवानोविच लबे कद के आदमी थे, हमेशा ऊनी कपडे का भेड की खाल के अस्तरवाला कोट पहने रहते थे, और हमेशा होठो पर मुस्कराहट लिये कधे झुकाये एक कुर्सी पर बैठे हुए कोई किस्सा सुनते या सुनाते हुए पाये जाते थे। पुल्खेरिया इवानोव्ना कुछ गभीर स्वभाव की थी और वह शायद ही कभी मुस्कराती थी, लेकिन उनके चेहरे से और उनकी आखो से ऐसी नेकी, उनके पास जो कुछ भी सबसे अच्छा होता था वह आपको भेट कर देने की ऐसी

---

* यूनानी लोककथा के अनुसार एक बूढे और बुढिया का जोडा जो हमेशा एकसाथ रहते थे। मरने के बाद वे सहज ही दो वृक्षो मे परिवर्तित हो गये थे। – स०

मा-बाप नही चाहते थे कि वह उनसे शादी करे, लेकिन अब उन्हे इसकी भी बहुत ज्यादा याद नहीं थी, कम से कम वह इसकी चर्चा कभी नही करते थे।

सुदूर अतीत की इन सारी उल्लेखनीय घटनाओ को उनके शात और अलग-थलग जीवन ने न जाने कब का बदल दिया था, उन उनीदे लेकिन फिर भी सामजस्यपूर्ण सपनो ने जो आपके ऊपर से भी उस समय तैरते हुए गुजर जाते हैं जब आप उनके बगले की बाल्कनी पर बैठकर बाहर बाग को निहारते होते है, पत्तियो को थपथपाती, कलकल ध्वनि करती हुई जल-धाराए बनाती और आपके अग-अग मे उनीदेपन का सचार करती हुई वर्षा का भरपूर शोर सुनते होते है और इसी बीच एक इद्रधनुष चुपके से पेडो के पीछे से निकलकर टूटी हुई मेहराब की शक्ल मे आकाश के आर-पार अपने सातो रगो की कोमल आभा बिखेर देता है। जब आपकी गाडी हरी-हरी झाडियो के बीच से लुढकती हुई गुजरती है, जब स्तेपी की बटेरे अपना गीत गाती हैं और अनाज और जगली फूल गाडी के दरवाजे मे से अदर आते हैं और हौले से आपके हाथो और चेहरे को सहलाते हैं तब आप इन्ही सुखद सपनो मे खो जाते हैं।

वह हमेशा बडी सुखद मुस्कराहट के साथ बैठकर अपने मेहमानो की बाते सुनते थे, कभी-कभी खुद भी बाते करते थे, लेकिन ज्यादातर वक्त सवाल पूछना ही पसद करते थे। वह उन बूढे लोगो मे से नही थे जो बीते हुए अच्छे दिनो की निरतर प्रशसा करके और हर आधुनिक चीज को नापसद करके दूसरो को उबा देते हैं। इसके विपरीत, वह तरह-तरह के सवाल पूछते थे, आपके जीवन की परिस्थितियो के प्रति, आपकी सफलताओ और विफलताओ के बारे मे जानने की अत्यधिक जिज्ञासा और निजी दिलचस्पी का परिचय देते थे, जिनके बारे मे सुनने के लिए सहृदय बूढे लोग हमेशा बहुत उत्सुक रहते हैं, हालाकि उनकी जिज्ञासा कुछ हद तक उस छोटे बच्चे की जिज्ञासा जैसी होती थी जो आपसे बाते करते वक्त आपकी जेबी घडी की सील को घूरता रहता है। ऐसे मौको पर उनके चेहरे पर निश्चित रूप से अगाध मित्रता की चमक होती थी।

हमारे इस बूढे जोडे के मकान के कमरे छोटे और नीचे थे, जैसे

१०

नक्काशीदार और लकड़ी के स्वाभाविक रंग की थी, जिन पर न कोई पेंट था न वार्निश, उन पर कपड़ा भी नहीं मढ़ा हुआ था और एक तरह से वे उन कुर्सियों की याद दिलाती थी जिन पर आज तक गिरजाघरों के बड़े पादरी बैठते हैं। कोनों में तिकोनी मेजें रखी थीं, सोफ़े और आईने के सामने आयताकार मेजें थी, जिनके बहुत बढ़िया सुनहरे फ्रेम पर मक्खियों की वजह से धब्बे पड़ी हुई नक्शी पत्तियों की सजावट थी, सोफ़े के पास फर्श पर बेल-बूटेदार कालीन बिछा हुआ था जिसके फूल चिड़ियों जैसे लगते थे और चिड़िया फूलों जैसी—हमारे उन बूढ़ों के उस सीधे-सादे घर में लगभग कुल यही साज-सामान था।

नौकरानियों का कमरा धारीदार स्कर्टें पहने नौजवान छोकरियों से भरा रहता था, जिनमें से कुछ ऐसी खास जवान भी नहीं थीं, इन्हें पुल्खेरिया इवानोव्ना कभी-कभी सीने-पिरोने के काम में व्यस्त रखती थी या बेरियां छांटने के काम में लगा देती थीं, लेकिन जो अपना ज्यादातर वक्त खिसककर रसोई में जाकर सो जाने में बिताती थीं। उन्हें घर में रखने और उनके नैतिक आचरण को बनाये रखने को पुल्खेरिया इवानोव्ना अपना कर्त्तव्य समझती थी। लेकिन ऐसा कभी नहीं होता था कि हर कुछ महीने बाद उनमें से किसी न किसी की कमर मोटी न होने लगे, जिस पर उनकी मालकिन को बहुत आश्चर्य होता था और यह बात इसलिए और भी ताज्जुब की थी कि घर में कोई नौजवान आदमी भी नहीं था, ऊपर का काम करनेवाले उस लड़के को छोड़कर जो स्लेटी रंग का कमर तक का कोट पहने नंगे पांव इधर-उधर मंडलाता रहता था, और जब वह खा नहीं रहा होता था तो यकीनन सो रहा होता था। पुल्खेरिया इवानोव्ना आम तौर पर कुकर्मिनी को बहुत डांटती-फटकारती थी और उसे सख्त सज़ा देती थी ताकि दूसरों के लिए नसीहत रहे। खिड़कियों के कांच भुंड की भुंड मक्खियों की भनभनाहट से गूंजते रहते थे, जो एक भंवरे की भारी नीचे सुर की आवाज में डूब जाती थी और कभी-कभी बरों की बेधती हुई तेज़ आवाज भी आकर उसमें मिल जाती थी, लेकिन जैसे ही मोमबत्तियां जलाकर लायी जाती थीं ये सारे जीव सो जाते थे और पूरी छत पर एक काले बादल की तरह छा जाते थे।

अफ़ानासी इवानोविच अपने ऊपर घर के काम-काज का ज़रूरत

कि मालिक और मालकिन के लिए आधा ही काफी होगा ; और यह आधा भी फफूदी लगा और सीला हुआ होता था, क्योकि हाट मे उसका कोई खरीदार नही था। लेकिन कारिंदा और मुखिया चाहे जितना चुराते, नौकर-चाकर और पशु चाहे जितना खा जाते, जिनका सिलसिला पूरे घर की रखवाली करनेवाली नौकरानी से शुरू होकर सुअरो पर खत्म होता था, जो ढेरो आलूबुखारे और सेब हड़प कर जाते थे और अकसर अपनी थूथनी से पेड को धक्का मारकर बारिश की तरह ढेरो फल गिरा लेते थे, गौरैया और कौए चोच मार-मारकर चाहे जितने फलो को खराब कर देते, घर के नौकरो-चाकरो मे से हर एक आस-पास के गावो मे अपने रिश्तेदारो को भेट देने के लिए चाहे जितना माल उड़ा ले जाता, जिसमे खत्तियो से चुराया हुआ पुराना कपड़ा और सूत तक शामिल होता था, जिसकी बिक्री से वसूल होनेवाला सारा पैसा अंत मे एक ही जगह पहुच जाता था, अर्थात् स्थानीय शराबखाने मे, मिलने आनेवाले लोग, निरीह कोचवान और अर्दली चाहे जितनी चोरी करते, लेकिन वहा की धन्य धरती हर चीज इतनी विपुल मात्रा मे पैदा करती थी और अफानासी इवानोविच और पुल्खे-रिया इवानोव्ना की जरूरते इतनी थोड़ी थी कि उनकी घरदारी मे इस तमाम भयानक लूट की ओर कोई ध्यान भी नही जाता था।

बूढ़े और बुढ़िया दोनो को, अगले वक्तो के जमीदारो की परपरा के अनुसार खाने का बेहद शौक था। जैसे ही पौ फटने लगती थी (वे दोनो बहुत सवेरे उठते थे) और किवाड़ अपना मिला-जुला राग अलापना शुरू करते थे, वे कॉफी पीने के लिए आकर मेज पर बैठ जाते थे। पेट-भर कॉफी पीकर अफानासी इवानोविच बाहर ड्योढ़ी मे निकल आते और अपना रूमाल हवा मे फटकारकर कलहंसो को भगाते हुए कहते "हुश, चलो, भागो यहा से!" बाहर आगन मे उनका कारिंदा आम तौर पर उनके साथ लगा रहता था। उस वक्त वह उससे उसके काम के बारे मे बड़े विस्तार से पूछते थे, और टिप्प-णिया करते थे और आदेश देते थे, जिनमे वह खेती-बाड़ी के बारे मे इतनी असाधारण जानकारी का परिचय देते थे कि कोई भी सुनकर दग रह जाता, और ऐसे कुशाग्र बुद्धि मालिक के यहा से कोई चीज चुराने की बात कोई नौसिखिया सोच भी नही सकता था। लेकिन का-

छा जाती। जिस कमरे में अफ़ानासी इवानोविच और पुल्खेरिया इवानोव्ना सोते थे वह इतना गरम रहता था कि कम ही लोग उसे ज़्यादा देर तक बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन अफ़ानासी इवानोविच थोड़ी-सी और गरमी पाने के लिए चूल्हे के ऊपर सोते थे, हालांकि वहां की तेज़ गरमी की वजह से वह मजबूर होकर रात को कई बार उठकर कमरे में टहलने लगते थे। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि कमरे में टहलते वक्त अफ़ानासी इवानोविच कराहने की आवाज़ भी निकालते रहते थे।

इस पर पुल्खेरिया इवानोव्ना पूछती "आप कराह क्यों रहे हैं, अफ़ानासी इवानोविच?"

"भगवान जाने क्या बात है, पुल्खेरिया इवानोव्ना, मेरे पेट में कुछ दर्द हो रहा है," अफ़ानासी इवानोविच जवाब देते।

"आप कुछ खा लें तो शायद ठीक होगा, अफ़ानासी इवानोविच?"

"कह नहीं सकता, पुल्खेरिया इवानोव्ना, क्या ऐसा करना ठीक होगा? दरअसल, खाने को है क्या?"

"थोड़ा-सा दही, या नाशपाती के रस में उसी का स्टू?"

"अच्छी बात है थोड़ा-सा चखकर देखता हूं," अफ़ानासी इवानोविच कहते।

किसी ऊंघती हुई नौकरानी को नेमतख़ाने में से ढूंढकर कुछ ले आने को कहा जाता और अफ़ानासी इवानोविच पूरी प्लेट साफ़ कर जाते, इसके बाद आम तौर पर वह कहते· "अब तबियत कुछ बेहतर लग रही है।"

कभी-कभी, अगर आसमान खुला होता था और कमरे सुखद और गरम होते थे, तो अफ़ानासी इवानोविच को चुहलबाज़ी सूझती थी और वह पुल्खेरिया इवानोव्ना को छेड़ने के लिए बिल्कुल बेमतलब बातों की चर्चा करने लगते थे।

"अच्छा, यह बताइये, पुल्खेरिया इवानोव्ना," वह पूछते, "अगर हमारा घर अचानक जलकर राख हो जाये तो हम कहां जायेंगे?"

"अरे, भगवान न करे!" पुल्खेरिया इवानोव्ना अपने सीने पर सलीब का निशान बनाते हुए सहमकर कहती।

"अच्छा, मान लीजिये हमारा घर जलकर राख हो ही जाये, तो हम कहां जाकर रहेंगे?"

सहस्रपर्णी और कपूर के पत्ते की महक बसायी गयी है। अगर आपके पखौडे में या कमर मे दर्द हो तो उसके लिए यह अचूक इलाज है। यह हजारा गेदे के फूलो से तैयार की गयी वोद्का है; अगर आपके कानो मे गूज होती हो या चेहरे पर कच्ची दाद हो तो आपको इससे बहुत फायदा होगा। और यह आड़ू के बीजो से खीची गयी है, एक गिलास पीकर देखिये, सुशबू अच्छी है न? बिस्तर से उठते वक्त अगर आपका सिर अल्मारी या मेज़ से टकरा जाये और माथे पर गूमडा पड जाये तो उसका बेहतरीन इलाज यह है कि खाने से पहले इसका एक गिलास पी लीजिये—गूमडा बिल्कुल ग़ायब हो जायेगा, जैसे कभी रहा ही न हो।"

इसके बाद वह दूसरी सुराहियो मे भरी हुई शराबो का ऐसा ही बखान करती, जिनमे से लगभग सभी में किसी न किसी रोग को अच्छा करने के गुण होते थे। मेहमान जब ये सारी उपयोगी "औषधिया" चख चुकता था तब वह उसे मेज़ पर सजी हुई खाने की बहुत-सी तश्तरियो के पास ले जाती थी।

"बनजवायन के साथ ये कुकुरमुत्ते जरूर खाकर देखिये, ये कुकुरमुत्ते लौंग और गिरी के साथ तैयार किये गये हैं; मैने इन्हे नमक लगाकर रखना एक तुर्क औरत से उस ज़माने मे सीखा था जब हमारे यहा तुर्क कैदी हुआ करते थे। इतनी अच्छी औरत थी वह कि बस कुछ पूछिये नही, और आप बता नही सकते थे कि वह तुर्कों के धर्म को माननेवाली है। उसे देखकर आप यही सोचते कि वह हमी लोगो मे से एक थी, बस इतनी बात थी कि वह सुअर का मास नही खाती थी, कहती थी उसके यहा इसे खाना मना है। और ये कुकुरमुत्ते वाले अगूर की पत्तियो और जायफल के साथ तैयार किये गये हैं। और यह है घास-कुकुरमुत्ते, मैने पहली बार उन्हे सिरका लगाकर उबाला है, मालूम नही कैसे है, मैने इन्हे बनाने का तरीका पादरी इवान से सीखा था। पहले एक कूडी मे बलूत की पत्तिया फैलाकर उन पर काली मिर्च और शोरा छिडक दीजिये और फिर उस पर थोडे-से वे फूल फैला दीजिये जो गूढ-घास मे उगते है। उन फूलो को इस तरह फैलाइए कि उनके डठल ऊपर रहे। और ये है कचौरिया! पनीर की कचौरिया! थमथम के केक! और ये कचौरिया अफानासी इवानोविच

उन्होंने अपनी उदासी की भावना को अपने सीने मे ही दबाये रहने का फैसला किया और जबर्दस्ती मुस्कराकर बोले

"भगवान जाने आप क्या कह रही हैं, पुल्खेरिया इवानोव्ना! आप जो दवा पीती रहती हैं उसके बजाय आपने आड़ू की वोद्का पी ली होगी।"

"जी नही, अफानासी इवानोविच, मैने आड़ू की वोद्का बिल्कुल नही पी है," पुल्खेरिया इवानोव्ना ने कहा।

और अफानासी इवानोविच को अफसोस हुआ कि उन्होने इस तरह पुल्खेरिया इवानोव्ना का मजाक उडाया था, और उनकी ओर देखते हुए उनकी पलको पर एक आसू छलक आया।

"मैं आपसे बस इतना कहती हू कि मैं जो कुछ चाहती हू उसे पूरा कर दीजियेगा," पुल्खेरिया इवानोव्ना ने कहा। "मरने के बाद मुझे गिरजाघर की चारदीवारी के पास दफन करवा दीजियेगा। मुझे सादा लिबास पहनाइयेगा, वह वाला जिसमे भूरी पृष्ठभूमि पर छोटे-छोटे फूल बने हैं। मुझे वह लाल धारियोंवाला रेशमी लिबास न पहनाइयेगा मर जाने के बाद मुझे खूबसूरत लिबास की जरूरत नही होगी। उसे पहनकर मैं क्या करूगी? लेकिन वह आपके काम आयेगा आप उसका शाम को पहनने का गाऊन बनवा लीजियेगा ताकि जब मेहमान आये तो आप देखने मे अच्छे लगे।"

"भगवान ही जानता है कि आप क्या कह रही हैं, पुल्खेरिया इवानोव्ना!" अफानासी इवानोविच ने सविनय आपत्ति करते हुए कहा। "मौत तो जाने कब आयेगी, लेकिन आप अभी से ऐसी बाते कहकर मुझे डरा क्यो रही हैं?"

"नही, अफानासी इवानोविच, मुझे मालूम है कि मेरी मौत कब आयेगी। लेकिन मैं नही चाहती कि आप मेरे लिए दुखी हो मैं बूढ़ी हो चुकी हू, और मैने अपने हिस्से भर की काफी जिंदगी देखी है, और आप भी बूढ़े है, इसलिए जल्दी ही दूसरी दुनिया मे हम दोनो की मुलाकात होगी।"

लेकिन अब तक अफानासी इवानोविच बच्चों की तरह सुबक-सुबककर रो रहे थे।

"रोना पाप है, अफानासी इवानोविच! [illegible] न कीजिये
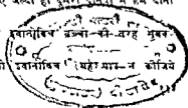
साथ अपने पूरे लिबास पहने हुए थे, सूरज चमक रहा था, गोद के बच्चे अपनी माँओं की गोदों में रो रहे थे, चिड़िया चहक रही थी, गिर्द कमीज़ पहने बच्चे सड़क पर भाग रहे थे और उछल-कूद मचा रहे थे। आख़िरकार ताबूत क़ब्र के ऊपर लाकर रखा गया और उनसे आकर आख़िरी बार अपनी मृत पत्नी को चूमने को कहा गया, वह आगे बढ़े उन्हें चूमा और उनकी आँखों में आँसू उमड़ आये, लेकिन वे अजीब तरह के भावनाहीन आँसू थे। ताबूत क़ब्र में उतारा गया, पादरी ने बेलचा उठाया और पहली मुट्ठी-भर मिट्टी क़ब्र में डाली, छोटे पादरी और दो गिरजाघर का घंटा बजानेवालों की गायन-मंडली ने सुने, निरभ्र आकाश के नीचे भारी, लहकती हुई आवाज़ में "अमर स्मृति" गाना शुरू किया, क़ब्र खोदनेवालों ने अपने बेलचे उठा लिये क़ब्र को भर दिया और ऊपर की मिट्टी बराबर कर दी, – इसके बाद अफ़ानासी इवानोविच आगे बढ़े। उन्हें रास्ता देने के लिए भीड़ फट गयी, सब लोग यह जानने को उत्सुक थे कि उनके इरादे क्या थे उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठायीं, चारों ओर परेशान नज़र डाली और बोले "लेकिन तुम लोगों ने तो उन्हें दफ़न भी कर दिया! किसलिए?!" इतना कहकर वह रुक गये और अपनी बात पूरी न कर सके।

लेकिन घर लौटकर जब उन्होंने देखा कि उनका कमरा ख़ाली है, और वह कुर्सी भी हटा दी गयी है जो पुल्ख़ेरिया इवानोव्ना को सबसे ज़्यादा पसंद थी, तो वह रोने लगे, बेकाबू होकर, फूट-फूटकर रोने लगे और उनकी धुंधलायी हुई आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

पाँच बरस और बीत गये। कौन-सा दुख ऐसा है जिसका घाव समय भर न दे? समय की गति के साथ असमान संघर्ष में कौन-सा आवेश ऐसा है जो जीवित बच सके? मुझे अपने एक परिचित की याद आती है, भरपूर कसबल के नौजवान आदमी थे, नस-नस में शराफ़त और दूसरे सराहनीय गुण भरे हुए थे। जब उनसे मेरी जान-पहचान हुई उस वक़्त वह बड़ी कोमलता से, बड़े भावावेश से, बड़ी दिलेरी से, बड़ी विनम्रता से किसी के प्यार में पागल थे, और जिस ज़माने में मैं उन्हें जानता था – लगभग मेरी आँखों के सामने – उनके प्रेम की पात्र, जो फ़रिश्ते जैसी कोमल और सुंदर थी, क्रूर काल

आदमी ने, जो अभी से बिल्कुल बेजान हो चुका था, जिसने अपनी तमाम जिंदगी में कोई भी गहरी भावना अनुभव नहीं की थी, और जिसके बारे में ऐसा लगता था कि एक ऊंची-सी कुर्सी पर बैठकर सूखी मछली और नाशपातियां खाना और सीधी-सादी कहानियां सुनाना ही उसकी तमाम जिंदगी थी, इतनी लंबी और इतनी हृदयविदारक व्यथा भेली थी। हम लोगों पर किस चीज का काबू ज्यादा रहता है, भावावेग का या आदत का? या सारी उग्र आकांक्षाएं, हमारी इच्छाओं और हमारे खौलते हुए भावावेगों का सारा बवंडर सिर्फ हमारी अत्यधिक मर्द-दमशील आयु के कारण ही पैदा होता है और बस इसीलिए इतना गहरा और विनाशकारी लगता है? बहरहाल, हमारे सारे भावावेग मुझे इस लंबी, दीर्घकालीन और लगभग तर्कहीन आदत की तुलना में बचकाना लगते थे। कई बार उन्होंने अपनी मृत पत्नी के नाम का उच्चारण करने की कोशिश की, लेकिन शब्द के बीच में ही उनका आम तौर पर शांत रहनेवाला चेहरा दयनीय मुद्रा में सिकुड़ गया और उनका बच्चों की तरह सिसक-सिसककर रोना देखकर मेरा कलेजा फटने लगा। ये उस तरह के आंसू नहीं थे जो बूढ़े लोग हमें अपनी विप-दाओं का हाल सुनाते समय धाराप्रवाह बहाते हैं, न ही ये उस तरह के आंसू थे जो वे लोग शराब के गिलास पर बहाते हैं, जी नहीं! ये वे आंसू थे जो अपने आप, किसी के आदेश के बिना बह रहे थे, जो एक ऐसे दिल में, जो न जाने कबका सर्द हो चुका था, हृदय-विदारक पीड़ा की वजह से जमा हो गये थे।

इसके बाद वह बहुत दिन तक जिंदा नहीं रहे। हाल ही में मुझे उनके मरने का पता चला। लेकिन सबसे अजीब बात यह थी कि जिन हालात में वह मरे वे बहुत कुछ वैसे ही थे जिनमें पुल्खेरिया इवानोव्ना की मृत्यु हुई थी। एक दिन अफानासी इवानोविच ने थोड़ी देर बाग में टहलने का फैसला किया। जब वह धीरे-धीरे हमेशा की तरह बड़े इतमीनान से एक रास्ते पर चल रहे थे, जब उनके दिमाग में कोई भी विचार नहीं था, तब एक अजीब बात हुई। अचानक उन्होंने सुना कि कोई उन्हें ऐसी आवाज में पुकार रहा है जिसके बारे में कोई शक नहीं हो सकता था "अफानासी इवानोविच!" उन्होंने मुड़कर देखा लेकिन उनके पीछे कोई नहीं था, उन्होंने चारों ओर नजर डाली,

उन्होंने बस इतना ही कहा था।

उनकी यह इच्छा पूरी कर दी गयी और उन्हें गिरजाघर की बगल में पुल्खेरिया इवानोव्ना की कब्र के पास दफन कर दिया गया। जनाजे में आनेवाले मेहमानों की सख्या पहले से कम थी, लेकिन आम लोग और भिखारी उतने ही थे। अब उनका घर बिल्कुल खाली था। चालाक कारिंदे ने मुखिया के साथ साठ-गाठ करके बाकी बची हुई सारी दुर्लभ पुरानी चीजे और वह सारा सामान जो घर की रखवाली करनेवालों के चुराने से बच गया था, अपने यहा पहुचा दिया। जल्दी ही भगवान जाने कहा से उनका कोई दूर का रिश्तेदार वहा आ धमका, वह उस जायदाद का उत्तराधिकारी था, कोई पेंशनयाफ्ता लेफ्टिनेंट था, किस रेजिमेंट का यह तो मुझे याद नही, और बला का सुधारक था। उसने फौरन इतजाम मे मची हुई हद दर्जे की तबाही और गडबडी को भाप लिया, और उसे फौरन दूर करने, सारे मामलात को ठीक करने और हर चीज मे व्यवस्था पैदा करने का फैसला कर लिया। उसने छ बहुत बढिया अंग्रेजी हसुए खरीदे, हर झोपडी पर कील से एक नबर ठुकवा दिया और आखिरकार ऐसी व्यवस्था कायम कर दी कि छ महीने बाद जायदाद ट्रस्टियो के हाथ मे पहुच गयी। समझदार ट्रस्टियों ने (जिनमे से एक चुना हुआ प्रतिनिधि रह चुका था और दूसरा उडे हुए रग की वर्दी पहननेवाला स्टाफ कैप्टेन था) थोडे ही अरसे में सारी मुर्गियां और सारे अडे बेच डाले। झोपडियो की हालत पहले से भी ज्यादा खस्ता हो गयी और आखिरकार वे बिल्कुल ही ढह गयीं; किसानो को शराब पीने की लत पड गयी और उनमे से ज्यादातर भाग गये। जायदाद का असली हकदार मालिक, जिसके बारे में बस हाथ इतना बता दिया जाये कि अपने ट्रस्टियो के साथ उसके सबध बहुत अच्छे थे और वह उनके साथ शराब पिया करता था, कभी-कभार ही गाव आता था और बहुत ही थोडे वक्त वहा रहता था। आज तक वह उक्राइन के सभी मेलो मे जाता है, आटे, सन, शहद वगैरह हर थोक पैदावार की कीमते पूछता है, लेकिन दरअसल कभी-कभी ही कोई छोटी-मोटी चीज खरीदता है, जैसे चकमक पत्थर, अपना साफ करने की सलाई और इसी तरह की छोटी-मोटी चीजे, कुल कीमत कभी एक रूबल से ज्यादा नही होती।

"क्या ! शैतान की औलाद! तू अपने बाप को मारेगा?" तारास बूल्बा ने चिल्लाकर कहा, और आश्चर्यचकित होकर कुछ कदम पीछे हट गया।

"आप हमारे बाप हैं तो क्या हुआ? मैं किसी को इस बात की इजाज़त नहीं दे सकता कि वह मेरा अपमान करे।"

"और तुम मुझसे किस तरह लड़ोगे? अपने घूसों से, क्यों?"

"किसी भी तरह।"

"अच्छा, तो फिर घूसों से ही सही!" तारास बूल्बा अपनी आस्तीनें चढ़ाता हुआ बोला। "मैं भी देखता हूं कि तुम घूसे बाज़ी में कितने मर्द हो।"

और बाप-बेटे इतने दिन तक अलग रहने के बाद मिलने पर खुश होकर एक-दूसरे को गले लगाने के बजाय एक-दूसरे की पसलियों पर पेट पर और सीने पर मुक्कों की बौछार करने लगे। कभी वे पीछे हटकर एक-दूसरे को घूरने लगते और फिर थोड़ी ही देर में नया हमला कर बैठते।

मगमग की टिकिया और तुम्हारी पेस्ट्रियां नहीं चाहिये। हमें चाहिये पूरी भेड़, एक बकरा, चालीस साल पुरानी शहद की शराब, हां, और ढेरों वोद्का, जिसमें तुम्हारा कोई ताम-झाम, तुम्हारे मुनक्के और कोई कूड़ा-करकट न हो, बल्कि खालिस झागदार वोद्का जो चमकती है और मस्त होकर सनसनाती है।"

बूल्बा अपने बेटों को घर के सबसे अच्छे कमरे में ले गया, जहां से लाल हार पहने हुए दो खूबसूरत नौकरानियां, जो घर ठीक-ठाक कर रही थीं, जल्दी से निकलकर भागीं। वे या तो अपने नौजवान मालिकों के आ जाने से डर गयी थीं, जो सबके साथ इतनी सख्ती से पेश आते थे, या वे सिर्फ किसी मर्द को देखते ही चीखकर भाग जाने और बाद में देर तक शरमाकर आस्तीन में अपना मुह छिपा लेने के औरतों के आम चलन को निभाना चाहती थीं। कमरा उस जमाने की पसंद के हिसाब से सजा हुआ था, उस जमाने की जो सिर्फ उन गीतों और लोककथाओं में जिंदा है जिन्हें अब उक्राइन में वे अंधे, दाढ़ीवाले बूढ़े गवैये भी नहीं गाते हैं जो पहले उन्हें लोगों की भीड़ के बीच घिरे रहकर बन्दूरे की हल्की झंकार की लय पर गाया करते थे, युद्ध और कठोरता के उस जमाने के फैशन के हिसाब से जब उक्राइन के सवाल पर अपनी पहली लड़ाइयां लड़ रहा था। दीवारों पर, फर्श पर और छत पर बड़े सुघड़ ढंग से रंगीन मिट्टी पुती हुई थी। दीवारों पर तलवारें, चाबुकें, चिड़िया और मछलियां पकड़ने के जाल, बन्दूकें, पच्चीकारी के बहुत नफीस कामवाला बारूद रखने का खोखला सींग, एक सुनहरी लगाम, और चांदी की कड़ियोंवाली बागें टंगी हुई थीं। कमरे की खिड़कियां छोटी-छोटी थीं जिनमें गोल कटे हुए धुंधले शीशे लगे थे, जैसे कि आजकल सिर्फ बहुत पुराने गिरजाघरों में पाये जाते हैं और जिनके पार सिर्फ खिड़की के कांचदार पट को ऊपर उठाकर ही देखा जा सकता था। खिड़कियों और दरवाजों के चारों ओर लाल रंग की गोट थी। कोनों में खुली अल्मारियों के पटरों पर हरे और नीले कांच की हांडियां, बोतलें और सुराहियां, चांदी के नक्काशीदार जाम और भांति-भांति की – वेनिस की, तुर्की की, चेर्केस की – कारीगरी के सुनहरे प्याले रखे थे, जो बूल्बा के कब्जे में अलग-अलग तरीकों से, तीन-चार हाथों

क्यो? यहा हम किस दुश्मन का इतजार कर सकते है? हमे इस झोपडी मे क्या सरोकार? इन सब चीजो से हमारा क्या मतलब? इन सब भाडे-बर्तनो से हमे क्या काम?" ये शब्द कहकर उसने हाडियो और बोतलो को चूर-चूर करके जमीन पर फेकना शुरू कर दिया।

बेचारी बुढिया, जो अपने शौहर की हरकतो की आदी हो चुकी थी, बेच पर बैठी उदास भाव से देखती रही। उसकी कुछ कहने की हिम्मत नही पड रही थी, लेकिन जब उसने अपने लिए इतना डरावना फैसला सुना तो वह अपने आसू न रोक सकी, वह एकटक अपने बच्चो को देखती रही जिनसे उसे इतनी जल्दी बिछुडना था, और उसकी आखो मे और उसके कसकर भिचे हुए होंटो मे जो मूक निराशा कापती हुई मालूम हो रही थी, उसकी तीव्रता को शब्दो मे बयान नही किया जा सकता।

बूल्बा बला का जिद्दी था। वह उन पात्रो मे से था जो सिर्फ भयानक पद्रहवी शताब्दी मे यूरप के आधे खानाबदोश कोने मे उभर सकते थे, जब पूरा आदिम दक्षिण रूस, जिसे उसके राजे-रजवाडे छोडकर चले गये थे, मगोलियाई लुटेरो के प्रचड हमलो की वजह से तबाह हो गया था और जलाकर राख कर दिया गया था, जब अपने घर-बार लुट जाने पर यहा के लोग ज्यादा दिलेर हो गये थे, जब वे अपने घरो के खडहरो पर ताकतवर दुश्मनो और लगातार खतरो के बीच फिर से बस गये थे और उन खतरो का बेझिझक सामना करने के आदी हो गये थे और इस बात को भूल गये थे कि दुनिया मे डर जैसी भी कोई चीज होती है, जब स्लाव लोगो की आत्माओ मे, जो कई शताब्दियो तक शातिमय रही थी, युद्ध की ज्वाला धधक उठी थी और उन्होने कज्जाकियत को जन्म दिया, जो रूसी चरित्र मे से निकली एक उन्मुक्त, उद्वेग-भरी शाखा थी—और जब नदियो के सारे तटो, पैदल या नाव पर पार उतरने के घाटो, और नदियोवाले इलाके के हर उपयुक्त स्थान पर कज्जाक थे, जिनकी सख्या भी किसी को नही मालूम थी, और उनके दिलेर साथियो ने सुल्तान के उनकी सख्या पूछने पर ठीक ही जवाब दिया था "कौन जाने! हम तो सारे स्तेपी मे फैले हुए है, हर टीले पर आपको एक कज्जाक मिल जायेगा।" यह सचमुच रूसी शक्ति की एक सराहनीय अभिव्यक्ति

नहीं था जिसे कज़ाक जानता न हो· वह शराब बना सकता था, गाडी बना सकता था, बारूद पीस सकता था, लोहार और ठठेरे का काम कर सकता था और इसके अलावा वह इस तरह शराब पी सकता था और खूब मस्त होकर इतना ऊधम मचा सकता था, जैसे सिर्फ़ रूसी ही कर सकते है – इन सब बातो मे वह माहिर था। उन कज़ाको के अलावा जिनके नाम दर्ज थे, जिन्हे लडाई छिड जाने पर सेना में भरती होना पडता था, फौरन ज़रूरत पडने पर घुडसवार स्वयंसेवको के लश्कर भी जुटाये जा सकते थे। इसके लिए येसऊलो को बस सभी बस्तियो और गावो के हर बाज़ार और चौक का चक्कर लगाना पडता था और गाडी पर खडे होकर पूरी आवाज़ से चिल्लाना पडता था "ऐ, बियर बनानेवालो! बद करो अपना यह बियर बनाना, चूल्हो के चबूतरो पर बैठकर समय गवाना और अपनी मोटी लाशे मक्खियो को खिलाना! आओ और आकर सूरमाओ जैसी शोहरत और इज़्ज़त कमाओ! और हल जोतनेवालो, कूटू बोनेवालो, भेडे चरानेवालो, औरतो से प्यार करनेवालो! हल के पीछे-पीछे भागना और अपने पीले-पीले जूतो को कीचड मे सानना छोडो, औरतो के पीछे भागना और अपनी सूरमाओ जैसी ताकत बर्बाद करना छोडो! कज़ाकोवाला गौरव पाने की घडी आ पहुची है!" और ये शब्द सूखी लकडी पर चिगारी का काम करते। हलवाहे अपना हल तोड देते, बियर बनानेवाले अपनी नादे फेक देते और अपने पीपे चकनाचूर कर देते, दस्तकार और दुकानदार अपने हुनर और अपनी दुकानो पर लानत धरते और अपने घरो के बर्तन-भाडे तोड डालते। और हर आदमी अपने घोडे पर सवार होकर निकल पडता। सारांश यह कि यहा पर रूसी चरित्र अपने महानतम और सबसे सशक्त रूप में अपना परिचय देता।

तारास पुराने ढग के कर्नलो में से एक था, जो बेचैन, लडाकू भावना लेकर पैदा हुआ था और जो अपने अक्खड और मुहफट तौर-तरीको के लिए मशहूर था। उस ज़माने में रूसी अभिजात वर्ग पर पोलिस्तानी प्रभावो ने अपनी छाप डालना शुरू कर दिया था। अभिजात वर्ग के बहुत-से लोग पोलिस्तानी तौर-तरीके अपनाने जा रहे थे, उनकी ज़िंदगी में ऐयाशी के सामान, ठाठदार नौकर-चाकरो, शिकारो, शिका-

करता था, बिल्कुल बदल दिया था। और, मचमुच, वह बहुत दुखी थी, जैसा कि उन युद्ध के दिनो मे सभी औरते दुखी थी। केवल एक सक्षिप्त क्षण के लिए उसने अपनी ज़िदगी मे प्यार पाया था, केवल आवेशो के पहले उबाल के समय, जवानी की पहली लहर मे; और फिर उसके कठोर-हृदय चितचोर ने उसे छोडकर अपनी तलवार, अपने साथियो और शराब की महफिलो का दामन पकड लिया था। साल-भर गायब रहने के बाद बस दो-तीन दिन के लिए उसे उसकी सूरत देखना नसीब होता था और फिर बरसो उसे उसकी कोई खबर न मिलती थी। और जब वह उसे देखती थी, जब वे साथ-साथ रहते थे तब उसकी ज़िदगी कैसी निखर उठती थी? वह अपमान सहती और मार तक खाती, कभी-कभार अगर उसे लाड-प्यार मिल जाता तो वह दान के टुकडो से अधिक कुछ नही होता था। बिना बीवियो के सूरमाओ की उस बिरादरी मे वह एक विचित्र जीव थी, जिस पर उच्छृखल जीवन बितानेवाले ज़ापोरोज्ये ने अपना क्रूर रग चढा दिया था। उसकी बेरग जवानी चुटकी बजाते बीत गयी थी और ताज़गी से भरपूर उसके सुदर गालो ने और उसके वक्षस्थल ने चुबनो को तरसते हुए अपना निखार खो दिया था और समय से पहले ही वे मुरझा गये थे और उन पर झुर्रियां पड गयी थी। उसका सारा प्यार, उसकी सारी भावनाए, हर वह चीज जो नारी मे कोमल और प्रबल होती है, केवल एक भावना मे बदलकर रह गयी थी—मा के प्यार मे। वह अपने हृदय मे अथाह प्रेम और पीडा लिये स्तेपी की चिडियो की तरह अपने बच्चो के इर्द-गिर्द मडलाती रहती थी। उसके बेटे, उसके प्यारे बेटे उससे छिने जा रहे थे, और, शायद, वह अब उन्हे कभी नही देख पायेगी! कौन कह सकता है—शायद कोई तातार उनकी पहली लडाई मे ही उनके सिर काट दे, और उसे पता भी न चले कि उनकी लावारिस लाशे कहा पडी है, शायद गिध उन्हे नोच-नोचकर खा जायेंगे, फिर भी उनके खून की एक बूद के लिए भी वह दुनिया म अपना सब कुछ निछावर कर देने को तैयार थी। बिलख-बिलखकर रोते हुए वह उनकी आखो मे घूरती रही, जो नीद के प्रबल प्रहार मे बद होन लगी थी, और वह सोचने लगी, "आह, काश ऐसा हो जाय कि जब बूल्बा की आख खुले तो वह अपना जाना एक-दो

और चुन्नटें थीं, सुनहरे कमरबन्द लगे हुए थे, इन कमरबन्दों में नक्की-नक्की चमडे की थैलिया लटक रही थीं जिनमे कुन्दन और पाइप पीने के काम का भांति-भांति का ताम-झाम लगा हुआ था। उनके भडकीले लाल रंग के कज़ाकोंवाले ढीले कुर्तों को मजबूत पेटियो से कमर पर कस दिया गया था, जिनमें नक्काशीदार तुर्की पिस्तौल खुंसे हुए थे, उनकी एडियो से टकराकर तलवारे झनझना रही थी। उनके चेहरे, जो अभी तक तेज धूप मे सवलाये नहीं थे, ज्यादा खूबसूरत और गोरे लग रहे थे, जवानी की सारी सेहतमदी और मजबूती से भरपूर उनकी खाल का गोरापन उनकी जवान काली मूछो के सामने और खिल उठा था, काली भेड की खाल की टोपिया पहने जिन पर जरी की कलगिया लगी थी, वे बहुत खूबसूरत लग रहे थे। बेचारी मा! जब उसने उन्हे देखा तो वह एक शब्द भी न कह सकी, और उसकी आखो मे आसू डबडबा आये।

"अच्छा, बेटो, सब तैयारी पूरी हो गयी है, अब हमे वक्त खराब नही करना चाहिये।" आखिरकार बूल्बा ने कहा। "लेकिन सबसे पहले, अपनी ईसाई परपरा को निभाते हुए सफर पर रवाना होने से पहले हम सब लोग बैठ जाये।"

हर आदमी बैठ गया, यहा तक कि नौकर-चाकर भी जो बडे अदब से दरवाजे पर खडे हुए थे।

"अब अपने बच्चो को आशीर्वाद दो, मा!" बूल्बा ने कहा। "भगवान से प्रार्थना करो कि वे बहादुरी से लडे, कि वे सूरमाओवाली अपनी आन-बान हमेशा बनाये रखे, और हमेशा ईसा के धर्म की रक्षा करे। और अगर ऐसा न हो – तो वे मिट जाये और इस धरती पर उनका नाम-निशान भी बाकी न रहे! अपनी मा के पास जाओ, बच्चो, मा की प्रार्थना जल-थल मे हर जगह मनुष्य की रक्षा करती है।"

मा ने, जो सभी माओ की तरह कमजोर थी, उन्हे सीने से लगा लिया, दो छोटी-छोटी देव-प्रतिमाए ली और रोते हुए उन्हे उनकी गर्दनो मे पहना दिया।

"देवी-माता तुम्हारी रक्षा करे अपनी मा को न भूलना, मेरे बेटो.. मुझे अपने बारे मे खबर भेजते रहना.." वह इससे ज्यादा कुछ न कह सकी।

की रक्षा करती है। विद्यार्थियों के मुखिये का कर्तव्य होता था कि वह स्कूल के अपने साथियों पर नज़र रखे, लेकिन उसके पतलून की जेबें खुद इतनी बड़ी थी कि वह बाज़ार की औरत की पूरी फैली हुई दुकान उसमें ठूस सकता था। धर्मपीठ के इन लड़कों की दुनिया ही अलग थी, उन्हे समाज के ऊंचे क्षेत्रों में नही घुसने दिया जाता था, जिनमें रूसी और पोलिस्तानी अभिजात वर्ग के लोग होते थे। खुद गवर्नर आदम कीसेल ने, हालांकि वह अकादमी के सरक्षकों में से थे, आदेश जारी कर दिया था कि उन्हें समाज से दूर रखा जाये और उन पर कड़ी नज़र रखी जाये। यह आखिरी हिदायत बिल्कुल फालतू थी क्योंकि छड़ी या कोड़ा इस्तेमाल करने में न रेक्टर कोई कसर उठा रखता था और न ही धर्मपीठ के पादरी प्रोफेसर; और अक्सर उनके आदेश पर मुखियों के सहायक अपने मुखियों को इतने ज़ोर से कोड़े लगाते थे कि ये विद्यार्थियों के मुखिये बाद में हफ़्तों तक अपने पतलून खुजाते रहते थे। कई लोगों के लिए यह बहुत मामूली बात होती थी और चुटकी-भर काली मिर्च मिली हुई अच्छी वोद्का से बस थोड़ी ही तेज़ मालूम होती थी, दूसरे लोग, आखिरकार, लगातार मरम्मत से तंग आ जाते थे और ज़ापोरोज्ये भाग जाते थे—अगर वह रास्ता खोज पाने में कामयाब हो जाते थे और रास्ते में पकड़े नही जाते थे। ओस्ताप बूल्बा हालांकि खूब जी लगाकर तर्कशास्त्र पढ़ता था, यहां तक कि धर्मविज्ञान भी, लेकिन बेरहम डंडे की मार से वह भी नही बच पाता था। स्वाभाविक रूप से इन सब बातों की वजह से उसके चरित्र में एक कठोरता आ गयी और उसमें वह दृढ़ता पैदा हो गयी जो हमेशा से कज़ाकों का विशिष्ट गुण रही है। ओस्ताप को आम तौर पर सबसे अच्छे साथियों में गिना जाता था। शायद ही कभी ऐसा होता था कि वह ऐसे दुस्साहसिक पराक्रमों में अपने साथियों की अगुवाई करे कि उन्हे लेकर किसी के निजी फलों के बग़ीचे या किसी के बाग पर धावा बोल दे, लेकिन कुछ कर दिखाने का साहस रखनेवाले धर्मपीठ के किसी भी विद्यार्थी की टोली में शामिल हो जाने में वह सबसे आगे रहता था, और कभी, किसी भी हालत में, वह अपने साथियों के साथ विश्वासघात नही करता था। छड़ी या कोड़े की कितनी भी मार उसे ऐसा करने के लिए मजबूर नही कर सकती

बेइज्जती की बात थी। अकादमी में अपने अंतिम वर्षों के दौरान उसने शायद ही कभी किसी दुस्साहसिक गरोह की अगुवाई की थी, बल्कि ज्यादातर यह होता था कि वह कीएव के उन दूर-दराज कोनों में अकेला घूमता रहता था, जहां चेरी के बागों में छिपे हुए नीची-नीची छतोंवाले मकान दूसरों को ललचाते हुए सड़क की ओर झांकते रहते थे। वह हिम्मत करके रईसों के इलाके में भी गया था, जो अब पुराना कीएव है, जहां उक्राइनी और पोलिस्तानी अमीर-उमरा रहा करते थे और जहां मकान ज्यादा आलीशान ढंग से बनाये जाते थे। एक बार जब वह मुंह बाये वहां खड़ा था, वह किसी पोलिस्तानी रईस की बग्घी के नीचे कुचलते-कुचलते बचा, और ऊपर की सीट पर बैठे हुए भयानक मूछोंवाले कोचवान ने निशाना ताककर उसके एक चाबुक जड़ दी थी। धर्मपीठ के नौजवान विद्यार्थी को ताव आ गया: कुछ सोचे-समझे बिना उसने जान हथेली पर रखकर गाड़ी का पिछला पहिया पकड़ लिया और बग्घी रोक दी। कोचवान हरजाना भरने के डर से घोड़ों पर चाबुक बरसाने लगा, वे सरपट भागे और अन्द्रेई, जिसने सौभाग्य से किसी तरह अपना हाथ खींच लिया था, मुंह के बल कीचड़ में गिर पड़ा। उसे कहीं ऊपर से किसी के हंसने की मधुरतम और बेहद सुरीली गूंज सुनायी दी। उसने नजर ऊपर उठायी और देखा कि खिड़की में एक इतनी खूबसूरत लड़की खड़ी है जैसी उसने इससे पहले कभी नहीं देखी थी – काली-काली आंखें, ऊषा की गुलाबी अरुणाई लिये बर्फ जैसा गोरा रंग। वह दिल खोलकर हंस रही थी, और उसकी यह हंसी उसके चकाचौंध कर देनेवाले सौंदर्य को चार चांद लगा रही थी। वह ठगा-सा खड़ा रहा। वह बेहद बौखलाकर उस लड़की को एकटक देखता रहा, और बदहवासी में अपने मुंह पर से कीचड़ पोंछता रहा, जिसकी वजह से उसका चेहरा और मैला होता गया। वह सुंदर लड़की कौन थी? उसने नौकरों से यह जानकारी हासिल करने की कोशिश की, जो अपनी भड़कीली वर्दियां पहने एक नौजवान बंडूरा बजानेवाले को घेरे फाटक पर खड़े थे। लेकिन उसका कीचड़ में सना चेहरा देखकर वे हंस पड़े और उन्होंने कोई जवाब देना गवारा नहीं किया। आखिरकार किसी तरह उसे पता चला कि वह कोव्नो के ... की बेटी थी जो वहां कुछ दिन के लिए आये हुए थे। अगली

और वहा से चारदीवारी के पार पहुचा दे, लेकिन इस बार धर्मठ
का फाटक अहाते का जंगला पार करने मे उतना भाग्यशाली नहीं रहा
चौकीदार की आख खुल गयी और उसने उसकी टागो पर जोर से व
किया, सारे नौकर भागकर बाहर निकल आये और बडी देर त
सडक पर उसकी अच्छी तरह मरम्मत करते रहे, जब तक कि व
वहा से तेजी से भागकर सतरे के बाहर नही निकल गया। इस
बाद उस घर के सामने से होकर गुजरना भी खतरनाक हो गया क्योंकि
गवर्नर के नौकर-चाकर बेशुमार थे। उसने उस लडकी को एक बा
फिर पोलिस्तानी रोमन कैथोलिक गिरजाघर मे देखा, उसकी नज
भी उस पर पडी और उसकी तरफ देखकर उसने ऐसी मुग्ध कर लेने
वाली मुस्कराहट बिखेरी जैसे वह कोई पुराना परिचित हो। उसने बस
एक बार और उसकी झलक देखी थी, लेकिन उसके कुछ ही समय
बाद कोव्नो के गवर्नर साहब वहा से सिधार गये, और उस काली
आखोवाली पोलिस्तानी सुदरी के बजाय उसकी खिडकियो मे से एक
मोटा बदसूरत चेहरा झाकने लगा। अन्द्रेई इस वक्त अपना सिर झुकाये
और अपने घोडे के अयालो पर नजरे जमाये इसी के बारे मे सोच
रहा था।

इसी बीच स्तेपी उन सबको न जाने कबका अपनी हरी गोद मे
समेट चुका था, और उनके चारो ओर उगी हुई लबी-लबी घास ने
उन्हे छिपा लिया था, यहा तक कि उसके ऊपर सिर्फ उनकी काली
काली कज़ाकोवाली टोपिया दिखायी दे रही थी।

"ऐ, सुनते हो! तुम इतने चुप-चुप क्यो हो, मेरे बच्चो?"
बूल्बा ने आखिरकार खुद अपने विचारो की तद्रा से जाकर कहा।
"तुम लोग तो बिल्कुल सन्यासियो की तरह गभीर हो गये हो! अपनी
सारी चिताओ को भाड मे झोक दो। अपने पाइप दातो मे दबाकर
सुलगा लो, और चलो, अपने घोडो को एड लगाकर किसी भी चिड़िया
से तेज उड चले!"

"अपना कोट उतार फेंको!" आखिरकार [illegible] ने चिल्लाकर कहा, "देखो तो कितना पसीना बह रहा है!"

"मैं नहीं उतार सकता!" [illegible] ने चिल्लाकर जवाब दिया।

"क्यों?"

"बस नहीं उतार सकता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है। मैं जो चीज उतारता हूं उसकी कीमत से वोद्का खरीदता हूं।"

और सचमुच उस नौजवान के पास न तो टोपी थी, न उसके काफ्तान पर पेटी बधी थी और न ही उसके पास कोई कढ़ा हुआ रूमाल था – सब कुछ अपने ठिकाने पहुंच चुका था। भीड़ बढ़ती जा रही थी और ज्यादा लोग नाचनेवालों में शामिल होते जा रहे थे। यह नामुमकिन था कि दुनिया के इस सबसे ज्यादा दीवाने और आज़ाद नाच को देखकर, जो अपने महान रचयिताओं के नाम पर कज़ाचोक कहलाता है, किसी भी तमाशाई के दिल में जोश और उमंग पैदा न हो।

"काश मैं इस वक्त घोड़े पर सवार न होता!" तारास चिल्लाया, "तो मैं खुद भी इस नाच में शामिल हो जाता!"

इसी बीच भीड़ में बूढ़े, संजीदा कज़ाक भी दिखायी देने लगे थे, जिनकी अपने कारनामों की वजह से तमाम सेच में इज़्ज़त की जाती थी – सफ़ेद चोटियोंवाले बूढ़े, जिन्हें कई-कई बार सरदार चुना जा चुका था। तारास को जल्द ही बहुत-से जाने-पहचाने चेहरे नज़र आने लगे। ओस्ताप और अन्द्रेई ने उसके सिवा और कुछ नहीं सुना, "अरे, पेचेरीत्सा, तुम हो! सलाम, कोज़ोलुप!" – "खुदा तुम्हें यहां कहां से ले आया, तारास?" – "दोलोतो, तुम यहां कैसे?" – "सलाम, किर्दागा! सलाम, गुस्ती! मुझे आशा नहीं थी कि तुमसे फिर कभी मुलाकात होगी, रेमेन!" और इन सूरमाओं ने, जो पूर्वी रूस के स्तेपी से आकर यहां जमा हुए थे, एक-दूसरे को चूमा, और उसके बाद तारास ने सवालों की झड़ी लगा दी, "और कस्यान का क्या बना? बोरोदावका कहां है? कोलोप्योर का क्या हुआ? पिदसिशोक का क्या हालचाल है?" लेकिन तारास ने इसके अलावा और किसी किस्म के जवाब नहीं सुने कि बोरोदावका को तोलोपान में फांसी पर चढ़ा दिया गया था, कोलोप्योर की किज़िकिरमेन के पास

था – उन लोगों की सोहबत में, जिनका न घरबार था न बीवी-बच्चे, जिनके पास खुले आसमान और अपनी रूहों की सदाबहार मस्ती और ऐशपसदी के सिवा कुछ भी न था। इसी ने उस प्रचड मस्ती को जन्म दिया था जो और किसी स्रोत से कभी पैदा हो नहीं हो सकती थी। काहिली में जमीन पर लेटे हुए कज्जाकों के बीच जिन कहानियों और इधर-उधर की बातों की चर्चा चलती रहती थी वे इतनी चटपटी रंगीन और हसानेवाली होती थी कि जापोरोजियों को इतना संजीदा बने रहने में, कि मूछ जरा भी न फड़के, बेहद जब्त से काम लेना पड़ता था – और यह एक ऐसी लाक्षणिक विशेषता है जिसकी वजह से दक्षिणी रूसी आज तक अपने दूसरे भाइयों से अलग पहचाने जाते है। यहा नशे में चूर, शोर-गुल और हुल्लड की मस्ती तो जरूर थी लेकिन यह कोई उदास शराबखाना नहीं था जहा आदमी घिनौनी और झूठी मस्ती में अपने आप को खो देता है। यह स्कूली साथियों का जत्था था जिसमे सब एक-दूसरे के करीब थे। फर्क सिर्फ इतना था कि अपने उस्ताद की इशारे की छड़ी के साथ नजरे दौड़ाने और उसके घिसे-पिटे सबकों को सुनने के बजाय ये लोग पाच हजार घोडों पर सवार होकर वहीं धावा बोलने चल देते थे, और गेंद खेलने के मैदानों के बजाय इसके पास अपनी सरहदे थी जिन पर कभी कोई पहरा नहीं रहता था, जहा चुस्त तातार सिर उठाते रहते थे और जिन पर हरे साफेवाले तुर्क अपनी मस्त नजरे गड़ाये रहते थे। फर्क असल में यह था कि दूसरों को मजबूर कर देनेवाली मर्जी के बजाय जिसने उन्हे धर्मपीठ में इकट्ठा किया था, यहा वे खुद अपनी मर्जी से अपने-अपने खानदानी मकानों से भागकर आये थे और अपने मा-बाप को छोड़ बैठे थे। यहा वे लोग थे जो अपनी गरदनों में फासी का फदा महसूस कर चुके थे और जिन्होने अब मौत के पीले चेहरे के बजाय जिदगी को – उसको भरपूर ऐशपरस्ती के साथ – देख लिया था। यहा वे लोग थे जिनकी जेबो में अमीरो के कायदे के मुताबिक एक फूटी कौडी भी नहीं टिकती थी, यहा वे लोग थे जो एक ड्यूकट को भी बहुत बडी दौलत समझते थे और जिनकी जेबे यहूदी सूदखोरो की मेहरबानी से इस बात के किसी खतरे के बिना कि उनमे से कुछ गिरेगा बडे इतमीनान से उलटी जा सकती थी। यहा वे सब विद्यार्थी थे जो उस्ताद

"जी हां।"

"जरा सलीब का निशान बनाकर तो दिखाओ!"

नया आनेवाला सलीब का निशान बनाता।

"अच्छा, ठीक है," कोशेवोई कहता था, "अब जाओ और जो कुरेन चाहो अपने लिए चुन लो।"

और इस तरह रस्म पूरी हो जाती। सारा सेच एक ही गिरजाघर मे प्रार्थना करता था और उसकी रक्षा के लिए अपने खून की आखिरी बूंद तक बहाने को तैयार था, हालांकि वह व्रत-उपवास और परहेज़गारी का नाम भी सुनना पसद नही करता था। सिर्फ बहुत ही लालची यहूदी, आर्मीनियाई और तातार ही सेच के आस-पास रहने और व्यापार करने की हिम्मत करते थे, क्योंकि ज़ापोरोज़ी कभी मोल-तोल नही करते थे और जितना पैसा जेब मे निकल आता था सबका सब फेंक देते थे। लेकिन इन लालची व्यापारियों का अत बहुत ही दुखदायी होता था। वे उन लोगो की तरह थे जो वेसूवियस पहाड की घाटी मे आबाद हो गये थे क्योंकि जैसे ही ज़ापोरोज़ी अपना पैसा उड़ा चुकते थे, वे मनचले दुकानो को तोड़-फोड डालते थे और जो दिल चाहता था मुफ्त झपट लेते थे। सेच साठ से ज्यादा कुरेनो से मिलकर बना था, जिनमे से हर एक अलग एक स्वाधीन प्रजातत्र जैसा था और उससे भी ज्यादा उन धर्मपीठो से मिलता-जुलता था, जहां छात्रों को रहकर पढ़ना पड़ता है। किसी भी आदमी को गृहस्थी बनाने या धन-दौलत जमा करने का ख्याल भी नही आता था। हर चीज़ कुरेन के आतामान के हाथ मे होती थी जो इसी वजह से बात्को यानी बाप कहलाता था। रुपये-पैसे, कपड़े-लत्ते, खाना-पीना जिसमे दलिया और लपसी तक शामिल थी, यानी हर चीज़ का इतज़ाम आतामान के हाथ मे था, यहां तक कि ईंधन का भी। लोग अपना रुपया-पैसा सब उसी के पास रखवा देते थे। कुरेन अक्सर आपस मे लड़ पड़ते थे। ऐसी सूरतो मे वे फ़ौरन बातो मे गुज़रकर मारपीट पर आ जाते थे। कुरेन पूरे चौक मे भर जाते थे और एक दूसरे की खूब मरम्मत करते थे यहां तक कि उनमे से एक जीत जाता था और फिर वे सब मिलकर शराब का दौर चलाते थे। सो ऐसा था सेच जिसमे नौजवानो के लिए दिलचस्पी के इतने सामान थे।

"क्यों नही कर सकते? यह कहने से तुम्हारा मतलब क्या है कि हम नही कर सकते? तुम जानते हो मैं दो बेटो का बाप हू और वे दोनो जवान है। दोनो मे से एक ने भी लडाई मे हिस्सा नही लिया है और तुम कहते हो कि हमे कोई हक नही है। क्या तुम्हारा मतलब है कि जापोरोजी लोग लड ही नही सकते?"

"हा, ऐसा ही करना पडेगा।"

"तो क्या कज्जाकी ताकत बेकार नष्ट होने के लिए है? क्या आदमी कोई भी बहादुरी का कारनामा किये बिना, अपने वतन और ईसाई दुनिया को जरा भी फायदा पहुचाये बिना कुत्ते की मौत मर जाये? आखिर हम किसलिए जीते है? मुझे बताओ न, आखिर हम किसलिए जीते है? तुम समझदार आदमी हो, तुम्हे कोशोवोई यू ही नही चुन लिया गया था, सो तुम मुझे बताओ तो सही हम किसलिए जिदा है?"

कोशोवोई ने इस सवाल का कोई जवाब नही दिया। वह एक मुदराय कज्जाक था। वह कुछ देर चुप रहा और फिर बोला

"बहरहाल लडाई तो होगी नही।"

"तुम कहते हो जग नही होगी?" तारास ने फिर पूछा।

"नही।"

"और उसके बारे मे सोचना बेकार है?"

"बिलकुल बेकार।"

"ठहरो जरा, शैतान की औलाद," बुल्बा ने दिल मे सोचा। "मै तुम्हे अच्छी तरह बताऊगा।" और उसने फौरन कोशोवोई से बदला लेने की ठान ली।

अपने ओहदो की निशानिया नीचे रख दे?" जज, अरजी लिखनेवाले और येमऊल ने पूछा और दवात, फ़ौजी मोहर और गदा को हाथ मे रखने के लिए तैयार हो गये।

"नही, तुम लोग अपनी-अपनी जगह सभाले रहो!" भीड चिल्लायी, हम सिर्फ कोशेवोई को अलग करना चाहते थे क्योकि वह तो सच्चा मर्द नही, एक औरत है और हमे कोशेवोई की जगह के लिए मर्द की जरूरत है।"

"अब किसे कोशेवोई चुना जायेगा?" सरदारो ने पूछा।

"कुकूबेनको को चुना जाये।" एक तरफ के लोग चिल्लाये।

"हम कुकूबेनको को नही चुनना चाहते!" दूसरी तरफवाले चीखे। "वह बहुत जवान है, अभी उसके मुह से मा के दूध की महक आती है!"

"शीलो को आतामान बना दो!" कुछ लोग चिल्लाये। "शीलो को कोशेवोई चुन लो।"

"क्या कहा!" भीड मे से चीखो और गालियो की आवाज आयी। "वह तो ऐसा कज़ाक है कि तातारो की तरह चोरी करता है, कुत्ते का बच्चा! जहन्नुम मे जाये शराबी शीलो! उसका सिर फोड दो!"

"बोरोदाती! चलो बोरोदाती को अपना कोशेवोई बनाते है!"

"हमे बोरोदाती नही चाहिये! लानत है उस हरामी पर।"

"किर्दागा के लिए आवाज उठाओ!" तारास बूल्बा ने कुछ लोगो से कान मे कहा!

"किर्दागा! किर्दागा!" भीड चिल्लायी। "बोरोदाती! बोरोदाती! किर्दागा! किर्दागा! शीलो! जहन्नुम मे जाये शीलो! किर्दागा!

सारे उम्मीदवार, जैसे ही उन्होने लोगो को अपना नाम चिल्लाते हुए सुना वैसे ही भीड के बाहर निकलकर अलग खडे हो गये ताकि कोई यह न सोचे कि उन्होने अपने चुनाव मे स्वय कोई जोर डाला हो।

"किर्दागा! किर्दागा!" यह पुकार और जोर से सुनायी पडने लगी। बोरोदाती!"

इस झगडे को तय करने के लिए लोग जबरदस्त हाथापाई पर आये जिसमे किर्दागा की जीत हुई।

इसके बाद भीड़ में से चार सबसे बुजुर्ग कज़ाक आगे बढ़े जिनकी मूछें और चोटियां सफ़ेद थीं (सेच में बहुत ज़्यादा बूढ़े लोग तो दिखायी नहीं पड़ते थे क्योंकि कोई ज़ापोरोज़्ज़ी कभी अपनी मौत मरता ही नहीं था), उनमें से हर एक ने मुट्ठी-भर मिट्टी उठा ली – जिसे हाल ही में बारिश ने कीचड़ बना दिया था – और उसे किर्द्यागा के सिर पर रख दिया। कीचड़ उसके सिर पर से बह-बहकर मूछों और गालों पर आ गया और उसके पूरे चेहरे पर फैल गया। लेकिन किर्द्यागा ने चू तक नहीं की और उसने इस सम्मान के लिए जो उसे दिया गया था कज़ाकों का शुक्रिया अदा किया।

इस तरह शोर-गुल के बीच चुनाव ख़त्म हुआ। मालूम नहीं कि इस चुनाव के नतीजे से कोई और आदमी उतना ख़ुश हुआ कि नहीं जितना कि बूल्बा। बूल्बा ने पुराने कोशेवोई से बदला ले लिया था और इसके अलावा किर्द्यागा उसका पुराना साथी भी था. ज़मीन पर और समुद्र में कितनी ही लड़ाइयों में वह बूल्बा के साथ रह चुका था और दोनों ने एक साथ सैनिक जीवन की कठिनाइयों और मुसीबतों को झेला था। भीड़ फ़ौरन चुनाव की ख़ुशी मनाने के लिए बिखर गयी और फिर तो ऐसा हंगामा मचा जैसा ओस्ताप और अन्द्रेई ने पहले कभी नहीं देखा था। शराबख़ानों को लूट लिया गया; शहद की शराब, वोद्का और बियर लोग बग़ैर पैसे दिये उठा ले गये; शराबख़ानों के मालिक ख़ुश थे कि जान बची लाखों पाये। रात-भर वे लोग चीख़ते-चिल्लाते और फ़ौजी गीत गाते रहे। उभरता हुआ चाँद गाने-बजानेवालों की टोलियों को, जो सड़कों पर बंदूरे, इकतारे और गोल बलालायका लिये घूम रहे थे, और उन गानेवालों को देखता रहा, जो सेच में इसलिए रखे जाते थे कि चर्च में भजन और ज़ापोरोज़्ज़ियों के कारनामों के गीत गायें। आख़िरकार नशे और थकन ने इन सिरफिरे लोगों को भी आ दबोचा। कहीं कोई कज़ाक ज़मीन पर गिरा पड़ रहा था। कहीं कोई कज़ाक किसी साथी से लिपट जाता यहां तक कि दोनों नशे में भावुक हो जाते और फूट-फूटकर रोने तक लगते और दोनों लुढ़क जाते। कहीं कोई पूरी की पूरी टोली ज़मीन पर ढेर थी, तो किसी और तरफ़ एक आदमी सोने की मुनासिब जगह खोजते-
… एक हौज़ में पांव पसार कर सो गया था। सबसे ज़्यादा सख़्तजान

और छेनिया ऊपर उठाये हुए इंतज़ार करते हुए उधर देखने लगे।

"बुरी खबर!" वह नाटा और मोटा कज़ाक नाव पर से चिल्लाया।

"क्या खबर है?"

"ज़ापोरोज़ी भाइयो, क्या आप मुझे बोलने की इजाज़त देते हैं?"

"बोलो, बोलो!"

"या शायद आप रादा को बुलाना चाहें?"

"बोलो, हम सब यहीं हैं!"

लोग एक-दूसरे के पास आ गये।

"क्या आप लोग नहीं जानते कि हेटमैनी में क्या हो रहा है?"

"वहां क्या हो रहा है?" एक कुरेन के आतामान ने पूछा।

"अरे, क्या? लगता है कि तातारों ने तुम लोगों के कानों में रुई ठूंस दी है, जभी तुम लोगों ने कुछ नहीं सुना!"

"कुछ कहो तो सही वहां क्या हो रहा है?"

"वहां ऐसी-ऐसी चीज़ें हो रही हैं जो इस दुनिया में पैदा होनेवाले किसी भी आदमी ने, जिसका बपतिस्मा हो चुका हो, कभी न देखी होंगी।"

"कुछ मुंह में तो फूट कि आखिर वहां क्या हो रहा है, कुत्ते के बच्चे!" भीड़ में से एक आदमी अधीर होकर चिल्लाया।

"हमारे ऊपर ऐसा वक्त आ पड़ा है कि अब हमारे पवित्र गिरजाघर भी हमारे नहीं रहे।"

"हमारे कैसे नहीं रहे?"

"अब उन्हें पट्टे पर यहूदियों को दे दिया गया है। यहूदी को पेशगी दिये बिना वहां प्रार्थना नहीं हो सकती।"

"यह आदमी बकवास कर रहा है!"

"और जब तक मनहूस यहूदी कुत्ता अपने अशुद्ध हाथों से हमारी ईस्टर की पवित्र रोटी पर अपना निशान न लगा दे तब तक उस पर पवित्र पानी छिड़का नहीं जा सकता।"

"यह झूठ बोल रहा है, भाइयो। यह हो ही नहीं सकता कि कोई विधर्मी यहूदी पवित्र ईस्टर की रोटी पर अपना निशान लगाये।"

"सुनो तो सही!. इतना ही नहीं। रोमन पादरी टमटमों में बैठकर सारे उक्राइन में घूम रहे हैं। खराबी टमटमों में नहीं है, खराबी

पूरी भीड में जान-सी पड गयी। पहले तो नदी के किनारे पर कुछ ऐसी खामोशी छा गयी जैसी कि जबर्दस्त तूफान से पहले छा जाती है और फिर एकदम आवाजे उभरी और सारा तट एकदम से बोलने लगा।

"क्या! यहूदी ईसाइयो के गिरजाघरो को पट्टे पर ले! रोमन पादरी कट्टरपंथी ईसाइयो को अपनी टमटमो मे जोते! क्या! कमबख्त विधर्मियो की वजह से रूस की जमीन पर ऐसी-ऐसी यातनाए सहने पर मजबूर करने की छूट दे दी जाये! उन्हे अपने हेटमैन और अपने कर्नलो के साथ ऐसा सुलूक करने दिया जाये! नही, ऐसा नही हो सकता, ऐसा नही होगा!"

भीड के हर हिस्से मे इसी तरह की चर्चाए हो रही थी। जापोरोजी अपना गुस्सा दिखाने लगे, वे अपनी ताकत के बारे मे सजग हो उठे। अब यह जोश बेवकूफी का जोश नही रह गया था, यह मजबूत और दृढ चरित्रवाले लोगो का जोश था जो आसानी से नही उबलता था, मगर जब उबलता था तो देर तक और हठधर्मी से खौलता रहता था।

"सारे यहूदियो को फासी चढा दो!" *भीड मे से एक आवाज* आयी। "उन्हे पादरियो की पोशाक से अपनी यहूदिनो के पेटीकोट बनाने का मजा चखा दो! उन्हे हमारी पवित्र ईस्टर की रोटी पर अपना निशान लगाने का मजा चखा दो! सब विधर्मियो को दनेपर मे डुबो दो!"

ये शब्द जो भीड मे से किसी एक की जबान से निकले थे बिजली की लहर की तरह सारे लोगो के दिमागो मे कौंध गये और भीड सारे यहूदियो को मौत के घाट उतारने पर उपनगर की ओर दौड पडी।

बेचारी इज़राईल की सतान अपनी रही-सही हिम्मत भी खो बैठी और वोद्का के खाली पीपो के अदर, तदूरो मे छिप गयी, और हद तो यह है कि अपनी औरतो के पेटीकोटो तक के अदर घुसकर बैठ गयी। लेकिन कज़ाको ने उन्हे हर जगह से ढूढ निकाला।

"मेहरबान, हज़रात!" बास की तरह लबा और दुबला-पतला एक यहूदी अपने साथियो की टुकडी के बीच से अपना दयनीय भयभीत चेहरा आगे करके चिल्लाया। "मेहरबान, हज़रात, मुझे एक शब्द

गया था, उछलकर अपने कोट मे से, जो किसी की पकड मे आ चुका था, बाहर निकल आया और सिर्फ तग वास्कट पहने खडा रह गया। उसने बूल्बा के पाव पकड लिये और गिडगिडाकर दर्द-भरी आवाज मे बोला

"हुजूर, मेहरबान सरकार! मैं आपके स्वर्गीय भाई दोरोश को जानता था! वह मारे सूरमाओ की दुनिया के सरताज थे। जब एक बार उन्हे तुर्कों की कैद से छुटकारा पाने के लिए पैसो की जरूरत पडी थी तो मैंने उन्हे आठ सौ सेक्विन* दिये थे।"

"तुम मेरे भाई को जानते थे?" तारास ने पूछा।

"भगवान की कसम मैं उनको जानता था! वह बडे दयालु आदमी थे।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"याकेल।"

"अच्छा," तारास ने कहा, फिर कुछ देर सोचने के बाद वह कज़ाकों की तरफ मुडा और बोला "इस यहूदी को फासी पर तो कभी भी चढा सकते हैं—जब भी हमारा जी चाहेगा, लेकिन इस वक्त तो इसे मुझे दे दो।" यह कहकर तारास उसे अपनी गाडियो की कतार की तरफ ले गया जहा उसके कज़ाक खडे थे। "अच्छा, गाडी के नीचे घुसकर लेट जाओ और बिल्कुल हिलना-डुलना नही। और भाइयो, तुम देखना यह कही जाने न पाये।"

यह कहकर वह चौक की तरफ चला गया जहा बहुत देर से भीड जमा हो रही थी। हर आदमी फौरन नावो को और नदी के किनारे को छोडकर चला आया था क्योंकि अब समुद्री मुहिम के बजाय ज़मीन के रास्ते मुहिम की तैयारी करनी थी और उसके लिए अब उन्हे जहाज़ों और डोंगियों की नही, बल्कि घोडों और गाडियो की ज़रूरत थी। अब तो बूढे और जवान सभी इस मुहिम मे हिस्सा लेना चाहते थे, बडे-बूढो, कुरेनो के आतामानो और कोशेवोई की राय पर और पूरी ज़ापोरोझी फौज के एक-एक आदमी के हामी भरने पर सबने फैसला किया कि सीधे पोलैंड पर चढाई कर दी जाये और कज़ाको के धर्म

---

* इटली का पुराना सोने का सिक्का।—स०

पर कब्ज़ा कीजिये क्योकि ये कम जगह घेरते हैं और आगे चलकर काम आ सकते हैं। यह मैं आप लोगो को पहले से बताये दे रहा हू कि जो आदमी रास्ते मे पीकर बदमस्त होगा उसकी खैरियत नही है। मैं कुत्ते की तरह उसे गर्दन से गाडी के साथ बधवा दूगा, चाहे वह कोई भी हो, फ़ौज का सबसे बहादुर कज़ाक ही क्यो न हो। मैं उसे वही के वही कुत्ते की तरह गोली से उडवा दूगा और उसकी लाश कफ़न-दफ़न के बिना वही पडी रहने दूगा ताकि गिद्ध उसकी बोटिया नोच-नोचकर खायें। क्योकि फ़ौजी कूच पर बदमस्त होनेवाले ईसाई को कफ़न-दफ़न का हक नही होता। और, ऐ नौजवानो, तुम्हे सब बातो मे अपने से बड़ो का हुक्म मानना चाहिये। अगर तुम्हे गोली लग जाये या तलवार का ज़ख्म लग जाये – चाहे सिर मे हो या जिस्म के किसी और हिस्से मे – तो उसकी ज्यादा परवाह मत करना। बस वोद्का के प्याले मे थोडा-सा बारूद मिलाकर एक घूट मे चढा लेना, सब ठीक हो जायेगा – न बुखार चढेगा, न ही कोई और गडबड होगी और अगर घाव ज्यादा गहरा न हो तो उस पर बस थोडी-सी मिट्टी लगा देना। पहले मिट्टी को हथेली मे लेकर उसमे थोडा-सा थूक मिला लेना और फिर घाव पर लगा लेना – वह बिलकुल सूख जायेगा। अच्छा, जवानो, अब काम शुरू हो जाना चाहिये, बेकार जल्दबाजी की कोई ज़रूरत नहीं है, हर काम ठीक से होना चाहिये।"

कोशेवोई ने ये बाते कही ज्यो ही उसका भाषण खत्म हुआ सारे के सारे कज़ाक अपने-अपने कामो मे जुट गये। पूरे सेच ने फ़ौरन पीने-पिलाने से हाथ खीच लिया, किसी जगह कोई शराबी नज़र नही आता था, मानो कज़ाको मे कभी कोई मस्त और शराबी रहा ही न हो . कुछ लोग पहियो की मरम्मत करने और गाडियो के धुरे बदलने मे लग गये, कुछ और लोग उनमे रसद के बोरे और हथियार लादने लगे, बाकी आदमी घोडो और बैलो को हकाकर लाने लगे। हर तरफ़ घोडो की टापो की आवाज़, बदूको को आजमाने के लिए उनको दागने का शोर, तलवारो की खडखडाहट, बैलों के डकारने की आवाज़, सडक पर निकलती गाडियो की चरख-चू, कज़ाको की गूजदार ऊची आवाजे और गाडीवानो की टख-टख की आवाजे सुनायी दे रही थीं। जल्द ही काफिला पूरे मैदान मे इधर से उधर तक फैल

५

थोडे ही दिन के अदर पूरा दक्षिण-पश्चिमी पोलैंड आतक का शिकार हो गया। हर तरफ यह अफ़वाह फैल चुकी थी "ज़ापोरोजी ! ज़ापोरोजी आ रहे हैं !" जो लोग भी भागकर अपनी जान बचा सकते थे, भाग लिये। सब लोग उठे और तितर-बितर हो गये जैसा कि इस अव्यवस्थित और निश्चित ज़माने का आम चलन था जब गढ़िया और क़िले नही बनाये जाते थे बल्कि आदमी अपने लिए किसी तरह जोड़-बटोरकर फूस की काम-चलाऊ झोपडी बना लेता था। वह सोचता था "अच्छे मकान पर पैसा और मेहनत लगाने से क्या फायदा जब तातारो के धावे में आखिरकार उसे ढह तो जाना ही है !" सब लोग घबराकर इधर-उधर भाग रहे थे, कोई अपने हल-बैल के बदले एक घोडा और एक बदूक लेकर अपनी रेजिमेट मे जा मिलता था तो कोई अपने मवेशियो को हकाकर और जो कुछ समेट सकता था समेटकर कही जाकर छुप जाता था। कुछ लोग ऐसे भी थे जो इन अजनबियो का मुकाबला करने के लिए हथियारबद होकर उठ खडे हुए, लेकिन ज्यादातर उनके सामने दुम दबाकर भाग गये। सब जानते थे कि इस खूखार और लडाकू गिरोह से लडना कोई हसी-खेल नही था, जो ज़ापोरोजी फौज के नाम से मशहूर था, उसकी बाहरी अव्यवस्था और स्वच्छदता के पीछे समझ-बूझ से रखा गया अनुशासन था जो लडाई के लिए अत्यत उपयुक्त था। कज़ाक घुडसवार इस बात का बहुत ख्याल रखते थे कि अपने घोडो पर ज्यादा बोझ न डाले और उनको ज्यादा थकने न दे। बाकी कज़ाक गभीर मुद्रा बनाये गाडियो के पीछे-पीछे चलते रहते थे। पूरी फौज सिर्फ रात को कूच करती थी और दिन के वक्त निर्जन मैदानो और सुनसान जगलो मे आराम करती थी, जिनकी इस ज़माने मे कोई कमी नही थी। जासूस और भेदिये इस बात का पता लगाने के लिए पहले ही से भेज दिये जाते थे कि दुश्मन कहा है और उसकी ताकत कितनी है। और अकसर ज़ापोरोजी अचानक ऐसी जगहो मे जा धमकते थे जहा उनके आने की सबसे कम उम्मीद होती थी, और अपने पीछे वे मौत के अलावा कुछ भी नही छोड जाते थे। वे गावो मे आग लगा देते थे, मवेशी

13*

और जिनके दिल मे अपने बडो के सामने अपने जौहर दिखाने की इच्छा आग की तरह धधक रही थी – सचमुच अपने वसबल की आज़माइश की, उनमे से हर एक किसी न किसी बडबोले और जियाले पोलिस्तानी के साथ, जो हवा मे लहराती हुई अपने लबादे की ढीली-ढाली आस्तीनो के साथ शानदार घोडे पर बैठा बडा रोबीला लगता था, आमने-सामने भिड गया। लडाई का हुनर सीखना नौजवान कज़ाको के लिए खेल जैसा था। घोडो का ढेरो साज-सामान और बहुत-सी कीमती तलवारे और बदूके वे पहले ही हासिल कर चुके थे। एक ही महीने मे इन चूज़ो के बाल और पर निकल आये थे, वे मर्द बन गये थे। उनका नाक-नक्शा जिस पर अब तक तरुणाई की कोमलता थी अब गभीर और सशक्त हो गया था। बूढा तारास अपने दोनो बेटो को सबसे आगे देखकर बेहद खुश था। ओस्ताप तो ऐसा लगता था कि पैदा ही हुआ था लडाई के रास्ते पर चलने और उसकी दुरूह कला के शिखरो पर चढने के लिए। कभी किसी भी हालत मे न उसके कदम डगमगाते थे, न वह घबराता था और न पीछे हटता था। ऐसे शात भाव से जो एक बाईस बरस के लडके के लिए स्वाभाविक नही था, वह किसी भी मुश्किल मे खतरो का अदाज़ा फौरन लगा लेता था और तुरत उसमे से निकलने का कोई रास्ता ढूढ निकालता था ताकि आखिर मे उसकी जीत ज़्यादा पक्की हो जाये। अब वह जो कुछ भी करता था उस पर अनुभव से पैदा होनेवाले आत्म-विश्वास की छाप थी और उसके हर काम मे उसमे आगे चलकर नेता बनने की क्षमता का सकेत मिलता था। उसके रोम-रोम से शक्ति फूटी पडती थी उसके वीरोचित गुण निखरकर प्रबल और दिलेरो जैसे गुण बन चुके थे।

"अरे, यह तो बडा अच्छा कर्नल बनेगा!" बूढा तारास कहा करता था, "हा! हा! यह तो अपने बाप से भी बाज़ी ले जायेगा!"

तलवारो और बदूको के सगीत ने अन्द्रेई को मत्रमुग्ध कर दिया था। वह नही जानता था कि पहले से अपनी और अपने दुश्मन की ताकत के बारे मे सोचना, उसका हिसाब लगाना और उसकी थाह लेना क्या होता है। उसे तो लडाई के प्रचड उल्लास और हर्षोन्माद ने चकाचौंध कर दिया था उसके लिए वे क्षण उन्माद के क्षण होते थे जब आदमी के दिल और दिमाग मे आग-सी लगी हो – जब हर

कज़ाकों को पसंद नहीं थी, खास तौर पर तारास बूल्बा के बेटों को- अन्द्रेई तो बिल्कुल उकता गया था।

"अरे, सिरफिरे!" तारास ने उससे कहा, "सब कुछ सहो, कज़ाक, तुमको तो आतामान बनना है। अच्छा सिपाही वह नहीं होता जो घमासान से घमासान लड़ाई में हिम्मत नहीं हारता है बल्कि अच्छा सिपाही वह होता है जो बेकार बैठे रहना भी झेल सकता है, जो सब कुछ सहता है और हर तरह की मुश्किलों के बावजूद आखिर में कामयाब होता है।"

मगर जोशीली जवानी और बुढ़ापा कभी सहमत नहीं होते। दोनों की प्रकृति अलग-अलग है और वे एक ही चीज़ को अलग-अलग नज़रों से देखते हैं।

"तुम्हारे साथ कोई औरत है! मैं उठकर तुम्हारी खाल खींच लूगा। औरतों के चक्कर मे तुम्हारा कोई भला नहीं हो सकता।" यह कहते हुए बूल्बा ने अपना सिर बाजू पर रख लिया और नज़रें गड़ाकर तातार औरत को घूरने लगा।

अन्द्रेई को काटो तो खून नहीं। उसकी हिम्मत नहीं पड रही थी कि वह अपने बाप के चेहरे की ओर देखे। और जब उसने आखे उठाकर अपने बाप की ओर देखा तो बूल्बा अपना सिर हथेली पर टिकाये सो रहा था।

अन्द्रेई ने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया। उसका डर उतनी ही जल्दी उसके दिल मे दूर हो गया जितनी जल्दी उसने उसमें घर किया था। जब वह तातार औरत को देखने के लिए उसकी तरफ मुडा तो वह सिर से पाव तक बुर्के मे लिपटी काले पत्थर की मूरत की तरह उसके सामने खडी थी और बहुत दूर जो आग जल रही थी उसकी रोशनी सिर्फ उसकी आखो पर पड रही थी जो मुर्दे की आखों की तरह पथराई हुई लग रही थी। अन्द्रेई ने उसकी आस्तीन खींची और वे दोनो कदम-कदम पर पीछे मुडकर देखते हुए आगे बढ़ते रहे यहा तक कि वे एक गहरे खड्ड की ढलान से नीचे उतर आये जिसकी तली मे एक छोटी-सी नदी, जिस पर कहीं-कहीं काई जम गयी थी और जगह-जगह घास उगी हुई थी, धीरे-धीरे साप की तरह लहराती हुई बह रही थी। खड्ड के नीचे पहुच जाने पर वे ज़ापोरोज़ियों के पडाव से दिखायी नहीं दे सकते थे। कम से कम जब अन्द्रेई ने पीछे मुड़कर देखा तो उसको नदी का किनारा एक ऊची दीवार की तरह पीछे खडा हुआ दिखायी दिया। उसकी चोटी पर स्तेपी की घास के कुछ डठल लहरा रहे थे और उनके ऊपर चमकता हुआ चाद बड़े सोने की तिरछी दराती की तरह दिखायी दे रहा था। स्तेपी से आती हुई हवा के हल्के-हल्के झोके चेतावनी दे रहे थे कि पौ फटने में अब ज्यादा देर नहीं रह गयी थी। लेकिन दूर से किसी मुर्गे की बाग नहीं सुनायी दे रही थी क्योकि बहुत दिनो से शहर मे और आसपास के इलाके मे भी कोई मुर्गा बाकी नही रहा था। उन्होंने एक छोटे-से ... के लट्ठे पर नदी को पार किया। सामने का किनारा और ज्यादा ऊचा लग रहा था और उसकी चढ़ाई भी कुछ ज्यादा थी।

आखिरकार उनके सामने एक छोटा-सा लोहे का दरवाज़ा दिखायी दिया। "खुदा का शुक्र है, हम पहुंच गये," तातार औरत ने कमज़ोर-सी आवाज़ में कहा और दस्तक देने के लिए हाथ ऊपर उठाया, लेकिन उसकी ताक़त जवाब दे गयी। उसके बजाय अन्द्रेई ने दरवाज़े पर जोर से दस्तक दी। एक खोखली-सी गूंज हुई जिससे यह पता चलता था कि दरवाज़े के दूसरी ओर कोई बिलकुल खुली जगह थी। फिर गूंज की धमक कुछ बदल गयी जैसे वह ऊंची-ऊंची मेहराबों से होकर वापस आ रही हो। एक या दो मिनट बाद कुंजियों की झंकार की आवाज़ आयी और ऐसा लगा जैसे कोई ज़ीने से नीचे उतर रहा हो। आखिरकार दरवाज़ा खुला और उनके सामने एक पादरी पतले-से ज़ीने पर खड़ा हुआ था। उसके हाथ में एक मोमबत्ती और एक कुंजियों का गुच्छा था। एक कैथोलिक पादरी को देखकर अन्द्रेई अनायास नफ़रत से पीछे हट गया क्योंकि कैथोलिक पादरी को देखकर कज़ाकों के अंदर ऐसी घृणा और तिरस्कार की भावना जाग उठती थी कि वे उसकी बिरादरी-वालों के साथ यहूदियों से भी ज्यादा कठोरता से काम लेते थे। पादरी ने भी जब एक ज़ापोरोज़ी कज़ाक को देखा तो चौंककर पीछे हटा लेकिन तातार औरत की एक दबी हुई फुसफुसाहट ने उसे आश्वस्त कर दिया। उसने उन्हें रोशनी दिखायी, दरवाज़े में ताला लगाया और उन्हें ज़ीने के रास्ते ऊपर ले गया यहां तक कि वे मठ के गिरजे की अंधेरी और ऊंची मेहराबों के नीचे पहुंच गये। एक वेदी के सामने, जिस पर लंबी-लंबी मोमबत्तियां और शमादान रखे हुए थे, एक पादरी घुटने टेके बैठा नीची आवाज़ में दुआएं पढ़ रहा था। उसके दोनों ओर दो कमउम्र गानेवाले भी घुटने टेके बैठे थे, वे बैंगनी रंग के चोगे और सफ़ेद जाली के ऊपरी झब्बे पहने हुए थे और हाथों में धूपदान लिए थे। पादरी किसी दैवी चमत्कार की प्रार्थना कर रहा था कि शहर बच जाये, उन सबकी हिम्मत बढ़े, उनमें धीरज पैदा हो और वह लालच देकर बहकानेवाला शैतान दौड़ला जाये, जिसने उनकी आत्माओं में कायरता भर दी थी और जिसने उन्हें इस दुनिया की मुसीबतों के खिलाफ़ शिकायत करने के लिए उकसाया था। कुछ औरतें भी, जो भूतों जैसी लग रही थीं, घुटने टेके बैठी थीं और अपने सामने रखी लकड़ी की लम्बी बेंचों और कुर्सियों की पीठ का सहारा लिए हुए

नीचे तक लकडी के चौखटे और स्तभ दिखायी दे रहे थे। ऐसे मकान उस समय के शहरो मे बहुत पाये जाते थे और आज भी पोलैंड और लियुआनिया के कुछ हिस्सो मे देखे जा सकते हैं। सबकी छते हद से ज्यादा ऊची थी और उनमे बाहर की तरफ निकली हुई कई खिडकिया और हवा जाने के लिए झरोखे बने थे। एक ओर गिरजे मे लगभग मिली हुई एक ज्यादा ऊची इमारत थी जो और सब इमारतो से अलग ही लग रही थी—शायद यह किसी सरकारी सस्था की इमारत थी। दोमजिला इमारत थी और उसके ऊपर दो मेहराबो पर एक मीनार उठा हुआ था जहा एक चौकीदार खडा था, छत के पास एक बडी-सी घडी का सामना दिखायी पड रहा था। चौक मुर्दा लग रहा था लेकिन अन्द्रेई को ऐसा लगा जैसे कोई हल्के-हल्के कराह रहा हो। उसने इधर-उधर नज़र दौडायी तो देखता क्या है कि सामनेवाले छोर पर दो-तीन आदमी ज़मीन पर निश्चल पडे हुए हैं। उसने आखे सिकोडकर गौर से देखने की कोशिश की कि वे सो रहे हैं या मरे हुए है और उसी वक्त अपने पाव के पास पडी हुई किसी चीज़ से उसे ठोकर लगी। वह एक औरत की लाश थी—शायद कोई यहूदिन थी। वह अभी जवान ही होगी हालाकि उसके मुरझाये हुए और विकृत चेहरे से यह पता चलाना नामुमकिन था। उसके सिर पर लाल रेशमी रूमाल बधा था, उसका कनटोप मोतियो या पोतो की दोहरी लडियो से सजा था, उसके अदर से दो-तीन लबी-लबी लहराती लटे उसकी सूखी गर्दन पर, जिसकी नसे तनी हुई थी, पडी थी। उसके पास एक बच्चा पडा था जो अपने हाथ से इस औरत की सूखी छाती पर रह-रहकर झपट रहा था और उसमे दूध न पाकर लाचारी के गुस्से मे उसे अपनी उग-लियो से मरोड रहा था। बच्चा अब न रो रहा था और न चिल्ला रहा था, और सिर्फ उसके पेट के हल्के-से उतार-चढाव से ही यह पता चल सकता था कि उसने अभी दम नही तोडा है। वे एक सडक पर मुडे और अचानक एक पागल ने उनका रास्ता रोक लिया। अन्द्रेई के अनमोल बोझ को देखकर वह चीते की तरह उस पर झपटा और "रोटी! रोटी!" चिल्लाकर उसको नोचने-खसोटने लगा लेकिन उसकी ताकत उसके पागलपन के बराबर नही थी, अन्द्रेई ने उसे ढकेल दिया और वह ज़मीन पर जा गिरा। उस पर तरस खाकर अन्द्रेई ने एक रोटी उसकी

हो या ताल्लुकेदार अमीरो मे से हो। एक बुझी हुई मोमबत्ती की बू आ रही थी और दो और मोमबत्तिया कमरे के बीचोबीच रखे हुए दो बडे-बडे लगभग आदमी की ऊचाई के फर्शी झाडो मे अब तक जल रही थी हालाकि सुबह बहुत देर से सलाखोवाली चौडी खिडकी मे से अदर झाक रही थी। अन्द्रेई सीधा बलूत की लकडी के एक चौडे-से दरवाजे की ओर बढा जो परिवार के प्रतीक-चिन्हो और नक्काशी से सजा था लेकिन तातार औरत ने उसकी आस्तीन खीची और बगल की एक दीवार मे खुलनेवाले छोटे-से दरवाजे की ओर इशारा किया। उसमे से होकर पहले तो वे एक गलियारे मे से गुजरे और फिर एक कमरे मे दाखिल हुए जिसे अन्द्रेई ने गौर से देखना शुरू किया। झिलमिलियो की एक दरार से अदर घुस आनेवाली रोशनी की किरन एक बैगनी परदे, एक सुनहरी कार्निस और दीवार पर लगी तस्वीर को चमका रही थी। यहा तातार औरत ने अन्द्रेई को ठहरने का इशारा किया और एक दूसरे कमरे का दरवाजा खोला जिसमे से मोमबत्ती की रोशनी की एक किरन चमक उठी। अन्द्रेई ने किसी की कानाफूसी की आवाज सुनी और एक मुलायम आवाज उसके कानो मे आयी जिसमे वह अदर तक काप उठा। अधखुले दरवाजे मे से उसने एक शालीन नारी-आकृति की झलक देखी जिसकी ऊपर उठी हुई एक बाह पर लबे और घने बालो की चोटी पडी हुई थी। तातार औरत ने लौटकर उससे अदर जाने को कहा। उसे यह तक याद नही था कि वह किस तरह अदर गया और कैसे उसके अदर जाने के बाद दरवाजा बद हो गया। कमरे मे दो मोमबत्तिया जल रही थी। एक मूर्ति के सामने एक चिराग जल रहा था और उसके नीचे एक ऊची-सी मेज रखी थी जिसके साथ प्रार्थना के वक्त घुटने टेकने के लिए सीढिया बनी हुई थी। लेकिन अन्द्रेई की आखे किसी और ही चीज को ढूढ रही थी। वह दूसरी तरफ मुडा तो उसे एक औरत दिखायी दी जो ऐसा लगता था जैसे आवेगवश कुछ करते-करते सहसा जम सी गयी हो या पथरा गयी हो। ऐसा लगता था कि उसका पूरा जिस्म अन्द्रेई की ओर लपकते हुए बीच मे ही ठिठक गया हो। और अन्द्रेई भी उसके सामने ठगा-सा खडा था। उसने सोचा भी नही था कि वह उसे इस हालत मे पायेगा जैसी कि वह उस वक्त दिखायी दे रही थी वह अब वही नही थी, यह वह लडकी थी ही

गल्ला और तीन हजार भेड़े खरीदने के लिए काफी है। और तुम्हारी एक बात पर, तुम्हारी कानी भवो के एक हल्के-से इशारे पर मैं इन सब चीजो को ठुकरा सकता हू, फेक सकता हू, जला सकता हू, डुबो सकता हू! मैं जानता हू कि मेरी ये बाते बेवकूफी की बाते हैं और बेवक्त और बेमौका है. मैं जानता हू कि धर्मपीठ मे और जापोरोजियो के बीच रहने के बाद मैं इस काबिल नही हू कि बादशाहो और शहजादो और सबसे चुने हुए सूरमाओ की तरह बात करू। इतना मैं समझ सकता हू कि तुम हम सब से अलग एक ईश्वरीय जीव हो और रईसो की सारी बहू-बेटिया तुमसे हजार दर्जे नीची हैं। हम तुम्हारे गुलाम होने के काबिल भी नही हैं, फरिश्ते ही तुम्हारी खिदमत करने के लायक हो सकते है।"

वह सुकुमारी बढ़ती हुई हैरत के साथ कान लगाकर और एक-एक शब्द पर पूरा ध्यान देकर इन जोशीली बातो को सुनती रही, जो आईने की तरह एक युवा और सशक्त आत्मा को प्रतिबिंबित कर रही थीं। इन बातो के हर सीधे-सादे शब्द मे, जो उसके दिल की गहराइयो से उठती हुई आवाज मे बोला गया था, दृढ़ता की गूज थी। उसने अपना सुदर चेहरा अन्द्रेई की ओर उठाया, अपनी बिखरी हुई लटो को पीछे की ओर झटका और मुह खोले उसे देर तक देखती रही। तब वह कुछ कहने ही जा रही थी मगर अचानक उसने अपने आप को रोक लिया जब उसको यह याद आया कि नौजवान एक जापोरोजी है, कि उसका बाप, उसके भाई-बधु और उसका देश उसके पीछे हैं और वे बदला लेने मे कोई कसर नही छोडेगे, कि शहर की घेरेबदी करनेवाले जापोरोजी बहुत बेरहम हैं और जो लोग शहर मे घिरे हुए है दर्दनाक मौत उनका इतजार कर रही है और अचानक उसकी आखो मे आसू डबडबा आये। उसने रेशम का एक कढा हुआ रूमाल उठाकर अपने चेहरे से लगा लिया, और देखते-देखते वह एकदम भीग गया। वह बड़ी देर तक अपना खूबसूरत सिर पीछे किये और अपने बर्फ जैसे सफेद दातो को निचले होट पर जमाये बैठी रही, जैसे अचानक उसने किसी जहरीले साप का डसना महसूस किया हो। वह अपना रूमाल चेहरे पर रखे रही कि कही अन्द्रेई उसकी हृदयविदारक पीड़ा न देख ले।

"मुझसे कुछ तो बोलो," अन्द्रेई ने कहा और उसका नर्म हाथ

त्सार्स्कोये सेलो में कितायेवा का घर जहां पुश्किन ने १८३१ की गर्मियां बितायीं। छायाचित्र।

मैंने पूरी गर्मियां पावलोव्स्क और त्सार्स्कोये सेलो में बितायीं हम लोग करीब-करीब हर शाम को जमा होते थे जुकोव्स्की, पुश्किन और मैं। क्या तुम जानते कि इन लोगों की कलमों से कैसे कैसे चमत्कार रचे जाते हैं।

नि० वा० गोगोल का
अ० स० दानिलेव्स्की को पत्र
२ नवंबर १८३१।

मि० यू० लेर्मोन्तोव। चित्रकार प० ज़ाबोलोत्स्की। कैनवस। तैलचित्र। कवि की मौत (१८३७) नामक कविता के रचयिता से गोगोल ९ मई १८४० को मास्को में मिले।

नि० व० गोगोल का आखिरी चित्र। ए० द्मीत्रियेव-मामोनोव के १८५२ में
गये रेखा-चित्र का लिथोग्राफ।

मास्को में नोवादेवीची कब्रिस्तान में नि० व० गोगोल की कब्र।
नि० व० गोगोल की अर्धवक्ष मूर्ति। मूर्तिकार न० तोम्स्की।
मेरे विचार, मेरा नाम, मेरी रचनाएं सब रूस की सम्पत्ति हैं।

नि० व० गोगोल

को न बदल सके तो हम दोनो साथ मरेगे, और मैं पहले मरूगा, मैं तुमसे पहले मरूगा, तुम्हारे सुदर कदमों मे जान दे दूगा और सिर्फ मौत ही हम दोनो को अलग कर सकेगी।"

"सूरमा, अपने आपको और मुझे धोखा मत दो," उसने धीरे से अपना खूबसूरत सिर हिलाते हुए कहा। "मैं जानती हू और मेरी बदनसीबी है कि कुछ ज्यादा ही अच्छी तरह जानती हू कि तुम्हारे लिए मुझसे प्यार करना ठीक नही है, मैं तुम्हारे कर्तव्य को जानती हू। तुम्हारे बाप और तुम्हारे साथी और तुम्हारा देश सब तुम्हे पुकार रहे हैं और हम तुम्हारे दुश्मन हैं।"

"मेरे बाप, साथी और मेरा देश मेरे लिए क्या हैं!" अन्द्रेई ने सिर को जल्दी से झटका दिया और नदी के किनारे खडे पोपलर के पेड की तरह तनकर कहा "अगर यही बात है तो मैं किसी भी चीज को जानना और किसी से भी रिश्ता रखना नही चाहता! किसी से नही!" उसने उसी आवाज मे और उसी अदाज से दोहराया, जो एक कडियल, निडर कजाक मे इस दृढ निश्चय का पता देते हैं कि वह कोई ऐसा अनसुना काम करने जा रहा है, जो कोई दूसरा नही कर सकता। "कौन कहता है कि उक्राइन मेरा देश है? उसको मेरा देश किसने बनाया? हमारा देश वही है जिसके लिए हमारी आत्मा लालायित रहे, जिससे हमे सबसे ज्यादा प्यार हो। तुम, हा, तुम मेरा देश हो! और इस देश को मैं अपने दिल से लगाये रखूगा, इसको जीवन भर दिल मे बसाये रखूगा, मैं हर कजाक को इसे वहा से नीचे फेकने की चुनौती देता हू! इस देश के बदले मे मैं अपना सब कुछ दे दूगा, छोड दूगा और बर्बाद कर दूगा!"

थोडी देर के लिए एक सुदर पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल बैठी वह अन्द्रेई की आखो को ताकती रही और फिर एकदम फूट-फूटकर रोने लगी, और फिर उस सराहनीय नारीसुलभ उद्विग्नता के साथ, जिसका परिचय केवल वह निष्कपट उदार स्त्री ही दे सकती है जो हृदय के श्रेष्ठतम उद्गारो के लिए ही पैदा हुई हो वह झपटकर अन्द्रेई के गले से लिपट गयी, उसे अपनी बर्फ जैसी सफेद बाहो मे जकड लिया और जोर-जोर से सिसकिया भरने लगी। उसी समय सडक मे दबी-दबी चीखे और बिगुल और नगाडो की आवाजे सुनायी दी।

कुरेन के आतामान के भाषण ने कज़ाको का जी खुश कर दिया। उन्होने अपने सिर ऊपर उठा लिये जो नीचे ही झुकते जा रहे थे, और उनमे से बहुतो ने प्रशसा से सिर हिलाया और कहा: "कुकूबेनको ने अच्छी बात कही है!" और तारास बूल्बा ने, जो कोशेवोई के पास ही खडा था, कहा

"अब क्या, कोशेवोई? कुकूबेनको ने, लगता है, सही बात कही है, क्यो? तुम इसके बारे मे क्या कहते हो?"

"मैं क्या कहता हू? मैं कहता हू कि वह खुशकिस्मत बाप है जिसका ऐसा बेटा हो! शिकायत के शब्द कहने के लिए ज्यादा अक्ल की जरूरत नही होती मगर ऐसे शब्द कहने के लिए बहुत समझदारी की जरूरत होती है जो किसी को दुख मे और दुखी न करे बल्कि उसे बढावा दे और उसकी हिम्मत बढायें, जैसे पानी पीकर तरोताज़ा हो जाने के बाद घोडे को एड लगाने से उसका हौसला बढता है। मैं तुम लोगो की हिम्मत बढाने के लिए कुछ शब्द कहने ही जा रहा था मगर कुकूबेनको को यह बात मुझसे जल्दी सूझ गयी।"

"कोशेवोई ने भी ठीक ही कहा!" जापोरोज़ियो की पातो में ये शब्द गूज गये। "ठीक कहा!" औरो ने हामी भरी। और सबसे बुजुर्ग लोगो ने भी सिर हिलाया और अपनी चादी जैसी सफेद मूछे फडकायी और धीरे से बोले "ठीक ही कहा!"

"अब सुनिये, भाइयो!" कोशेवोई ने आगे कहा, "किले को-जहन्नुम मे जाये वह कमबख्त – जर्मनो की तरह कमद डालकर या नीचे सुरग खोदकर सर करना कज़ाको की शान के खिलाफ है। लेकिन तमाम बातो से जहा तक पता चलता है, दुश्मन शहर मे ज्यादा रसद लेकर दाखिल नही हुआ है, उसके पास ज्यादा गाडिया नही थी शहर के लोग भूखे हैं, वे सब कुछ फौरन खा-पीकर खतम कर देंगे। और रहे उनके घोडे, तो मैं नही जानता कि वे लोग घास का क्या इन्तज़ाम करेंगे सिवाय इसके कि उनका कोई सत आसमान से उनके लिए घास टपका दे इसके बारे मे तो भगवान ही बेहतर जानता है और उनके पादरियो को सिर्फ चिकनी-चुपडी बाते करनी आती है किसी न किसी वजह से उन्हे शहर से बाहर तो निकलना ही होगा। तो आप लोग तीन टोलियो मे बट जाइये और तीनो फाटक

की मिन्नत खुशामद की कि मुझे छोड दें और कहा कि वह कर्ज जब चाहे अदा कर दे, मैं उस वक्त तक इतजार करूगा, मैंने यह भी वादा किया कि अगर वह दूसरे सामतो से कर्ज वापस दिलाने मे मेरी मदद करेगे तो मैं उन्हे और कर्ज भी दे दूगा। असल मे उन भडावरदार साहब की जेब मे एक फूटी कौडी भी नही है – मैं आपको सब कुछ बताये देता हू, हालाकि उनके पास गाव और हवेलिया और चार किले और इतनी बहुत-सी स्तेपी की जमीन है कि उसका एक सिरा करीब-करीब श्क्लोव शहर तक पहुचता है फिर भी उनके पास एक कजाक से ज्यादा पैसा नही हैं – एक फूटी कौडी भी नही। इस वक्त भी अगर ब्रेस्लाव के यहूदियो ने उनके लिए सब साज-सामान न जुटाया होता तो उनके पास लडाई पर जाने के लिए कुछ भी न होता। इसीलिए वह दियेत में भी नही जा सके "

"अच्छा तो तुमने शहर मे क्या किया? हमारे आदमियो मे से कोई वहा नजर आया?"

"हा, क्यो नही? वहा हमारे बहुत-से लोग हैं आइजेक और रहूम, और सैमुएल, और हैवालोह, और यहूदी पट्टेदार "

"जहन्नुम मे जाये वे कुत्ते!" *तारास गुस्से से भडककर चिल्लाया*, "मुझे तुम्हारे यहूदियो के गिरोह से क्या वास्ता! मैं तो अपने जापोरोजियो के बारे मे पूछ रहा हू।"

"अपने जापोरोजी तो मैंने देखे नही। मैंने तो बस हुजूर अन्द्रेई को देखा!"

"तुमने अन्द्रेई को देखा?" तारास चिल्लाया। "ठीक-ठीक बताओ, यहूदी, तुमने उसे कहा देखा? तहखानेवाले कैदखाने मे? किसी गड्ढे मे? बेइज्जत किया हुआ? हाथ-पाव बधे हुए?"

"हुजूर अन्द्रेई के हाथ-पाव बाधने की हिम्मत कौन कर सकता है! वह तो एक बहुत शानदार सूरमा बन गये हैं। भगवान की कसम, मैंने तो उन्हे बडी मुश्किल से पहचाना। उनके कधो पर लगे हुए पत्तर सोने के, उनकी बाहो के खोल सोने के, उनका चारआइना सोने का, उनका खोद सोने का और उनका कमरबद सोने का, हर जगह हर चीज सोने की। बसत मे, जब बाग मे सारे पछी गाते और चहचहाते है और घास मे से एक मीठी-मीठी सुगध उठती है, जिस तरह सूरज

"और तुमने उस शैतान के बच्चे को वहीं का वहीं ख़त्म नहीं कर दिया?" बूल्बा गरजा।

"उन्हें ख़त्म क्यों कर देना? वह अपनी मर्ज़ी से उस तरफ़ गये हैं। उन्होंने क्या ग़लत बात की है? उनके लिए वहा ज़्यादा अच्छा है सो उधर चले गये।"

"और तुमने उसको बिल्कुल आमने-सामने देखा?"

"भगवान की क़सम, मैंने बिल्कुल ऐसे ही देखा! कैसा शानदार सूरमा! उन सबमे ज़्यादा शानदार! भगवान उन पर रहम करे, उन्होंने मुझे फ़ौरन पहचान लिया और जब मैं उनके पास गया तो वह मुझसे बोले ..."

"क्या कहा उसने?"

"उन्होंने कहा – नही, पहले उन्होंने इशारे से मुझे बुलाया और उसके बाद बोले 'याकेल!' और मैंने कहा 'हुज़ूर अन्द्रेई!' 'याकेल! मेरे बाप से, मेरे भाई से, सारे कज़ाकों से, सारे ज़ापोरोज़ियों से, सब से कह देना कि मेरा बाप मेरा बाप नहीं रहा, मेरा भाई मेरा भाई नहीं रहा, मेरे साथी मेरे साथी नहीं रहे और मैं उन सब से लड़ूगा। इनमे से हर एक से मैं लड़ूगा!'"

"तुम झूठ बोल रहे हो, जहन्नुमी जूडास!" तारास ग़ुस्से में चीख़ा। "झूठ बोलते हो तुम, कुत्ते! तुमने मसीह को भी सूली पर चढ़ाया, भगवान की मार हो तुम पर! मैं तुम्हें जान से मार डालूगा, शैतान! दफ़ा हो जाओ यहा से और अगर यहा ठहरे तो यहीं क़त्ल हो जाओगे!" और यह कहते हुए तारास ने अपनी तेग़ म्यान से निकाल ली।

डरा हुआ यहूदी फ़ौरन भाग खड़ा हुआ और उसकी सूखी दुबली टांगें उसे जितनी तेज़ी से ले जा सकती थीं उतनी तेज़ी से वह भागता रहा। वह बिना पीछे मुड़े कज़ाकों के पड़ाव को पार करके खुले स्तेपी में पहुंचकर भी बहुत देर तक भागता रहा, हालांकि तारास को जब यह महसूस हो गया कि सबसे पहले सामने आ जानेवाले पर अपना ग़ुस्सा उतारना बेवक़ूफ़ी के सिवा और कुछ नहीं है तो उसने यहूदी का पीछा नहीं किया।

अब उसे याद आया कि पिछली रात उसने अन्द्रेई को एक औरत

गोलोडूखा, रास्ते में तातारो के हाथो से बचकर निकल भागा था, उसने मिर्जा को कत्ल कर दिया था, उसकी पेटी में लटकी हुई मेक्विनों की थैली ले ली थी और तातारी घोडे पर बैठकर और तातारी कपडों में डेढ दिन और दो रात पीछा करनेवालों से भागता रहा था। उसने घोडे को इतना थकाया कि आखिर को वह मर गया। फिर वह दूसरे घोडे पर सवार हुआ, वह भी मर गया और तब वह एक तीसरे घोडे पर बैठकर जापोरोजी पडाव तक पहुचा था क्योकि उसने रास्ते में सुन लिया था कि जापोरोजी शहर दुबनो के पास थे। वह सिर्फ उन लोगो को इतना ही बता सका था कि यह मुसीबत आ पडी थी लेकिन यह सब कैसे हुआ – कि कज़ाकी आदत से मजबूर बाकी बचे जापोरोजी इतने मदहोश तो नही हो गये थे कि इसी हालत मे कैद कर लिये गये थे और तातारो ने उस जगह का भेद किस तरह पाया जहा फौज का खजाना छुपा हुआ था – इसके बारे मे उसने कुछ नही बताया। उसकी ताकत जवाब दे चुकी थी, उसका पूरा जिस्म सूज गया था और उसका चेहरा हवा के थपेडो से जला और झुलसा हुआ था, सो वह उसी जगह खडे-खडे गिर पडा और फौरन गहरी नींद सो गया।

ऐसी हालत मे कज़ाको का कायदा था कि वे फौरन ही लुटेरो का पीछा करने के लिए चल खडे होते थे और रास्ते ही में उनको पकडने की कोशिश करते थे, क्योकि कैदियो को जल्दी ही एशिया माइनर, स्मर्ना या क्रीट के टापू की गुलामो की मडियो मे भेज दिया जाता और फिर खुदा जाने कहा-कहा कज़ाकी चोटिया नज़र आती। यही वजह थी कि इस समय जापोरोजी इकट्ठा हुए थे। हर आदमी टोपी पहने खडा था क्योकि वे अपने आतामानो के हुक्म सुनने नही आये थे बल्कि बराबरवालो की तरह आपस मे सलाह-मशविरा करने जमा हुए थे।

"पहले सरदारो को मशविरा देने दो!" भीड में से कोई चिल्लाया।

"कोशेवोई हमें सलाह दो!" दूसरो ने कहा।

और कोशेवोई ने अपनी टोपी उतार ली क्योकि वह कज़ाको के सरदार की हैसियत से नही बल्कि उनके साथी की हैसियत से बोल रहा था। उसने इस सम्मान के लिए कज़ाको का शुक्रिया अदा किया और बोला

[illegible] रास्ते में [illegible] के हाथों से बचकर निकल भागा था। उसने [illegible] को कत्ल कर दिया था. उसकी तेजी से मारी हुई मंजिलों की [illegible] से वह [illegible] और तातारी घोड़े पर बैठकर और [illegible] में डेढ़ दिन और दो रात [illegible] [illegible] से भागता रहा था। उसने घोड़े को इतना थकाया कि आखिर को वह मर गया। फिर वह दूसरे घोड़े पर सवार हुआ, वह भी मर गया और तब वह तीसरे घोड़े पर बैठकर जापोरोज़ी पड़ाव तक पहुंचा था क्योंकि उसने रास्ते में सुन लिया था कि जापोरोज़ी [illegible] दुश्मनों के पास थे। वह सिर्फ उन लोगों को इतना ही बता सकता था कि यह मुसीबत आ पड़ी थी लेकिन यह सब कैसे हुआ – कि कज़ाकी आदत से मजबूर बाकी बचे जापोरोज़ी इतने मदहोश तो नहीं हो गये थे कि इसी हालत में कैद कर लिये गये थे और तातारों ने उस जगह का भेद किस तरह पाया जहां फौज का खज़ाना छुपा हुआ था – इसके बारे में उसने कुछ नहीं बताया। उसकी ताकत जवाब दे चुकी थी, उसका पूरा जिस्म सूज गया था और उसका चेहरा हवा के थपेड़ो से जला और झुलसा हुआ था, सो वह उसी जगह खड़े-खड़े गिर पड़ा और फौरन गहरी नींद सो गया।

ऐसी हालत में कज़ाकों का कायदा था कि वे फौरन ही लुटेरों का पीछा करने के लिए चल पड़ते होते थे और रास्ते ही में उनको पकड़ने की कोशिश करते थे, क्योंकि कैदियों को जल्दी ही एशिया माइनर, स्मर्ना या क्रीट के टापू की गुलामों की मंडियों में भेज दिया जाता और फिर खुदा जाने कहा-कहा कज़ाकी चोटिया नज़र आतीं। यही वजह थी कि इस समय जापोरोज़ी इकट्ठा हुए थे। हर आदमी टोपी पहने खड़ा था क्योंकि वे अपने आतामानों के हुक्म सुनने नहीं आये थे बल्कि बराबरवालों की तरह आपस में सलाह-मशविरा करने जमा हुए थे।

"पहले सरदारों को मशविरा देने दो!" भीड़ में से कोई चिल्लाया।

"कोशेवोई हमें सलाह दो!" दूसरो ने कहा।

और कोशेवोई ने अपनी टोपी उतार ली क्योंकि वह कज़ाकों के सरदार की हैसियत से नहीं बल्कि उनके साथी की हैसियत से बोल [illegible]। उसने इस सम्मान के लिए कज़ाकों का शुक्रिया अदा किया

बोलते उन्होंने बहुत दिनों से नही सुना था। सब लोग जानना चाहते थे कि बोवदूग क्या कहना चाहता है।

"भाइयो, समय आ गया है कि मैं अपनी बात कहू!" उसने कहना शुरू किया। "बच्चो, इस बूढे की बात सुनो। कोशेवोई ने अक्लमंदी की बात कही है। कज़ाक फौज के सरदार की हैसियत से, जिसे फौज की रखवाली करना और उसके खजाने को बनाये रखना है, वह इससे ज्यादा समझदारी की बात कह ही नही सकता था। यह सच बात है! सो यह तो हुई मेरी पहली बात! और अब मेरी दूसरी बात सुनो। मेरी दूसरी बात यह है कर्नल तारास ने जो कुछ कहा उसमे भी सच्चाई है-खुदा उसकी उम्र बढाये और उक्राइन को उस जैसे और कर्नल नसीब हो! एक कज़ाक का पहला फर्ज और उसकी पहली आन यह है कि वह भाईचारे के उसूल को पूरा करे। अपनी इतनी लबी जिदगी मे मैंने कभी नही सुना कि किसी कज़ाक ने अपने किसी साथी को छोडा हो या उसके साथ धोखेबाज़ी की हो! यहा जो कज़ाक हैं वे भी और सेच मे जो कैद हुए वे भी सब हमारे साथी हैं। इससे कोई फर्क नही पडता कि कहा कम हैं और कहा ज्यादा। सभी हमारे साथी हैं, सभी हमे प्यारे हैं। सो मैं यह कहता हू जिन लोगो को तातारो के कैदी ज्यादा प्यारे हैं वे तातारो का पीछा करे और जिनको पोलिस्तानियो के कैदी ज्यादा प्यारे हैं और जो एक सच्चे मकसद से मुह मोडना नही चाहते वे यहा रह जाये। कोशेवोई को अपना फर्ज पूरा करने दो और आधे कज़ाको को अपनी अगुवाई मे तातारो का पीछा करने दो और बाकी आधे कज़ाक सहायक कोशेवोई चुन ले। और अगर आप लोग एक सफेद बालोवाले बूढे की बात माने तो सहायक कोशेवोई के लिए कोई आदमी तारास बूल्बा से ज्यादा ठीक नहीं है। हम मे से कोई बहादुरी मे इसका मुकाबला नही कर सकता।"

बोवदूग इतना कहकर चुप हो गया। सारे कज़ाक इस बात मे बहुत खुश हुए कि बूढे कज़ाक ने उन्हे इतनी समझदारी की सलाह दी। सब अपनी टोपिया उछालकर चिल्लाये

"अच्छी बात कही है, बुढिया! तुम एक अरसे से चुप थे लेकिन आखिरकार तुम बोले। तुमने कज़ाक बिरादरी के काम आने का वादा यू ही नहीं किया था-तुम सचमुच उसके काम आये हो।"

वही रहना चाहते थे उनमे भी बहुत-से लायक कजाक शामिल थे कूरेनो के आतामान देमित्रोविच, कुकूबेनको, वेरतिख्नविस्त, बलाबान और ओस्ताप बूल्बा और बहुत-से दूसरे ताकतवर और प्रसिद्ध कजाक जैसे वोवतुजेंको, चेरेवीचेंको, स्तेपान गूस्का, ओलरिम गूस्का, मिकोला गूस्ती जादोरोज्नी, मेतेलित्सा, इवान जकूतीगुबा, मोसी शीलो, देग्त्यारेंको, सिदोरेंको, पिसारेंको, दूसरा पिसारेंको और एक और पिसारेंको और कई दूसरे बेहतरीन कजाक। वे सब बहुत दूर-दूर तक घूमे हुए थे वे अनातोलिया के तटो पर घूम चुके थे, क्राइमिया की खारी दलदलो को पार कर चुके थे और स्तेपी को भी। वे द्नेपर मे जा मिलनेवाली सब छोटी-बडी नदियो और उसकी खाडियो के किनारे और टापुओं मे घूम चुके थे, वे मोलदाविया, ग्रीस और तुर्की के इलाको का सफर कर चुके थे। वे अपनी दो पतवारोंवाली कजाकी नावो मे बैठकर काले सागर के हर हिस्से मे जा चुके थे। वे पचास नावो के बेडे की मदद से बडे-बडे और दौलत से भरपूर जहाजो पर हमला कर चुके थे वे तुर्की के कई बादबानी जहाजो को डुबो चुके थे और अपने जमाने मे बहुत, बहुत ही ज्यादा बारूद का इस्तेमाल कर चुके थे। एक बार नही, कई बार उन्होने कीमती मखमल और रेशम फाडकर अपने पैरो के लिए पट्टिया बनायी थी। एक बार नही, कई बार उन्होंने अपनी पेटियो से लटकते हुए बटुओ को चमकदार सेक्विनों से भरा था। यह अदाजा लगाना बहुत मुश्किल था कि उन्होंने कितनी दौलत – जो औरो के लिए पूरी जिदगी ऐश और आराम से काटने के लिए काफी होती – पीने-पिलाने और दावतो मे खर्च कर दी थी। उन्होंने हर खास और आम की दावते करके और गानेवालो को किराये पर बुला-बुलाकर ताकि पूरी दुनिया खुशी से भर जाये असली कजाकी अदाज मे यह सारी दौलत उडा दी थी। अब उन मे से कुछ ही के पास थोडा-बहुत खजाना – प्याले, चादी के जाम और चूडिया-द्नेपर के टापुओ मे सरकडो के बीच छुपा हुआ था ताकि अगर इत्तिफाक से तातार सेच पर अचानक धावा बोल दे तो वह उनके हाथ न लग सके। तातारो के लिए इस खजाने को पाना जरूर कठिन था क्योकि अब तो खुद उसके मालिक भी भूलने जा रहे थे कि उन्होंने उसे कहा गाडा था। ऐसे थे वे कजाक जो यहा रहना और पोलिस्तानियो से

जब सूरज बिल्कुल डूब गया और अंधेरा छा गया तो उन्होंने गाड़ियों पर तारकोल लगाना शुरू किया। जब सब तैयारियां खत्म हो गयीं तो उन्होंने गाड़ियों को तो रवाना कर दिया और खुद धीरे-धीरे गाड़ियों के पीछे जाने से पहले एक बार फिर अपने साथियों को टोपियां उतारकर सलाम किया। पैदल फौज के पीछे घुड़सवार फौज हल्के-हल्के कदमों में एक भी चीख या सीटी की आवाज़ निकाले बिना चल पड़ी और थोड़ी ही देर में सब लोग अंधेरे में खो गये। घोड़ों की टापों की खोखली-सी धप-धप और किसी पहिये की चरचराहट के सिवा, जिसने अभी अच्छी तरह काम करना शुरू नहीं किया था या जिस पर अंधेरे में अच्छी तरह तारकोल नहीं लग सका था, और कोई आवाज़ नहीं सुनायी दे रही थी।

अपने जिन साथियों को वे छोड़े जा रहे थे वे बहुत देर तक उनके पीछे हाथ हिलाते रहे, हालांकि अब उन्हें कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था। और जब पीछे छूट जानेवाले मुड़कर अपनी-अपनी जगहों पर वापस गये और तारों की रोशनी में, जो अब खूब चमक रहे थे उन्होंने देखा कि आधी गाड़ियां जा चुकी हैं और उनके बहुत-से साथी अब उनके बीच नहीं रहे तो उनके दिल भर आये और सब लोगों ने अपने मस्त रहनेवाले सिरों को झुका लिया और सोच में डूब गये।

तारास ने देखा कि कज़ाकी पांतों पर मातम छा गया था और दुख ने जो बहादुरों की शान के खिलाफ था, कज़ाकी सिरों को झुका दिया था मगर वह चुप रहा क्योंकि वह चाहता था कि कज़ाक अपने साथियों के बिछुड़ने के दुख के आदी हो जायें और इस बीच उसने चुप-चाप इसकी तैयारी शुरू कर दी कि उनको ऊंची आवाज़ में कज़ाकों के लड़ाई के नारे के ज़रिये एकदम ललकारा जाये ताकि एक बार फिर हर आदमी की हिम्मत बंध जाये और हर एक में पहले से ज़्यादा ताकत पैदा हो जाये—जो कि सिर्फ एक स्लाव के व्यापक और शक्तिशाली स्वभाव में ही पायी जा सकती है—क्योंकि वे दूसरों के मुकाबले में ऐसे ही हैं जैसे समुद्र नदियों के मुकाबले में होता है। जब मौसम तूफानी होता है तो समुद्र गरजता और दहाड़ता है और इतनी ऊंची-ऊंची आकाश को छूनेवाली लहरें पैदा करता है जो कमज़ोर नदी-नाले कभी नहीं कर सकते। लेकिन जब हवा नहीं चलती और

उभार पैदा करनेवाली क्यो न हो, लेकिन अगर उसके साथ एक-आध मौके के अनुसार कुछ ठीक चुने हुए शब्द भी कह दिये जाये तो शराब और आत्मा दोनो की शक्ति दुगनी हो जाती है।

"भाई साहबो, मैं आपकी दावत इसलिए नही कर रहा हू कि आप लोगो ने मुझे अपना आतामान बनाया है, जब कि वह मेरे लिए बड़ा सम्मान है," बूल्बा ने इस तरह अपना भाषण शुरू किया। और न ही अपने साथियो से बिछुड़ने की वजह से। नही, किसी और वक्त इन दोनो ही बातो के लिए दावत देना ठीक होता मगर यह उसके लिए सही मौका नही है। हमारे सामने जो लड़ाई है उसमे कज़ाकों को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी और बहुत कज़ाकी बहादुरी दिखानी पड़ेगी! सो आइये, साथियो, हम सब एकसाथ मिलकर पिये और सबसे पहले अपने पवित्र कट्टरपथी धर्म के नाम पर शराब पिये, इसलिए पिये कि एक ऐसा दिन आये जब सारी दुनिया मे यह धर्म फैल जाये, इसलिए पिये कि दुनिया भर में एक ही पवित्र धर्म हो और सारे विधर्मी ईसाई बन जाये! और आइये, हम सेच के नाम पर शराब पिये कि वह बहुत समय तक क़ायम रहे और विधर्मियों के लिए परेशानी की वजह बना रहे, इसलिए पिये कि सेच हर साल नये-नये, एक से एक अच्छे और खूबसूरत सिपाही भेजता रहे। और फिर, आइये, हम सब एकसाथ मिलकर अपनी आन-बान के लिए पिये ताकि हमारे पोते और परपोते कह सके कि कभी दुनिया मे ऐसे लोग भी थे, जिन्होने भाईचारे के माथे पर कलंक का टीका नही लगाया और जिन्होने मुसीबत के वक्त अपने दोस्तो को अकेला नही छोड़ा। सो आइये, भाइयो, अब धर्म के नाम पर पिये, धर्म के नाम पर!"

धर्म के नाम पर!" सबसे पासवाली पातो मे खड़े लोग ज़ोर से चिल्लाये।

धर्म के नाम पर!" पिछली पातो के लोगो ने भी साथ दिया और बूढ़ो और जवानो सब ने धर्म के नाम पर शराब पी।

"सेच के नाम पर!" तारास ने कहा और अपना हाथ सिर से बहुत ऊचा उठा दिया।

"सेच के नाम पर!" अगली पातवालो ने गूजती आवाज़ मे जवाब दिया। "सेच के नाम पर!" बूढ़े लोगो ने अपनी सफेद मूछे फड़काकर

झपटकर उनकी आखो को नोच-नोचकर निकालेगे। मगर उस चौडे और हड्डियो से अटे मौत के पडाव की महिमा बहुत ऊची होगी! एक भी शेरदिल कारनामा बेकार नही जायेगा और कज़ाकी महिमा बदूक की नाल से निकले हुए मुट्ठी-भर बारूद की तरह मिट नही जायेगी। एक समय आयेगा जब कोई बदूरा बजानेवाला, जिसकी सफेद दाढी उसके सीने पर बिखरी होगी और जो अपने बुढापे और सफेद बालो के बावजूद शायद उस समय तक मर्दाना ताकत से भरपूर होगा और साथ ही एक पैगबराना तबियत भी रखता होगा, गभीर और शानदार शब्दो मे इनके बारे मे गीत गायेगा। और उनकी महानता तमाम दुनिया मे फैल जायेगी और आनेवाली पीढिया उनकी चर्चा किया करेगी, क्योकि ऐसी घटी के पीतल की झकार की तरह एक ज़ोरदार शब्द बहुत दूर तक पहुचता है जिस घटी मे कारीगर ने शुद्ध और कीमती चादी की बहुत काफी मिलावट कर रखी हो ताकि उसकी मधुर खन-खनाहट दूर-दूर तक, शहरो और गावो मे, महलो और झोपडो मे, यहा तक कि हर तरफ फैलकर सब लोगो को एक ही तरह प्रार्थना के लिए पुकारे।

६

शहर मे किसी को मालूम नही था कि आधे ज़ापोरोज़ी तातारो का पीछा करने जा चुके है। शहर की मीनारो से सतरियो ने इतना ज़रूर देखा था कि कुछ गाडिया जगलो की तरफ ले जायी गयी है लेकिन यह समझा गया कि कज़ाक घात मे बैठने की तैयारिया कर रहे हैं। फ्रासीसी इजीनियर का भी यही विचार था। इस बीच कोशेवोई की बात ठीक साबित होने लगी, शहर को फिर खाने की कमी का सामना करना पडा। जैसा कि पिछली सदियो मे आम तौर पर होता था, फौजो ने अपनी ज़रूरतो का सही अदाज़ा नही लगाया था। उन्होने एक बार धावा करने की कोशिश की लेकिन जिन मनचलो ने इसमे हिस्सा लिया था उनमे से आधो को कज़ाको ने फौरन ही मार गिराया था और बाकी आधो का पीछा करके उन्हे खाली हाथ वापस शहर मे खदेड दिया था। लेकिन यहूदियो ने इस धावे का फायदा उठाया और सारी बातो का पता लगा लिया

मा अपने बच्चे से प्यार करती है और बच्चा अपने मां-बाप से प्यार करता है, मगर यह एक दूसरी ही बात है। जंगली जानवर भी अपने बच्चे से प्यार करता है। लेकिन खून के रिश्ते की वजह से नहीं बल्कि आत्मा के रिश्ते से गैरों से रिश्ता जोड़ना सिर्फ इंसान ही जानता है। दूसरे देशों में भी भाईचारे की मिसालें मिलती है। लेकिन उनमें कोई ऐसी नहीं है जैसी हमारी रूसी धरती पर मिलती है। आप में से बहुतों ने कई-कई साल विदेशों में गुजारे है आप वहा लोगों से मिले है–जो खुद आप ही लोगों की तरह खुदा के बंदे है और आपने उनसे अपने देश के लोगों की तरह बातचीत की है लेकिन जब दिल की बात कहने का मौका आया तो आपने देख लिया कि वे अक्लमंद आदमी जरूर थे मगर आप लोगों की तरह बिल्कुल नहीं थे वे आपकी तरह थे भी और नहीं भी थे! नहीं, भाइयो, जिस तरह एक रूसी आत्मा प्यार करती है उस तरह प्यार करना–सिर्फ दिमाग से या किसी और तरह से नहीं बल्कि हर उस चीज से जो खुदा ने इंसान को दी है–अपने तन, मन, धन से प्यार करना और " यहा तारास ने हाथ हिलाया, अपने सिर को घुमाया और अपनी मूछों को फडकाया और फिर आगे कहा "नहीं, और कोई इस तरह प्यार नहीं कर सकता! मैं जानता हू कि हमारी धरती में शैतानी रिवाजों ने जड पकड ली है हमारे यहा ऐसे लोग पाये जाते हैं जो बस अपने गेहू और सूखी घास के ढेरों के और अपने घोडों के गल्लों के बारे में ही सोचते हैं, जिन्हें बस अपने तहखानों में रखे हुए मुहरबद शहद की शराब के पीपों की रखवाली की फिक्र रहती है। वे न जाने कैसे-कैसे विधर्मियों के तौर-तरीकों की नकल करते हैं। अपनी मातृभाषा से घृणा करते हैं, एक हमवतन दूसरे हमवतन से बात नहीं करता, एक हमवतन दूसरे हमवतन को ऐसे बेच डालता है जैसे बिना आत्मा के दरिंदे मंडी में बेचे जाते हैं। एक विदेशी राजा की–बल्कि राजा भी नहीं किसी पोलिस्तानी रईस ही की, जो अपने पीले बूट से उनके थोबडो पर ठोकरे मारता है–जरा-सी मेहरबानी की नजर उनको भाईचारे से ज्यादा प्यारी है। लेकिन इनमें से सबसे ज्यादा कमीने बदमाश में भी, चाहे वह अपनी खुशामदखोरी और जूतिया चाटने की वजह से कितना ही नीच और पतित क्यों न हो गया हो, मगर, भाइयो, उसमे भी रूसी

से निशाना बाधे थे, उनकी पीतल के कवच जगमगा रहे थे और उनकी आखे चमक रही थी। जब कज़ाको ने देखा कि वे गोली के निशाने पर आ चुके हैं तो उनकी लबी नालवाली बदूको की गरजदार बौछार शुरू हो गयी और वे बराबर गोलिया दागते रहे। यह ज़ोरदार गरज मैदानो और चरागाहो मे दूर-दूर तक गूजने लगी और बढकर एक निरतर दहाड बन गयी। सारे मैदान पर धुए के बादल छा गये। मगर ज़ापोरोज़ी बिना सास लिये बराबर गोलिया चलाते रहे। पीछेवाले लोग आगेवालो के लिए बदूके भरते रहे और इस तरह उन्होने दुश्मन को हक्का-बक्का कर दिया, जिसकी समझ मे यह नही आ रहा था कि कज़ाक बदूको को फिर से भरे बिना कैसे गोलिया चलाते जा रहे है। धुआ, जिसने दोनो फौजो को अपनी लपेट मे ले रखा था, इतना घना हो चुका था कि कोई चीज़ दिखायी नही दे रही थी। किसी को दिखाई नही दे रहा था कि पातो मे किस तरह एक के बाद एक लोग गिरते जा रहे थे। लेकिन पोलिस्तानी अच्छी तरह महसूस कर रहे थे कि गोलियो की बौछार कितनी ज़ोरदार थी और लडाई कितनी गरमा-गरम हो गयी थी और जब वे धुए से बचने के लिए पीछे हटे और उन्होंने इधर-उधर नजर डाली तो अपनी पातो मे बहुत-से आदमी नही पाये मगर दूसरी तरफ कज़ाको के सौ आदमियो मे से बस दो या तीन ही मारे गये थे। और अब तक कज़ाक एक क्षण भर रुके बिना अपनी बदूको से गोलिया चलाये जा रहे थे। विदेशी इजीनियर भी उनके इस दाव-पेच पर हैरान रह गया क्योकि ऐसे दाव-पेच उसने पहले कभी नहीं देखे थे। उसने वही उसी वक्त सबके सामने कहा "ये ज़ापोरोज़ी बहुत बहादुर लोग हैं! इसी तरह दूसरे देशो मे भी लडाई लडनी चाहिये!" उसने सलाह दी कि तोप का मुह फौरन उनके पडाव की ओर मोड दिया जाना चाहिये। ढले हुए लोहे की तोपे अपने चौडे दहानो से गरजने लगी, धरती दूर-दूर तक काप उठी और गूजने लगी, और धुआ पहले से दुगना घना होकर पूरे मैदान पर छा गया। बारूद की गध दूर और पास के शहरो की सडको और चौको तक फैल गयी। लेकिन तोप चलानेवालो ने निशाना बहुत ऊचा लगाया था और अगारो जैसे दहकते गोलो की मार बहुत लबी हो गयी थी। एक भयकर चीख के साथ वे कज़ाको के सिरो के ऊपर तेज़ी से गुज़रकर

कज़ाक किस तरह गुस्से से पागल हो उठे! वे किस ज़ोर-शोर
.ागे बढ़े। किस तरह आतामान कुकूवेनको यह देखकर कि उसके
का आधे से भी ज्यादा हिस्सा तबाह हो चुका है गम और गुस्से
ौल उठा! पलक झपकते मे ही वह अपने बचे हुए कज़ाको को
; लेकर दुश्मनो की पातो के अदर तक घुसता चला गया। अपने
; मे उसने सामने आनेवाले पहले आदमी को गाजर-मूली की तरह
ाटकर टुकडे-टुकडे कर दिया, बहुत-से सवारो और उनके घोडो को,
नी बरछी से छेद-छेदकर नीचे गिरा दिया। वह तोप चलानेवालो
ओर बढा और एक तोप पर उसने कब्जा कर लिया। वहा उसने
ा कि उमान कुरेन का आतामान और स्तेपान गूस्का सबसे बडी
, र पर कब्जा करने ही वाले है। उसने उन्हे वहा छोडा और खुद
ाडकर अपने कज़ाको के साथ एक और जमाव की ओर बढा। नेज़ामाईका
ज़ाक जहा-जहा से गुज़रे अपने पीछे एक साफ रास्ता छोडते गये
। जिस ओर मुडे उन्होने मौत के घाट उतारे गये पोलिस्तानियो की
ाली तैयार कर दी। पोलिस्तानियो की पाते घटती दिखायी दे रही
थी, घास की तरह उनके गट्ठे के गट्ठे काट दिये गये थे। वोवतुज़ेको
गाडियो के पास लड रहा था और चेरेवीचेको सामने की तरफ,
दूर की गाडियो के पास देगत्यारेको लड रहा था और उसके पीछे
कुरेन का आतामान वेरतिखविस्त। देगत्यारेको ने दो सामतो को बरछी
से मार डाला था और अब एक तीसरे ज़िद्दी सामत पर हमला कर
रहा था। कीमती कवच पहने यह दुश्मन फुर्तीला और दिलेर था और
उसके साथ पचास नौकर थे। उसने क्रुद्ध होकर देगत्यारेको को
पीछे धकेला और नीचे ज़मीन पर गिराकर उसके ऊपर अपनी तलवार
घुमाते हुए चीखा "कज़ाक, कुत्तो, तुम मे से कोई मुझसे लडने
की हिम्मत नही कर सकता!"

"एक है जो हिम्मत कर सकता है!" मोसी शीलो ने आगे झपटते
। वह एक हट्टा-कट्टा कज़ाक था और कई बार समुद्री मुहिमो
रह चुका था और हर तरह की कठिनाइया झेल चुका
।. शहर त्रैबेज़ोंद के पास उसे और इसके कज़ाको
पर काम करनेवाले गुलाम बना लिया था
े डाल दी थी और हफ्ता-हफ्ता भर उन्हे

उसको एक डंडा लगाये। लेकिन किसी ने भी उस पर डंडे का वार नहीं किया क्योंकि सबको उसकी पुरानी सेवाएं याद थीं। इस तरह का कज़ाक था मोसी शीलो।

"यहां बहुत-से ऐसे लोग हैं जो तुम कुत्तों को मार डालेंगे," वह अपने ललकारनेवाले पर हमला करते समय चिल्लाया। और किस तरह लड़े हैं वे दोनों! दोनों के कंधों पर लगे हुए पतरे और चारआईने उनके वारों से मुड़-मुड़ गये। शैतान पोलिस्तानी ने शीलो के ज़ंजीरों से बने कवच को काटकर अपनी तलवार का आगे का हिस्सा उसके शरीर में घोंप दिया। कज़ाक की कमीज़ लाल रंग में रंग गयी लेकिन शीलो ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने अपनी गठीली बांह (बहुत ही ताकतवर थी वह बांह!) ऊंची घुमाकर अचानक सिर पर वार किया जिससे पोलिस्तानी के होश उड़ गये। उसका पीतल का खोद टुकड़े-टुकड़े होकर उसके सिर से उड़ गया। पोलिस्तानी डगमगाया और गिर पड़ा। शीलो अपने सन्नाये हुए दुश्मन को काटता और टुकड़े-टुकड़े करता रहा। कज़ाक अपने दुश्मन का सफ़ाया करने में देर मत लगाओ, पीछे तो मुड़कर देखो! कज़ाक नहीं मुड़ा और उसके शिकार के नौकरों में से एक ने उसकी गर्दन में चाकू भोंक दिया। शीलो मुड़ा और वह अपने कातिल के पास पहुंचनेवाला ही था कि बारूद के धुएं में ग़ायब हो गया। हर तरफ़ तोड़ेदार बंदूकों की गरज सुनायी दी। शीलो लड़खड़ाया और उसको पता चल गया कि उसका ज़ख्म जानलेवा है। वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसने अपने ज़ख्म को हाथ से दबाकर अपने साथियों से कहा "अलविदा भाइयो, मेरे साथियो, अलविदा! भगवान करे पवित्र रूसी धरती सदा बनी रहे और हमेशा उसका सम्मान हो!" और उसने अपनी धुंधलायी आंखें बंद कर लीं और उसकी कज़ाकी आत्मा अपने कठोर ढांचे में से निकल गयी। मगर जादोरोज्नी अपने कज़ाकों के साथ घोड़े पर सवार आगे बढ़ता आ रहा था और वेरतिखविस्त पोलिस्तानी पांतों को तितर-बितर कर रहा था और बलाबान भी मैदान में उतर रहा था।

"क्यों भाइयो!" बूल्बा ने आतामानों को पुकारते हुए कहा "अभी बारूददानों में बारूद बाकी है? कज़ाकी ताक़त अभी कमज़ोर तो नहीं पड़ी? कज़ाक हथियार तो नहीं डालते?"

"क्यो भाइयो!" आतामान तारास घोडे को सरपट दौडाता हुआ इन सब लोगो के सामने आकर बोला "अभी बारूददानो मे बारूद बाक़ी है? कज़ाकी ताक़त तो अभी कमज़ोर नही पडी? कज़ाक हथियार तो नही डालते?"

"बारूददानो मे अभी बारूद बाकी है, कोशेवोई! कज़ाकी ताक़त अभी कमज़ोर नही पडी है! कज़ाक कभी हथियार नही डालते!"

बोवद्यूग अपनी गाडी से गिर पडा था। एक गोली ठीक उसके दिल के नीचे आकर लगी थी लेकिन अपनी आखिरी सास मे बूढा कज़ाक बोला- "मैं इस दुनिया से बिछडने पर दुखी नही हू। भगवान सबको ऐसा ही अत दे! भगवान करे रूसी धरती हमेशा महान रहे!" और यह कहकर बोवद्यूग की आत्मा आसमान की ओर चल दी ताकि दूसरे बूढे लोगो को, जो कबके गुज़र चुके थे, बताये कि रूसी धरती पर कितनी अच्छी तरह लडाई लडी जाती है और उससे भी ज्यादा यह कि वहा पवित्र धर्म के लिए कितनी खूबी से जान दी जाती है।

बोवद्यूग के मरने के थोडी ही देर बाद कुरेन का आतामान बलाबान ज़मीन पर गिर पडा। उसको तीन जानलेवा घाव लगे थे–बरछी, गोली और भारी चौडी तलवार से। वह सबसे साहसी कज़ाको मे से था। वह बहुत-सी समुद्री मुहिमो मे आतामान रह चुका था लेकिन सबसे महान उसका अनातोलिया के तट पर धावा था। वहा बहुत-से सोने के सिक्के, कीमती तुर्की माल, कपडे और सामान उनके हाथ लगे थे। लेकिन वापस देश आते वक्त उनको मुसीबत ने आ घेरा था वे बिचारे तुर्की तोपो से मारे गये थे। तुर्कों ने अपने जहाज़ मे लगी तोपें जो दागनी शुरू की तो कज़ाको की आधे से ज्यादा नावे डोलने और डगमगाने लगी और अत मे उलट गयीं, इस तरह कई कज़ाक डूब गये मगर नावो की बगल मे बधे हुए सरकडो के गट्ठो ने नावो को डूबने से बचा लिया। जितनी तेज़ी से बलाबान के चप्पू चल सके उतनी तेज़ी से वह नाव को खेता हुआ आगे बढता गया और सिर्फ सूरज के सामने रुकता था ताकि तुर्क उसे देख न सके। रात भर उन्होंने अपनी टोपियो और बाल्टियो में भर-भरकर नावो मे से पानी निकाला और गोलो से जो छेद हो गये थे उनकी मरम्मत की। उन्होंने अपने चौडे-चौडे कज़ाकी पतलून काटकर बादबान बनाये। पूरी

मैं आप सबकी आंखों के सामने मर रहा हूं। जो लोग हमारे बाद ज़िंदा रहेंगे भगवान उन्हें हमसे अच्छा बनाये और भगवान करे हमारी रूसी धरती ईसा मसीह की प्यारी ज़मीन, हमेशा-हमेशा खूबसूरत ही रहे!" और उसकी जवान आत्मा परलोक सिधार गयी। फ़रिश्तों ने उसे अपनी बांहों में उठा लिया और आसमान पर ले गये। वहां उसका समय बहुत अच्छा कटेगा। "तुम मेरे दायें हाथ की ओर बैठो कुकूबेन्को!" ईसा मसीह उससे कहेंगे। "तुमने अपने साथियों के साथ बेवफ़ाई नहीं की और न ही तुमने और कोई बदनामी का काम किया है, न तुमने किसी को मुसीबत के समय अकेला छोड़ा है, तुमने मेरे गिरजे की रखवाली की है और उसकी सुरक्षा का ध्यान रखा है!"
कुकूबेन्को की मौत ने उन सबको दुखी कर दिया। कज़ाकों की पांतें छंटती जा रही थीं, बहुत-से बहादुर मौजूद नहीं थे फिर भी उनके पांव नहीं उखड़े थे और वे मैदान में डटे हुए थे।

"तो बोलो, साथियो," तारास ने बचे हुए कुरेनों को बुलाकर पूछा, "अभी बारूददानों में बारूद है? तुम्हारी तलवारें कुंद तो नहीं हुईं? कज़ाकी ताकत अभी कमज़ोर तो नहीं हुई? कज़ाक हथियार तो नहीं डालेंगे?"

"अभी काफी बारूद है, कोशेवोई! हमारी तलवारें अभी तेज़ हैं! कज़ाकी ताकत अभी कमज़ोर नहीं हुई है! कज़ाक हथियार नहीं डालेंगे!"

और एक बार फिर वे आगे बढ़े जैसे कि उन्हें कोई नुकसान ही न पहुंचा हो। अब बस तीन कुरेनों के आतामान ज़िंदा बचे थे। हर तरफ लाल-लाल खून की नदियां बह रही थीं, कज़ाकों की और उनके दुश्मनों की लाशों के एक साथ ढेर बन गये थे जो उनके सिर के ऊपर ऊंचे-ऊंचे पुश्तों जैसे लग रहे थे। तारास ने आसमान पर नज़र डाली तो देखा कि वहां तो अभी से बाज़ों की एक लकीर आसमान के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल चुकी थी। उनके लिए कैसी अच्छी दावत होगी! और उधर मेतेलित्सा एक बरछी की नोक पर उछाला जा रहा था, और एक तरफ दूसरे पिसारेंको का सिर लुढ़क रहा था और उसकी पलकें फड़क रही थीं। एक और तरफ ओख्रीम गूस्का डोलता हुआ और उसके बदन के टुकड़े-टुकड़े होकर वह धम से ज़मीन पर गिर पड़ा।

जाता है। बूढा तारास रुककर देखने लगा कि वह किस तरह अपने लिए रास्ता साफ करता, अपने सामने के लोगो को इधर-उधर बिखेरता और काटता और दाये-बाये वार करता चला आ रहा है। तारास इस दृश्य को देख न सका और वह गरजा "अरे, तेरे अपने साथी? तू अपने ही साथियो को कत्ल करेगा? शैतान की औलाद!"

लेकिन अन्द्रेई कुछ नही देख रहा था कि उसके सामने दुश्मन हैं या दोस्त। उसे कुछ नजर नही आ रहा था सिवाय घुघराली लटो के, लबी-लबी लहराती लटे और नदी के हस की तरह सफेद सीना और बर्फ की तरह सफेद गर्दन और कधे और वह सब कुछ जो भावनाओ से उन्मत्त चुबनो के लिए बनाया गया था।

"ऐ बच्चो! उसको घेरकर मेरे लिए उस जगल मे ले आओ!" तारास जोर से चिल्लाया। पलक झपकते तीस बहुत फुर्तीले कज़ाक उसके आदेश को पूरा करने के लिए घोडो पर सवार लपक पडे, उन्होने अपनी ऊची टोपियो को अपने सिरो पर और मजबूती से जमा लिया और हुसारो का मुकाबला करने दौडे। उन्होने एक छोर से आगे-वाले लोगो पर हमला करके उनको बौखला दिया और उनको पीछेवाली पातो से अलग करके उन पर कुछ जबर्दस्त वार किये। इसी बीच गोलोकोपीतेको ने अन्द्रेई की पीठ पर अपनी तलवार का चपटा हिस्सा दे मारा और फिर सबके सब अपनी पूरी कजाकी तेजी से हुसारो से दूर भाग गये। अन्द्रेई कितना गरमा गया था उस समय! किस तरह उसकी नस-नस मे उसका जवान खून खौल उठा था! अपने घोडे की पसलियो मे नुकीली एड गडाकर वह ज्यादा से ज्यादा तेज़ी से कज़ाको के पीछे भागा। उसने एक बार भी पीछे मुडकर नही देखा और उसे यह भी नही मालूम हुआ कि उसके सिर्फ बीस आदमी उसके साथ आ सके थे। कज़ाक पूरी तेजी से भाग रहे थे और वे सीधे जगल की ओर मुड गये। अन्द्रेई अपने घोडे पर बैठा आगे की ओर झपटता ही चला गया और उसने लगभग गोलोकोपीतेको को पछाड ही दिया था कि एक शक्तिशाली हाथ ने उसके घोडे की लगाम पकड ली। अन्द्रेई तेज़ी से घूमा उसके सामने तारास खडा था! वह सिर से पाव तक काप उठा और एकदम उसके चेहरे का रग उड गया

अपने बेटे का कातिल स्थिर खड़ा देर तक उस निर्जीव शरीर को देखता रहा। वह मौत मे भी खूबसूरत लग रहा था उसका मर्दाना चेहरा जो अभी जरा ही देर पहले तक अपने मे ताकत रखता था और हर औरत के लिए अत्यंत सम्मोहक और आकर्षक था, अपनी स्थिरता मे भी अद्भुत और सुदर दिखायी दे रहा था, उसकी काली मखमल जैसी काली भवे उसके नाक-नक्शे के पीलेपन को और उभार रहे थे।

"यह कैसा अच्छा कज़ाक बन सकता था!" तारास बोला। "लबे कद का, काली भवोवाला, नर्म चेहरेवाला और लडाई मे ताकतवर बाहवाला! मगर वह खत्म हो गया, घृणित तरीके से खत्म हो गया, एक कमीने कुत्ते की तरह!"

"बात्को, यह तुमने क्या किया? क्या तुमने ही उसे मार डाला?" उसी समय घोडे पर सवार पास आते हुए ओस्ताप ने कहा।

तारास ने अपना सिर हिला दिया।

ओस्ताप ने मुर्दा आखो को ध्यान से देखा। अपने भाई के मरने के दुख से उसका जी भर आया। उसने तुरत कहा

"बात्को, इसको अच्छी तरह दफन कर दे ताकि कोई दुश्मन इसका अपमान न कर सके और मुर्दों को खानेवाले जानवर इसकी बोटिया न नोच सके।"

"वे लोग हमारी मदद के बिना ही उसको दफन कर देगे!" तारास ने कहा। "इसके लिए बहुत-से रोनेवाले और शोक मनानेवाले होगे!"

एक दो मिनट के लिए उसने सोचा कि उसे भेडियो का शिकार बनने के लिए छोड दे या उसके सामती साहस का सम्मान करे, उस साहस का जिसकी एक बहादुर आदमी हर एक मे इज्ज़त करता है। उसी समय उसने गोलोकोपीतेको को घोडा भगाते हुए अपनी ओर आते देखा।

"अफसोस हमारे हाल पर, आतामान! पोलिस्तानियो की ताकत बढ़ गयी है। उनकी मदद के लिए ताजा फौजे आ गयी है!"

गोलोकोपीतेको ने अभी बात छेडी ही थी कि वोवनुज़ेको घोडा भगाता हुआ वहा आ पहुचा।

ऊटपटांग बक रहे हो। आज पहली बार तुम जरा आराम से सोये हो। अगर तुम अपने सिर पर मुसीबत नही लाना चाहते हो तो शान्त रहो।"

मगर ताराम अब भी अपने विचारों को समेटने और यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि हुआ क्या था।

"ओहो, मुझे तो पोलिस्तानियों ने घेरकर लगभग पकड़ लिया था। मेरे लिए लड़ते हुए उस भीड़ मे से निकलने का कोई रास्ता नही था?"

"तुम से कहा जा रहा है कि चुप रहो, शैतान की औलाद!" तोक्तान गुस्सा होकर चिल्लाया, जैसे कि एक आया बुरी तरह तंग आकर किसी बेचैन और चुलबुले बच्चे पर चिल्लाती है। "यह जानकर तुम्हे क्या फायदा होगा कि तुम किस तरह बच निकले। इतना काफी है कि तुम बच गये। ऐसे लोग थे जो तुम्हे अकेला छोड़ने पर तैयार नही थे–तुम्हे बस इतना ही जानने की जरूरत है! हमे अभी कई और राते कठिन सफर मे काटनी है। तुम्हारा ख्याल है कि तुम एक मामूली कज़ाक समझे जाते हो? नही, तुम्हारे सिर की कीमत उन लोगो ने दो हजार डुकट लगायी है।"

"वार्सा? वार्सा क्यो?" याक्वेल ने कहा। उसके कधे और भवे अचभे से ऊपर उठ गयी।

"बातो मे वक्त बर्बाद मत करो। मुझे वार्सा ले चलो। चाहे कुछ भी हो मैं एक बार फिर उसे देखना चाहता हू और ज्यादा नही, सिर्फ एक बात उससे करना चाहता हू।"

"एक बात, किससे?"

"उससे, ओस्ताप से, अपने बेटे से!"

"लेकिन सरकार क्या आपको मालूम नही कि अभी से "

"मैं सब जानता हू। मेरे सिर के लिए दो हजार ड्यूकट का इनाम है। वे उसकी कीमत जानते हैं, बेवकूफ कही के! मैं तुम्हे पाच हजार ड्यूकट दूगा। लो दो हजार तो यह रहे," बूल्बा ने एक चमडे के बटुए मे से दो हजार ड्यूकट निकाले, "और बाकी जब मैं वापस आ जाऊगा।"

यहूदी ने जल्दी से एक तौलिया उठाकर पैसे को उससे ढक दिया।

"ओह, कितने खूबसूरत सिक्के है! ओह, सोने के सिक्के!" उसने एक ड्यूकट को अपनी उगलियो से घुमाकर उसे दातो से परखते हुए कहा, "मेरा ख्याल है कि हुजूर ने जिस आदमी को इन ड्यूकटो से अलग किया है वह उसके बाद एक घटे भी जिदा नही रहा होगा बल्कि इतने सुदर सिक्के खोने के बाद सीधे नदी मे जाकर डूब मरा होगा।"

"मैं तुमसे न कहता और शायद अपने आप ही वार्सा चला जाता लेकिन ऐसा हो सकता है कि कमबख्त पोलिस्तानी मुझे पहचान ले और पकड ले क्योकि मैं साजिश करने मे बिल्कुल कच्चा हू और तुम यहूदी तो बने ही इसी के लिए हो। तुम तो खुद शैतान को भी धोखा दे सकते हो। तुम हर तरह की चाले जानते हो— इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हू! और फिर वार्सा मे मैं अकेला कुछ नही कर सकता। अब जाकर अपनी गाडी तैयार कर लो और मुझे वहा ले चलो!"

"और क्या हुजूर यह समझते है कि मैं बस जाकर अपनी घोडी को गाडी मे जोतकर 'टक-टक, भूरी, चल पडो, शाबाश' कहूगा

जा रही है। फ़ासीसी इंजीनियर विदेश से आये हुए हैं इसलिए ढेरों ईंटें और पत्थर सड़कों के रास्ते इधर से उधर ले जाये जा रहे हैं। हुजूर गाड़ी पर लेट जायें और मैं हुजूर के ऊपर ईंटें चुन दूगा। हुजूर खूब तनदुरुस्त हट्टे-कट्टे मालूम होते हैं इसलिए अगर इंटें जरा भारी भी हुईं तो भी हुजूर को नुकसान नही पहुचेगा। मैं नीचे एक छेद बना दूगा जिसमे से हुजूर को खाना खिलाया जा सके।"

"किसी तरह बस मुझे वहा ले चलो!"

घंटे-भर बाद ईंटों से लदी हुई एक गाड़ी जिसे दो मामूली घोड़े खींच रहे थे, शहर उमान से निकली। इनमें से एक घोड़े पर लंबा याकेल बैठा हुआ था। वह मील के पत्थर की तरह लंबा था और जब वह घोड़े पर बैठा हुआ हिल रहा था तो उसके लंबे-लंबे घुघराले गलमुच्छे उसकी चंदिया पर मढ़ी हुई खास तरह की यहूदी टोपी के नीचे से निकले हुए लहरा रहे थे।

११

जिस जमाने में यह सब कुछ हो रहा था तब तक सीमाओं पर चुंगी के अफ़सरों या पहरेदारों का – जो उद्यमशील व्यक्तियों के लिए बहुत डरावनी चीज थे – रिवाज नही था और इसीलिए कोई भी आदमी जो चीज चाहता था सीमा के पार ले जा सकता था। अगर कोई तलाशी या निरीक्षण कर भी बैठता था तो सिर्फ अपनी खुशी की खातिर और खास तौर पर उस सूरत में जबकि गाड़ियों में कोई चीज आंखों को अपनी ओर आकर्षित करनेवाली होती थी और जबकि उस आदमी के अपने हाथ में दम और ताकत होती थी। लेकिन ईंटों में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी और वे शहर के बड़े फाटकों में से बिना किसी रुकावट के निकाल ली गयीं। अपने तंग दड़बेखाने में से बुल्बा सिर्फ सड़कों का शोर और कोचवानों का चिल्लाना सुन सकता था। याकेल अपने छोटे-से धूल से अटे हुए घोड़े पर बैठा ऊपर-नीचे उछलता हुआ अपनी राह के निशानों को ध्यान से मिटाने के बाद एक तंग और अंधेरी गली में घुसा जो "गंदी सड़क" या "यहूदी सड़क" कहलाती थी क्योंकि वार्सा के लगभग सारे यहूदी इसी सड़क पर रहते

यहूदी बूल्वा को न समझ मे आनेवाली अपनी भाषा मे बातचीत करने लगे। तारास ने हर एक की तरफ देखा। लगता था कि किसी चीज ने उसको बहुत उत्तेजित कर दिया था। उसके खुरदुरे और ठोस चेहरे पर आशा की एक तेज लपट कौंध गयी–एक ऐसी लपट जो कभी-कभी बेहद निराश आदमी को अपनी झलक दिखा देती है और तारास का बूढा दिल एक नौजवान दिल की तरह तेजी से धड़कने लगा।

"सुनो, ऐ यहूदियो!" उसने कहा और उसकी आवाज मे खुशी की खनक थी। "तुम सब कुछ कर सकते हो, यहा तक कि समुद्र की तह भी खोद सकते हो और यह बात बहुत पहले साबित हो चुकी है कि यहूदी चाहे तो अपने आप को भी चुरा सकता है। मेरे ओस्ताप को कैद से छुड़ा लो! शैतान के चगुल से निकल भागने मे उसकी मदद करो! इस आदमी को मैंने बारह हजार ड्यूकट देने का वादा किया है, मैं बारह हजार और बढ़ाये देता हू। मैं अपनी तमाम कीमती सुराहिया और प्याले, जमीन मे गड़ा हुआ अपना तमाम सोना, अपना घर और अपना आखिरी लिबास तक तुमको दे दूगा और तुमसे अपने जीवन भर के लिए समझौता कर लूगा कि लड़ाइयो मे जो कुछ मैं जीतू उसका आधा तुमको दे दूगा।"

"ओह, यह नही हो सकता, मेरे प्यारे हुजूर ऐसा नही किया जा सकता!" यांकेल ने ठडी सास लेकर कहा।

"नहीं, यह नहीं किया जा सकता!" एक और यहूदी बोला।

तीनो यहूदियो ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"अगर हम कोशिश करे?" तीसरे ने दूसरे दो यहूदियो को डरी-डरी नजरो से देखते हुए कहा। "हो सकता है कि खुदा हमारी मदद कर दे।"

तीनो यहूदी जर्मन मे बातचीत करने लगे। बूल्वा ने कान लगाकर सुनने की बहुत कोशिश की लेकिन वह एक शब्द भी नही समझ पाया, उसने सिर्फ एक ही शब्द बार-बार सुना, मरदोहाई।

"सुनिये हुजूर!" यांकेल ने कहा। "हमको एक ऐसे आदमी से सलाह करनी चाहिये जिसका ऐसा दूसरा आज तक दुनिया मे पैदा नही हुआ! ओफ! ओह! वह तो सुलेमान की तरह बुद्धिमान

है और जो काम वह नही कर सकता उसे दुनिया मे कोई नही कर सकता। यहा बैठे रहिये, यह रही कुजी, किसी को अदर न आने दीजियेगा।"

यहूदी सडक पर निकल गये।

तारास ने दरवाजे मे ताला लगा दिया और छोटी-सी खिडकी मे से यहूदियो की गदी सडक को देखने लगा। तीनो यहूदी सडक के बीचोबीच रुक गये और बहुत उत्तेजित होकर बाते करने लगे। थोडी ही देर मे एक चौथा आदमी भी उनमे आन मिला और फिर आखिर मे एक पाचवा आदमी भी आ गया। तारास ने फिर उनको बार-बार मरदोहाई कहते सुना। यहूदी बराबर सडक की एक ओर देखते रहे यहा तक कि अत मे यहूदी जूते पहने हुए एक पाव और एक यहूदी कोट का दामन कोनेवाले टूटे-फूटे मकान के पीछे से निकलकर सामने आया। "ओह, मरदोहाई! मरदोहाई!" सारे यहूदी एक साथ चिल्लाये। एक दुबला-पतला यहूदी, जो याकेल से कद मे कुछ छोटा ही था लेकिन उसके चेहरे पर याकेल से ज्यादा झुर्रिया थी और जिसका ऊपर का होट बहुत ही मोटा था, इस बेचैन टोली की ओर आया और सारे यहूदी बडी उत्सुकता से उसे अपनी समस्या के बारे मे जल्दी-जल्दी बताने मे एक-दूसरे से होड करने लगे, और मरदोहाई ने इसी बीच मे कई बार उस छोटी-सी खिडकी की ओर देखा जिससे तारास ने यह अनुमान लगाया कि वे लोग उसी के बारे मे बातचीत कर रहे थे। मरदोहाई ने अपने हाथ हिलाये, उनकी बाते सुनी, उनकी बात काटी, बार-बार एक तरफ थूका और अपने कोट का दामन उठाकर जिससे उसकी गदी पतलून दिखायी देने लगी, उसने जेब मे हाथ डालकर उसमे से कुछ जेवरो की तरह की छोटी-मोटी चीजे निकाली। अत मे सारे यहूदियो ने मिलकर इतना शोर मचाया कि जो यहूदी चौकीदारी कर रहा था उसे उनको चुप रहने का इशारा करना पडा और तारास को अपनी सुरक्षा की चिता होने लगी लेकिन जब उसे याद आया कि यहूदी सडक के अलावा और कही बात कर ही नही सकते और उनकी भाषा समझना खुद शैतान के भी बस की बात नही है, तो उसे बडी तसल्ली हुई।

दो एक मिनट बाद सब यहूदी एक साथ कमरे मे घुस आये।

है और जो काम वह नही कर सकता उसे दुनिया मे कोई नही कर सकता। यहा बैठे रहिये, यह रही कुजी, किसी को अंदर न आने दीजियेगा!"

यहूदी सडक पर निकल गये।

तारास ने दरवाजे मे ताला लगा दिया और छोटी-सी खिडकी मे से यहूदियो की गदी सडक को देखने लगा। तीनो यहूदी सडक के बीचोबीच रुक गये और बहुत उत्तेजित होकर बाते करने लगे। थोडी ही देर मे एक चौथा आदमी भी उनमे आन मिला और फिर आखिर मे एक पाचवा आदमी भी आ गया। तारास ने फिर उनको बार-बार मरदोहाई कहते सुना। यहूदी बराबर सडक की एक ओर देखते रहे यहा तक कि अत मे यहूदी जूते पहने हुए एक पाव और एक यहूदी कोट का दामन कोनेवाले टूटे-फूटे मकान के पीछे से निकलकर सामने आया। "ओह, मरदोहाई! मरदोहाई!" सारे यहूदी एक साथ चिल्लाये। एक दुबला-पतला यहूदी, जो याकेल से कद मे कुछ छोटा ही था लेकिन उसके चेहरे पर याकेल से ज्यादा झुर्रिया थी और जिसका ऊपर का होट बहुत ही मोटा था, इस बेचैन टोली की ओर आया और सारे यहूदी बडी उत्सुकता से उसे अपनी समस्या के बारे मे जल्दी-जल्दी बताने मे एक-दूसरे से होड करने लगे, और मरदोहाई ने इसी बीच मे कई बार उस छोटी-सी खिडकी की ओर देखा जिससे तारास ने यह अनुमान लगाया कि वे लोग उसी के बारे मे बातचीत कर रहे थे। मरदोहाई ने अपने हाथ हिलाये, उनकी बाते सुनी, उनकी बात काटी, बार-बार एक तरफ थूका और अपने कोट का दामन उठाकर, जिससे उसकी गदी पतलून दिखायी देने लगी, उसने जेब मे हाथ डालकर उसमे से कुछ जेवरो की तरह की छोटी-मोटी चीजे निकाली। अत मे सारे यहूदियो ने मिलकर इतना शोर मचाया कि जो यहूदी चौकीदारी कर रहा था उसे उनको चुप रहने का इशारा करना पडा और तारास को अपनी सुरक्षा की चिंता होने लगी लेकिन जब उसे याद आया कि यहूदी सडक के अलावा और कही बात कर ही नही सकते और उनकी भाषा समझना खुद शैतान के भी बस की बात नही है, तो उसे जरा तसल्ली हुई।

दो-एक मिनट बाद सब यहूदी एक साथ कमरे मे घुस आये।

वजह से वह उसे ठीक करने का तरीका सोच न सका। सौभाग्य से याकेल फौरन उसकी मदद को पहुच गया।

"नामी सरकार! यह कैसे मुमकिन है कि एक काउंट कज़ाक हो? और अगर यह कज़ाक होते तो इनके पास ऐसी पोशाक कहा से आती और इनकी ऐसी काउंट की सी सूरत कैसे हो सकती थी?"

"बस, अब भूठ नही चलेगा।" और सिपाही ने चिल्लाने के लिए अपना बडा-सा मुह खोला।

"आली जाह! चुप रहिये! चुप रहिये! खुदा के लिए!" याकेल चिल्ला पडा। "हम आपको इसका ऐसा इनाम देगे जैसा आज तक किसी को न मिला होगा हम आपको दो सोने के ड्यूकट देगे।"

"बस! दो ड्यूकट! दो ड्यूकट मेरे लिए क्या चीज़ है! मैं तो सिर्फ एक तरफ की दाढी बनाने के लिए अपने नाई को दो ड्यूकट दे देता हू। मुझे सौ ड्यूकट दो, यहूदी।" यह कहकर सिपाही ने अपनी ऊपरी मूछो पर ताव दिया। "अगर तुम मुझे फौरन सौ ड्यूकट नही दोगे तो मैं शोर मचा दूगा!"

"आखिर इतनी बडी रकम क्यो!" यहूदी का चेहरा सफेद पड गया और उसने दुखी होकर कहा। उसने अपना चमडे का बटुआ खोला और इस बात पर खुश हुआ कि उसमे इससे ज्यादा रकम थी ही नही और इस बात पर भी कि वह सिपाही सौ से ज्यादा गिनना नही जानता था। "मेरे हुज़ूर, हमे फौरन चलना चाहिये! आपने देख लिया न ये कितने खराब लोग हैं!" याकेल ने कहा। वह देख रहा था कि सिपाही ड्यूकटो को अपने हाथो मे उलट-पुलट रहा था और मालूम होता था कि वह पछता-सा रहा था कि उसने इससे ज्यादा क्यो नही मागे।

"यह कैसे हो सकता है, शैतान?" बूल्बा ने कहा। "तुमने पैसे तो ले लिये और अब तुम मुझे कज़ाक नही दिखाओगे? नही, तुम्हे कज़ाक दिखाने होगे। अब चूकि तुम पैसे ले चुके हो इसलिए तुम बिल्कुल इकार नही कर सकते।"

"जाओ, दफा हो जाओ यहा से! अगर तुम नही जाते हो तो

नौजवान लड़कियाँ और औरतें, जो बाद में रात-रात भर सिर्फ़ खून में लिथड़ी लाशों के सपने देखती थीं, और नींद में किसी नशे में धुत्त टुमार की तरह, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती थीं, अपनी जिज्ञासा की तृप्ति करनेवाले ऐसे सुनहरे मौक़े को हाथ से नहीं जाने दे सकती थीं। "आह, कैसे जल्लाद हैं निर्दयी!" उनमें से बहुत-सी जैसे हिस्टिरिया के बुखार की हालत में चीखेंगी और अपनी आँखें बंद करके उधर से मुँह मोड़ लेंगी लेकिन वे तमाशे के आख़िर तक वहाँ खड़ी ज़रूर रहेंगी। बाज़ लोग मुँह बाये और हाथ फैलाये ज़्यादा अच्छी तरह देख सकने के लिए अपने सामनेवालों के सिरों पर कूद पड़ने को तैयार थे। छोटे-छोटे, दुबले-पतले और मामूली सिरों की भीड़ में कभी किसी कसाई का मोटा चेहरा भी दिखायी पड़ जाता था जो पूरी कार्रवाई को एक पारखी की तरह देख रहा होता था और एक हथियार बनानेवाले से, जिसको वह सिर्फ़ इसलिए अपना सौतेला भाई कहता था कि वह उसके साथ छुट्टी के दिन एक ही शराबख़ाने में पीकर धुत्त हो जाता था, 'हाँ' और 'ना' में बातचीत करता रहता था। कुछ लोग बहुत ज़ोर-शोर में जो कुछ देख रहे थे उस पर टिप्पणी कर रहे थे, कुछ दूसरे लोग तो शर्तें भी लगा रहे थे, मगर जमघट ज़्यादातर ऐसे लोगों का था जो दुनिया को और जो कुछ दुनिया में होता है उसे निश्चित भाव से नाक में उँगली डाले ताकते रहते हैं। सामने की तरफ़ शहर की गारद के बड़ी-बड़ी घनी मूछोंवाले सिपाहियों के बिल्कुल पास एक शरीफ़ नौजवान – या जो अपने को शरीफ़ साबित करना चाहता था – फ़ौजी वर्दी पहने खड़ा था। साफ़ पता चल रहा था कि उसकी कपड़ों की अलमारी में जो कुछ था वह सब उसने निकालकर पहन लिया था और घर पर बस एक फटी-पुरानी क़मीज़ और एक जोड़ा पुराने जूते छोड़ आया था। गर्दन में उसने एक के ऊपर एक दो ज़ंजीरें पहन रखी थीं जिनमें ड्यूकट जैसी कोई चीज़ लटक रही थी। वह अपनी प्राणप्यारी युज़ीस्या के पास खड़ा था और हर क्षण इधर-उधर देखता जाता था कि कहीं कोई उसकी प्रेमिका के रेशमी लिबास को मैला न कर दे। वह उसको हर बात इतने विस्तार से समझा रहा था कि कोई उसमें और कुछ जोड़ ही नहीं सकता था। "ये सब लोग, जिन्हें तुम यहाँ देख रही हो, प्यारी युज़ीस्या," वह कह रहा था, "मुजरिमों को

वे सिर और लंबी-लंबी चोटियां खोले चले आ रहे थे। वे न तो डरकर चल रहे थे और न ही उन पर उदासी छायी थी। बल्कि वे शान गर्व से चले आ रहे थे; उनके कीमती कपड़े तार-तार थे और चीथड़ों की तरह लटक रहे थे। उन्होंने न भीड़ की तरफ आंख उठाकर देखा और न वे उसके सामने झुके। सबसे आगे-आगे ओस्ताप चल रहा था।

जब बूल्बा ने अपने ओस्ताप को देखा तो उस पर क्या गुजरी? उसके दिल में क्या था? बूल्बा भीड़ में से ओस्ताप को ताकता रहा और उसकी कोई भी गति उसकी नज़र से न बची। वे लोग उस जगह के पास पहुंचे, जहां मुजरिमों को कत्ल किया जानेवाला था। ओस्ताप रुका। कड़वा घूंट सबसे पहले उसे ही पीना था। उसने अपने साथियों की तरफ देखा, अपना हाथ ऊपर उठाया और ऊंची आवाज़ में कहा

"खुदा हमें हिम्मत दे कि इन विधर्मी नास्तिकों को, उन सबको जो यहां खड़े हैं एक ईसाई की तकलीफ में चीखने की आवाज़ न सुनायी दे। भगवान करे हममें से कोई भी एक शब्द भी मुंह से न निकाले!"

यह कहने के बाद वह टिकटी की ओर बढ़ा।

"बहुत खूब कहा, बेटे! बहुत खूब!" बूल्बा ने धीरे से कहा और अपना सफेद बालोंवाला सिर नीचे झुका लिया।

जल्लाद ने ओस्ताप के चीथड़े नोचकर फेंक दिये उसके हाथ-पांव खास तौर से बनाये हुए लकड़ी के शिकंजे में जकड़ दिये गये और लेकिन हम पढ़नेवालों को उन दर्दनाक पीड़ाओं की तस्वीर दिखाकर जिससे उनके रोंगटे खड़े हो जायें, तकलीफ नहीं पहुंचायेंगे। वे उन उजड्ड और वहशी ज़मानों की देन थीं जब आदमी खूनी फौजी कारनामों की ज़िंदगी गुज़ारता था, जो उसके दिल को पत्थर बना देते थे और उसमें कोई भी इन्सानी भावना नहीं रह जाती थी। कुछ लोगों ने जो इस ज़माने में अपवाद थे, इन भयानक सज़ाओं का विरोध किया लेकिन उसका कुछ नतीजा नहीं निकला। बादशाह ने, बहुत-से सूरमाओं ने जिनके दिलों और दिमाग में नयी जागृति की रोशनी थी, समझाया कि इतनी बेरहम सज़ाएं कज़ाकों की बदला लेने की भावना को सुलगा

दौड पडी। याकेल के चेहरे पर मुर्दनी छा गयी और ज्यो ही घुडसवार उसके पास से होकर गुजर गये उसने सहमकर पीछे देखा कि तारास कहा है. लेकिन तारास अब उसके पीछे नही खडा था। उसका कही नाम-निशान नही था।

१२

लेकिन तारास का नाम-निशान मिटा नही था। उक्राइन की सीमा पर एक लाख बीस हजार आदमियो की कज़ाक फौज आ पहुची। और इस बार यह कोई छोटा-सा जत्था या फौजी टुकडी नही थी जो लूट-मार के लिए या तातारो का पीछा करने मे इधर से उधर धावे मारती फिर रही हो। नहीं! पूरी कौम उठ खडी हुई थी क्योकि लोगो का सब्र का प्याला भर चुका था। अपने अधिकारो के रौंदे जाने का, अपने रीति-रिवाजो के घोर अपमान का, अपने बाप-दादा के धर्म और उसकी पवित्र परंपराओ के अपवित्र किये जाने का, अपने गिरजाओ के भ्रष्ट किये जाने का, विदेशी सामतो और अमीरो के दमन और अत्याचार का, पोप की गुटबदी का, ईसाई ज़मीन पर यहूदियो के अपमानजनक प्रभुत्व का – उन सब चीज़ो का बदला लेने के लिए पूरी कौम उठ खडी हुई थी जिनकी वजह से इतने दिनो से कज़ाको के दिलो मे घोर नफरत पनप रही थी और दिन-बदिन उनकी कटुता बढती जा रही थी। नौजवान लेकिन शेरदिल हेटमैन ओस्त्रानित्सा* उस अनगिनत कज़ाक फौज का सरदार था। गून्या** जो उसका पुराना और अनुभवी लडाई का साथी और सलाहकार था उसके साथ था। आठ कर्नल आठ रेजीमेटो की सरदारी कर रहे थे जिनमे से हरेक मे बारह हज़ार आदमी थे। दो प्रमुख येसऊल और एक सदर चोबदार हेटमैन के पीछे-पीछे घोडो पर चल रहे थे। प्रमुख ध्वजावाहक सबसे

* ओस्त्रानित्सा – पोलिस्तानी अमीरो की ताकत के खिलाफ लडाई मे एक कज़ाक सरदार। सन १६३८ मे उसे वार्सा मे मौत की सजा दी गयी। – स०

** गून्या – १६३८ की लडाई के समय ओस्त्रानित्सा का मदद-गार। – स०

नही छुएगा, पुरानी दुश्मनी को भुला देगा और कज़ाक सूरमाओ को कोई हानि नही पहुचायेगा। सिर्फ एक ही कर्नल ऐसा था जो इस सुलह पर राजी नही हुआ। वह था तारास। उसने अपने सिर से अपने बालो का एक गुच्छा नोचा और चिल्लाया

"ऐ हेटमैन और कर्नलो! ऐसा औरतो जैसा काम मत करो। पोलिस्तानियो पर विश्वास न करो ये कुत्ते हमे जरूर दगा देगे!"

और जब एक रेजीमेंट के अरजी लिखनेवाले ने सुलह की शर्तें हेटमैन के सामने पेश की और उसने उन पर अपने हाथ से दस्तखत किये तो उस समय तारास ने अपनी अमूल्य तुर्की तेग को, जिसमे दमिश्क के फौलाद का फल लगा था, सरकडे की तरह तोड़कर दो टुकडे कर डाला और दोनो टुकडो को दो अलग दिशाओ मे दूर फेककर बोला

"अलविदा! जिस तरह ये दोनो आधे-आधे टुकडे मिलकर कभी एक नही बनेगे उसी तरह, साथियो, हम भी कभी इस दुनिया मे एक-दूसरे से नही मिलेगे। तुम लोग मेरी यह आखिरी बात याद रखना।" इस समय उसकी आवाज भारी और ऊची हो गयी। उसमे एक नयी ताकत की झलक पैदा हो गयी जो अब तक उसमे नही थी। सब लोग इन भविष्यसूचक शब्दो को सुनकर थर्रा गये। "मरते वक्त तुम लोग मुझे याद करोगे। तुम समझते हो कि तुमने शान्ति और चैन खरीद लिया? तुम समझते हो कि अब तुम्हारा राज चलेगा? बिल्कुल नही। दूसरे तुम्हारे ऊपर राज्य करेंगे। और तुम हेटमैन तुम्हारे सिर की खाल खिचवाकर उसमे कूडे का भूसा भर दिया जायेगा और बहुत दिनो तक सारे मेलो-ठेलो मे उसकी नुमाइश की जायेगी! और आप लोग भी अपने सिर बचा नही पायेगे। अगर आपको पहले ही भेडो की तरह देगो मे उबाला न गया तो आप सब सीली कालकोठरियो मे, पत्थर की दीवारो के पीछे पडे सडते रहेगे! और तुम भाइयो!" उसने अपने साथियो की तरफ मुडकर कहा, "तुम मे से कौन कौन स्वाभाविक मौत मरना चाहता है—अपने चूल्हो के पास पर या औरतो के बिस्तरो पर पडे-पडे कराहते और सिसकी भरते हुए नही या नशे मे धुत्त लाश की तरह किसी बाड के नीचे शराबखाने के पास नही

दुनेस्तर कोई छोटी-मोटी नदी नही है। उसकी बद घाटिया और पास-पास उगे सरकडे, और उसके गहरे गड्ढे और उथली जगहे अनगिनत हैं। उसकी आईने जैसी सतह जगमगाती रहती है, उसके ऊपर राजहंसो की आवाजें सुनायी देती हैं, उस पर गर्वीली दरियाई बत्तखें तेजी से बहती रहती हैं और लाल गर्दनवाली मुर्गाबिया और दूसरे पक्षी जो उसके सरकडो के अदर और उसके तटो पर छुपे रहते हैं अनगिनत हैं। कज़ाक लगातार तेजी से अपनी दोहरे पतवारोंवाली नावो को खेते रहे, वे सावधानी से उथली जगहो से बच-बचकर निकलते और पक्षियों को चौंकाते रहे और अपने आतामान के बारे में बातचीत करते रहे।

१

सेंट पीटर्सबर्ग मे २५ मार्च को एक अत्यंत असाधारण घटना हुई। वोज्नेसेंस्की एवेन्यू में रहनेवाला हज्जाम इवान याकोव्लेविच (उसका कुलनाम तो कहीं खो गया है और वह उसकी दुकान के साइनबोर्ड पर भी नहीं लिखा है जिसमे गालो पर साबुन का बहुत-सा झाग लगाये हुए एक सज्जन की तस्वीर बनी है और साथ ही यह सूचना भी लिखी हुई है "यहां फस्द भी खोली जाती है") तो हज्जाम इवान याकोव्लेविच एक दिन बहुत सवेरे उठा और उसकी नाक मे गरम-गरम रोटी की खुशबू आयी। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही उसने थोड़ा-सा सिर उठाकर देखा कि उसकी बीवी, जो निहायत शरीफ औरत थी और कॉफी की बेहद शौकीन थी, तंदूर में से ताजी सिकी हुई रोटियां निकाल रही थी।

"प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना, आज मैं कॉफी नहीं पिऊंगा," इवान याकोव्लेविच ने एलान किया, "उसके बजाय मैं प्याज के साथ एक गरम-गरम रोटी खाना चाहूंगा।"

(सच पूछिये तो इवान याकोव्लेविच पीना तो कॉफी भी चाहता था लेकिन वह जानता था कि दोनो चीजें एक साथ मांगना बेकार होगा, क्योंकि प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना इस तरह की सनक को बहुत नापसंद करती थी।) "खाने दो इस खूसट बेवकूफ को रोटी, मेरा क्या जाता है," उसकी बीवी ने सोचा "मुझे कॉफी का एक प्याला पीने को और मिल जायेगा।" और उसने एक रोटी मेज पर फेंक दी।

शिष्टता के नाते इवान याकोव्लेविच ने रात को पहनने की कमीज के ऊपर एक कोट डाल लिया, और मेज पर बैठकर कुछ नमक निकाला, दो प्याज छीले, एक छुरी ली और बेहद संजीदगी के साथ

अपनी रोटी को काटने लगा। रोटी को दो टुकडो मे काटकर उसकी नजर अंदर जो पडी तो उसमे कोई सफेद-सफेद चीज देखकर वह चकरा गया। बडी सावधानी से उसने उस चीज को छुरी से कुरेदा और उगली से दबाकर देखा। "ठोस मालूम होती है " उसने सोचा, "कमबख्त क्या चीज हो सकती है?"

उसने उगली गडाकर उसे खीचकर बाहर निकाला – एक नाक थी! यह देखते ही उसके हाथ नीचे भूल गये; फिर उसने अपनी आखे मली और उस चीज को टटोलकर देखा हा, नाक ही थी, इसमे कोई शक ही नही था! और ऊपर से तुर्रा यह कि जानी-पहचानी नाक लगती थी। इवान याकोव्लेविच के चेहरे पर दहशत की लहर दौड गयी। लेकिन उसकी शरीफ बीवी को जो गुस्सा आया उसके मुकाबले मे यह दहशत कुछ भी नही थी।

"यह नाक कहा काटी, कसाई?" वह गुस्से से लाल होकर चिल्लायी। बदमाश! शराबी! मैं जाकर पुलिस मे तेरी शिकायत करूगी। सरासर मुजरिमाना हरकत है! तीन आदमी मुझे पहले ही बता चुके है कि दाढी बनाते वक्त तू उनकी नाक को इतने जोर से खीचता है कि ताज्जुब ही है कि वे अपनी जगह कायम रहती हैं।"

लेकिन इवान याकोव्लेविच को तो साप सूघ गया था। उसने पहचान लिया था कि वह नाक किसी और की नही – कालिजिएट असेसर कोवालेव की थी, जिसकी दाढी वह हर बुधवार और इतवार को बनाता था।

"सुनो तो, प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना! मैं इसे कपडे मे लपेटकर वहा एक कोने मे रखे देता हू वहा इसे कुछ देर रखा रहने दो, फिर मैं इसे ले जाऊगा।"

"खबरदार, जो अब कुछ कहा! तू समझता है कि मैं एक कटी हुई नाक अपने कमरे मे रहने दूगी? अहमक कही का! तुझे तो बस अपना उस्तुरा तेज करना आता है, और वह वक्त दूर नही है जब तू अपना काम भी ठीक से नही कर पायेगा, निकम्मा, बेवकूफ! बदमाश कही का! तू समझता है कि मैं पुलिस के सामने तेरी पैरवी करूगी? इस ख्याल मे भी न रहना, न किसी काम का न धाम का, काठ का उल्लू! ले जा इसे! ले जा! जहा तेरा जी चाहे, बस अब फिर कभी मुझे यह दिखायी न दे!"

पर उसे बहुत रोबदार शक्ल-सूरत के, गलमुच्छोवाले पुलिस के एक सुपरिटेडेट तिकोनी टोपी लगाये हुए और कमर मे तलवार लटकाये दिखायी दिये। वह ठिठककर रह गया, इतने मे पुलिस सुपरिटेडेट ने उसकी ओर अपनी उगली टेढी करके इशारा किया और कहा "इधर आओ, भले आदमी!"

ऐसी परिस्थितियो मे उचित आचरण क्या होना चाहिये, यह जानते हुए इवान याकोव्लेविच ने काफी दूर से ही अपनी टोपी उतार ली और उनकी ओर लपकता हुआ बोला

"सलाम, हुजूर!"

"नही, नही, मेरे दोस्त, यह 'हुजूर-वुजूर' छोडो, मुझे तो यह बताओ कि तुम वहा पुल पर क्या कर रहे थे, क्यो?"

"भगवान कसम, सरकार, मैं तो अपने एक गाहक के यहा जा रहा था; जाते-जाते मैंने सोचा कि देखू तो नदी कितनी तेज बह रही है।"

"झूठ बोलते हो! यह न समझना कि ऐसे बचकर निकल जाओगे। सच-सच बताओ, क्या बात है!"

"मैं हफ्ते मे दो बार, बल्कि तीन बार, हुजूर की दाढी बिना किसी चू-चपड के बना दिया करूगा," इवान याकोव्लेविच ने जवाब दिया।

"नही, मेरे दोस्त, इससे काम नही चलेगा। मेरी दाढी बनाने के लिए तीन हज्जाम पहले ही से लगे हुए हैं, और वे सभी इसे अपने लिए बडी इज्जत की बात समझते हैं। इस वक्त तो यह बताओ कि तुम वहा कर क्या रहे थे?"

इवान याकोव्लेविच का रग फक हो गया लेकिन यहा पहुचकर घटनाओ पर कुहरे का एक परदा-सा पड गया है और हमे कुछ भी नही मालूम है कि इसके बाद क्या हुआ।

२

कालिजिएट असेसर कोवालेव काफी सवेरे उठा और साम बाहर छोडते हुए जोर की आवाज निकाली "ब्र-र्र-र्र-र्र!" जैसा कि वह जागने पर हमेशा करता था, हालाकि ऐसा करने की कोई वजह वह

पूरे दर्शन-भर बालरोंवाला एक लंबा-सा अर्दली खड़ा था, जो नसवार की डिबिया खोल रहा था।

कोवालेव खिसककर कुछ और नज़दीक आ गया, उसने अपनी कमीज़ का कैंब्रिक का कालर ऊपर उठाया, अपनी सोने की जंजीर में लगी हुई मुहरों को ठीक किया और दाहिने-बायें मुस्कराहट बिखरते हुए अपना ध्यान उस कोमलांगी महिला की ओर मोड़ा, जो कुमुदिनी जैसे सफ़ेद अपने हाथ की लगभग पारदर्शी उंगलियों को अपने माथे की ओर उठाते हुए बसंत के फूलों की तरह थोड़ा-सा आगे को झुक आयी थी। उसकी हैट के नीचे एक गोल मलाई जैसी ठोडी और उसके गाल के एक हिस्से की झलक देखकर, जिसपर वसंत के पहले गुलाब का रंग थोड़ा-सा छुआ दिया गया था, कोवालेव की बाछें खिल गयीं। लेकिन अचानक वह पीछे हट गया मानो किसी गरम-गरम चीज़ से जल गया हो। उसे याद आ गया कि जहां उसकी नाक होनी चाहिये थी वहां कुछ भी नहीं था, और उसकी आंखों में आंसू निकल आये। उन वर्दीधारी सज्जन को साफ़-साफ़ शब्दों में यह बता देने के लिए वह तेज़ी से मुड़ा कि वह स्टेट काउंसिलर होने का महज़ ढोंग कर रहे थे कि वह सरासर जालिये और बदमाश थे और यह कि वह खुद उसकी अपनी नाक से न कुछ ज़्यादा थे न कम लेकिन नाक महाशय जा चुके थे इस बीच वह वहां से खिसक गये थे, यक़ीनन किसी और से मिलने चले गये होंगे।

यह देखकर कोवालेव घोर निराशा में डूब गया। वह बाहर गया और एक मिनट के लिए बरामदे में खड़ा होकर इस उम्मीद से चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा कि शायद नाक कहीं दिखायी दे जाये। उसे बिल्कुल अच्छी तरह याद था कि वह पर लगी हुई हैट और सुनहरी कामदार वर्दी पहने थे, लेकिन उसने उनका वर्दी-कोट ध्यान से नहीं देखा था न ही उनकी घोड़ागाड़ी का रंग देखा था, न उनके घोड़ों का न ही यह बात कि उनके साथ कोई अर्दली था कि नहीं, और अगर था तो वह कैसी वर्दी पहने था। इसके अलावा, वहां इतनी बहुत-सी घोड़ागाड़ियां इतनी तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रही थीं कि वह उन्हें अलग-अलग पहचान भी नहीं सकता था और पहचानकर करता भी क्या, वह उन्हें रोक तो सकता नहीं था। शानदार धूप निकली

सबब पुलिस के साथ था, बल्कि इसलिए कि वह दूसरे अधिकारियों के मुकाबले काम ज्यादा जल्दी करवा देता था, उसी जगह, जहा नाक महाशय काम करने का दावा करते थे, अपनी शिकायत दूर कराने की कोशिश करना सरासर नासमझी की बात होगी। खुद नाक के अपने बयानो से जाहिर था कि यह जीव किसी भी चीज़ को खातिर मे नही लाता था और इस वक्त भी वह वैसे ही झूठ बोलेगा जैसे वह उस वक्त झूठ बोला था जब उसने दावा किया था कि उसने मेजर कोवालेव की कभी सूरत भी नही देखी थी। कोवालेव गाडीवाले को पुलिस सार्वजनिक व्यवस्था-मडल की ओर ले चलने का आदेश देने जा ही रहा था कि इतने मे एक दूसरा विचार उसके दिमाग मे आया, यानी यह कि यह बदमाश और दगाबाज, जो उनकी पहली ही मुलाकात मे इतनी चालबाज़ी से पेश आया था, कई शहर छोडकर नौ दो ग्यारह न हो गया हो। उस हालत मे उसे खोजने की तमाम कोशिशे या तो बिल्कुल ही बेकार साबित होगी, या फिर, भगवान न करे, पूरे महीने-भर चलती रहेगी। आखिरकार, जैसे उसे कोई दैवी प्रेरणा मिली। उसने सीधे अखबार के दफ्तर जाने और ब्योरे के साथ उसके सारे गुण बयान करते हुए जल्दी से जल्दी एक इश्तहार छपवाने का फैसला किया ताकि अगर कोई उसे देखे तो वापस लाकर उसके पास पहुचा दे, या कम से कम उसका अता-पता बता दे। इस फैसले पर पहुचकर उसने गाडी-वाले से सीधे अखबार के दफ्तर चलने को कहा, और सारे रास्ते चिल्लाते हुए उसकी पीठ पर घूसो की बौछार करता रहा "और तेज चल, बदमाश! और तेज, लुच्चे!" – "उफ, साहब!" गाडीवाले ने अपना सिर हिलाते हुए और कुत्ते जैसे झबरे बालोवाले घोडे की रास को झटका देते हुए गुर्राकर कहा। आखिरकार घोडागाडी रुकी और कोवालेव हापता हुआ भागकर छोटे-से स्वागत-कक्ष मे पहुचा जहा सफ़ेद बालोवाला एक क्लर्क चश्मा लगाये और पुराना टेल-कोट पहने एक मेज के सामने बैठा था और चिडिया के पर का अपना कलम होठो मे दबाये सिक्को का एक ढेर गिन रहा था जो उसके सामने लाकर रख दिये गये थे।

"यहा इश्तहार कौन लेता है?" कोवालेव ने चिल्लाकर पूछा। "अहा – सलाम!"

यो ही लोग कहते है कि अखबार दुनिया-भर की बक्वास और भूठी खबरे छापते रहते हैं।"

"लेकिन इसमे बकवास क्या है? बिल्कुल आईने की तरह साफ बात है।"

"ऐसा तो आपको लगता है। लेकिन पिछले हफ्ते का यह मामला ले लीजिये। जिस तरह आज आप आये हैं उसी तरह एक अफसर एक पर्चा लेकर आया था, जिसे छापने का खर्च दो रूबल तिहत्तर कोपेक आता था और इस इश्तहार मे सिर्फ इतनी बात कही गयी थी कि काले बालोवाला एक पूडल कुत्ता भाग गया है। देखने मे तो कोई ऐसी गैर-मामूली बात नही थी। लेकिन आखिर में इस बात पर मानहानि का मुकद्दमा चला, क्योकि वह पूडल कुत्ता किसी सस्था का खजाची था, सस्था का नाम तो मुझे याद नही रहा।"

"लेकिन मैं तो किसी पूडल कुत्ते के बारे मे इश्तहार नही छपवा रहा हू, यह तो मेरी अपनी नाक का मामला है, जो लगभग वैसी ही बात है कि यह खुद मेरा अपना मामला है।"

"माफ कीजियेगा, मैं इस तरह का इश्तहार नही छाप सकता।"

"मेरी नाक सचमुच खो गयी हो तब भी नही!"

"अगर ऐसी बात है तो यह डाक्टरो के लायक काम है। सुना है अब तो ऐसे लोग हैं जो आपके जिस तरह की नाक आप चाहे लगा सकते हैं। लेकिन, बहरहाल, मैं तो समझता हू कि आप खुशमिज़ाज आदमी हैं और आपको मज़ाक करने का शौक है।"

"मैं कसम खाकर कहता हू, अपनी जान की कसम खाकर! चूकि नौबत यहा तक पहुच गयी है, इसलिए मैं आपको दिखाये देता हू।"

"रहने दीजिये!" क्लर्क नाक मे नसवार चढाते हुए कहता रहा। "दरअसल, अगर आपको बहुत ज्यादा तकलीफ न हो," उसने जिज्ञासा से नज़र उठाकर कहा, "तो मैं देख ही लू।"

कालिजिएट असेसर कोवालेव ने अपने चेहरे पर से रूमाल हटा दिया।

"अरे, यह तो कमाल हो गया!" क्लर्क बोला। "यह जगह तो बिल्कुल चिकनी है, ताज़ी सिकी हुई चपाती की तरह। सच तो यह है कि कमाल की हद तक चिकनी है!"

यह कहकर क्लर्क ने अपनी नसवार की डिबिया कोवालेव के आगे बढ़ा दी और बड़ी होशियारी का सबूत देते हुए उसका ढक्कन उसके नीचे लगा दिया, जिस पर हैट पहने हुए एक महिला की तस्वीर बनी थी।

यह नादानी की हरकत कोवालेव की बर्दाश्त के बाहर थी।

"मेरी समझ मे नही आता कि आप इस तरह का मज़ाक कैसे कर सकते हैं," उसने ताव खाकर कहा। "आपको यह तो दिखायी ही दे रहा है कि मेरे पास नसवार का आनद लेने को कुछ भी नही रहा? भाड मे जाये आपकी नसवार! मैं इस चीज़ को देखना भी गवारा नही कर सकता, वह सबसे बढ़िया किस्म की ही क्यो न हो, इस सस्ते बेरेज़िन्स्की तबाकू के चूरे की तो बात ही छोडिये।"

इतना कहकर वह बेहद ताव मे अखबार के दफ्तर से बाहर निकल गया और सुपरिटेडेट पुलिस से मिलने के लिए चल पडा, जो शकर का बहुत शौकीन था। उसका सामनेवाला पूरा कमरा, जो उसका खाने का कमरा भी था, शकर के पिंडो की नुमाइश के काम आता था जो उसे दुकानदार अपनी दोस्ती की निशानी के तौर पर लाकर देते थे। इस वक्त सुपरिटेडेट की बावर्चिन उसके लबे जूते उतारने मे व्यस्त थी उसकी तलवार और दूसरा सारा फौजी ताम-झाम बडी शाति से कमरे के अलग-अलग कोनो मे लटका दिया गया था और उसका तीन साल का बेटा अपने बाप की डरावनी तिकोनी टोपी मे खेल रहा था, जबकि वह खुद दिन-भर लडाई मे जूझने के बाद अब शाति के सुख का आनद लेने को तैयार था।

कोवालेव को उसके सामने ठीक उस वक्त पेश किया गया जब ज़ोर की अगडाई लेकर और मज़े से गुर्राकर वह एलान कर रहा था "वाह! दो घटे डटकर सोने को मिल जाये तो मज़ा आ जाये!" इस तरह हम देखते हैं कि कालिज़िएट असेसर ने वहा पहुचने के लिए बहुत बुरा वक्त चुना था। और मुझे तो यह भी शक है कि अगर वह अपने साथ कुछ पौंड चाय और कपडे का थान भी लाया होता तब भी उसका स्वागत बडे तपाक से न किया गया होता। सुपरिटेडेट कला और वाणिज्य दोनो ही के सभी रूपो का बहुत बडा प्रशसक था, लेकिन सबसे ज़्यादा पसद उसे सरकारी बैंक के नोट थे। "यह चीज़ है जो मुझे पसद है," वह

सिर पर जोर की धप मारते हुए उसने चिल्लाकर कहा "तू हमेशा वाहियात बातों में वक्त बर्बाद करता रहता है. मुझसे कहीं का!"

इवान फौरन उछलकर खड़ा हो गया और लबादा उतारने में मदद देने के लिए भपटकर अपने मालिक की बगल में पहुंच गया।

अपने कमरे में पहुंचकर मेजर निढाल होकर उदास भाव से एक आराम-कुर्सी पर ढेर हो गया और कुछ आहें भरने के बाद आखिरकार बोला

"हे भगवान, मेरे भगवान! मैंने ऐसा क्या किया था जो मुझे यह सजा मिली? अगर मेरी बांह या टांग कट गयी होती तो कहीं अच्छा था, या मेरे कान ही कट गये होते – तकलीफ तो होती लेकिन कम से कम बर्दाश्त तो की जा सकती थी. लेकिन नाक के बिना तो आदमी कुछ रह ही नहीं जाता न इन्सान रह जाता है न जानवर बल्कि भगवान ही जाने क्या हो जाता है! बस वह किसी तरह का कूड़ा हो जाता है जिसे खिड़की के बाहर फेंक दिया जाये! और अगर लड़ाई में या किसी द्वंद्व-युद्ध में मैं उसे मुझसे छीन लिया जाता, या अगर अपनी किसी गल्ती की वजह से मैंने उसे खो दिया होता, तब भी कोई बात थी, लेकिन उसके गायब हो जाने की कोई वजह ही नहीं थी कोई तुक ही नहीं था, बस यों ही! लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता," उसने एक क्षण सोचने के बाद कहा। "नाक का इस तरह गायब हो जाना बिल्कुल अनहोनी बात है, कतई नामुमकिन है। या तो मैं सपना देख रहा हूं, या यह मेरा वहम है, शायद पानी के बजाय मैंने वह वोद्का पी ली होगी जो मैं दाढ़ी बनाने के बाद अपने चेहरे पर मलता हूं। उस बुद्धू इवान ने उसे हटाया नहीं होगा और मैंने उसे उठा लिया होगा।"

इस बात का पक्का यकीन कर लेने के लिए कि उसने पी नहीं रखी थी मेजर ने इतने जोर से अपने चुटकी काटी कि वह दर्द के मारे चिल्ला उठा। इस पीड़ा से उसे पूरा विश्वास हो गया कि वह पूरी तरह जागा हुआ था। वह चुपके से दबे पांव आईने के पास गया और आंखें सिकोड़कर उसने इस उम्मीद से देखा कि उसकी नाक अपनी जगह वापस आ गयी होगी; लेकिन आईने में अपनी [illegible] वह उछलकर पीछे हट गया और बेचैन [illegible] गस्पद दृश्य है!"

जगह पर लगाया, हर बार उसकी कोशिश बेकार रही।

उसने इवान को बुलाकर डाक्टर के पास भेजा, जो उसी मकान में सबसे नीचे की मंजिल पर सबसे बढ़िया फ्लैट किराये पर लेकर रहता था। यह डाक्टर देखने में बहुत प्रतिष्ठित आदमी था, जिसके शानदार गलमुच्छे बिल्कुल कोयले जैसे काले थे, और जिसकी बीवी बहुत सलोनी, फूल जैसी खूबसूरत थी, वह सवेरे ताजे सेब खाता था, रोज सुबह वह कम से कम पौने घंटे तक गरारे करता था और पांच अलग-अलग किस्म के ब्रशों से अपने दांत साफ करता था। डाक्टर फौरन आ पहुंचा। यह पूछने के बाद कि इस दुर्घटना को हुए कितना समय बीता था, उसने ठोड़ी पकड़कर मेजर कोवालेव का सिर ऊपर उठाया और अपना अंगूठा इतने ज़ोर से उसके चेहरे के उस हिस्से पर दबाया जहां पहले नाक हुआ करती थी कि मेजर तिलमिला उठा और उसका सिर जाकर दीवार से टकरा गया। डाक्टर ने कहा कि कोई ऐसी बात नहीं थी और उससे दीवार के पास से हट आने को कहा। इसके बाद उसने उससे अपना सिर पहले दाहिनी ओर झुकाने को कहा और उस जगह को टटोलने के बाद जहां नाक हुआ करती थी, बोला "हूं!" फिर उसने उससे अपना सिर बायीं ओर झुकाने को कहा और एक बार फिर "हूं!" कहकर अपना अंगूठा ज़ोर से गड़ाया, जिससे तिलमिलाकर मेजर कोवालेव अपना सिर उस घोड़े की तरह झटकने लगा जिसके दांतों की जांच की जा रही हो। इस जांच के बाद डाक्टर ने सिर हिलाकर कहा

"नहीं, यह काम नहीं हो सकता। बेहतर यही होगा कि उसे ऐसे ही रहने दीजिये, नहीं तो मामला और बिगड़ जायेगा। इसे बिठाया तो जा सकता है, और मैं यह काम अभी कर सकता हूं, लेकिन मैं यकीन दिलाता हूं कि आपके लिए वह और बुरा ही होगा।"

"यह भी अच्छी कही! और नाक के बिना मैं रहूंगा कैसे?" कोवालेव ने विरोध किया। "अब जो हालत है उससे बुरी तो हो नहीं सकती। भगवान ही जानता है कि यह क्या माजरा है! ऐसी शर्मनाक हालत में मैं कहां अपना मुंह दिखाऊं? मैं सबसे अच्छे किस्म के लोगों के बीच उठता-बैठता हूं, और आज ही रात को मुझे दो दावतों में जाना है। मेरे बहुत-से जाननेवाले हैं स्टेट काउंसिलर चेख्ता

प्रिय मादाम अलेक्सान्द्रा ग्रिगोर्येव्ना,

आपके आचरण की विचित्रता समझने मे मैं असमर्थ हू। आप यह जान लीजिये कि इस तरह की हरकतो से आपका कोई फ़ायदा नही होगा और आप किसी भी तरह मुझे इस बात के लिए मजबूर नही कर सकेंगी कि मैं आपकी बेटी से शादी कर लू। मेरी बात का विश्वास कीजिये, मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मेरी नाकवाला यह सारा मामला क्या है और मैं जानता हू कि इस पूरे मामले का कर्ता-धर्त्ता आपके अलावा कोई और नही है। उसका अचानक अपने उचित स्थान से अलग हो जाना, उसका भाग जाना और भेस बदल लेना, पहले एक सरकारी अफसर के रूप मे और फिर खुद अपने रूप मे, ये सारी बाते जादू-टोने की उन हरकतो के नतीजो के अलावा कुछ भी नही हैं, जो खुद आपने या ऐसी ही कलाओं का अभ्यास करनेवाले दूसरे लोगो ने की हैं। जहा तक मेरा सवाल है, मैं आपको यह चेतावनी दे देना अपने लिए जरूरी समझता हू कि अगर मेरी वह नाक, जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, आज अपने उचित स्थान पर वापस न आ गयी तो मैं कानून का संरक्षण प्राप्त करने और उसकी शरण लेने पर मजबूर हो जाऊगा।

तदपि आपके प्रति हार्दिकतम सम्मान की भावना रखते हुए, मैं हू आपका तुच्छ सेवक

प्लातोन कोवालेव"।

हर प्रकार की असाधारण घटनाओं पर सहज ही विश्वास कर लेने को तैयार रहते थे इससे कुछ समय पहले सारे शहर पर चुम्बन के बारे मे प्रयोग करने का भूत सवार था। इसके अलावा हाल ही मे कोन्यूशेन्नी स्ट्रीट में नाचनेवाली कुर्सियो के बारे में एक किस्से की घर-घर चर्चा थी; इसलिए इसमे कोई ताज्जुब की बात नही थी कि जल्दी ही यह अफवाह फैल गयी कि कालिजिएट असेसर कोवालेव की नाक रोज ठीक तीन बजे नेव्स्की एवेन्यू पर टहलने निकलती है। रोज उत्सुक तमाशबीनो की बहुत बड़ी भीड वहा जमा होने लगी। किसी ने कहा कि नाक जुकर की दुकान में देखी गयी थी और दुकान के चारो ओर ऐसी जबर्दस्त भीड जमा हो गयी कि पुलिस बुलवानी पडी। एक सूझ-बूझवाले आदमी ने, जिसकी सूरत-शक्ल मे शरीफोवाली हर बात थी, यहा तक कि उसने गलमुच्छे भी रख छोडे थे, और जो थियेटर के फाटक पर तरह-तरह की सूखी मिठाइया बेचता था, खास तौर पर कुछ बहुत बढिया लकडी की मजबूत बेंचे बनवा ली जिन पर वह पब्लिक के उत्सुक सदस्यो को अस्सी कोपेक मे खडे होकर तमाशा देखने के लिए जगह देता था। एक बहुत बा इज्जत कर्नल साहब अपने घर से खास तौर पर बहुत सवेरे निकले और बड़ी मुश्किल से भीड को चीरते हुए वहा जा पहुचे, लेकिन उनको बहुत झुंझलाहट हुई जब उन्होंने देखा कि दुकान की खिड़की मे नाक नहीं बल्कि एक मामूली ऊनी जर्सी सजी हुई थी और एक तस्वीर लगी थी जिसमें एक लडकी को अपना लबा मोजा ठीक करते हुए दिखाया गया था और उसे पेड के पीछे से एक छैला देख रहा था, जो बाकी वास्कट पहने था और जिसकी ठोडी पर छोटी-सी दाढी थी – यह तस्वीर उसी जगह दस साल से ज्यादा से टगी हुई थी। वह वहा से भन्नाकर चले आये और नाराज होकर बोले "आखिर लोगो को इस तरह की मूर्खतापूर्ण और बेबुनियाद अफवाहे फैलाने की इजाजत ही क्यो दी जाती है?"

बात है, गलत बात है! और फिर, यह नाक ताज़ी सिकी हुई रोटी मे कैसे पहुंच गयी, और पहली बात तो यह कि इसकी क्या वजह है कि इवान याकोव्लेविच ने   नही, यह बात मेरी समझ मे नही आती, रत्ती-भर समझ मे नही आती! लेकिन इससे भी अजीब बात यह है, जिसे समझना सबसे ज्यादा मुश्किल है, कि लेखक इस तरह की घटनाओ को अपना विषय बनाये ही क्यो। मैं यह मानने पर मजबूर हू कि यह बात मेरी समझ मे बिल्कुल नही आती, मैं बिल्कुल   नही, यह बात मेरी समझ मे ही नही आती। पहली बात तो यह कि इससे कौम को कोई भी फायदा नही होता, दूसरे   नही, दूसरे भी इससे कोई फायदा नही होता। मेरी समझ मे ही नही आता कि इसका मतलब क्या है .

मगर फिर भी, हर बात पर सोच-विचार कर लेने के बाद, हम शायद थोडा-बहुत, जहा-तहा कुछ फुटकर बाते मान लेने को तैयार हो जायें, और शायद यह भी   मेरा मतलब है, हर वक्त अजीब-अजीब बाते होती रहती हैं, होती रहती हैं न? और अगर आप सोचने पर आये तो आपको मानना पडेगा, कि इस सबमे भी कोई बात है जरूर, है न? आप कुछ भी कहे, लेकिन ऐसी घटनाए होती हैं, कभी-कभार ही सही, लेकिन होती जरूर हैं।

यह देखकर कि मौके का पूरा फायदा उठाने के लिए दुकानदार ने तस्वीरो को एक साथ बाधवाना भी शुरू कर दिया था, चित्रकार ने हडबडाकर कहा· "रुकिये तो, बडे मिया, ऐसी जल्दी न कीजिये।" उसे कुछ खिसियाहट हो रही थी कि दुकान मे इतना वक्त खर्च करने के बाद भी उसने कुछ नही खरीदा था, इसलिए उसने कहा

"जरा ठहर जाइये, मैं देख लू कि इसमे शायद मेरी पसद की कोई चीज हो," और यह कहकर वह झुका और उसने फर्श पर से कुछ टूटी-फूटी, गर्द से अटी पुरानी तस्वीरे उठा ली जिन्हे स्पष्टत दो कौडी का समझकर एक जगह ढेर कर दिया गया था। उनमे कुछ पुराने पारिवारिक चित्र थे, जिनके वशजो का शायद अब इस दुनिया मे कही नाम-निशान भी बाकी नही रह गया था, कुछ ऐसी तस्वीरे थी जो बिल्कुल काली पड चुकी थी और जिनके कैनवस फट चुके थे, कुछ फ्रेम ऐसे थे जिनकी सुनहरी पालिश बिल्कुल उतर चुकी थी, मतलब यह कि पुराने कचरे का एक ढेर था। लेकिन चित्रकार उन्हे उलट-पुलटकर देखते हुए सोचने लगा "शायद इसमे कोई काम की चीज मिल जाये।" उसने ऐसे लोगो के कितने ही किस्से सुन रखे थे जिन्हे कबाडी की दुकान के कचरा माल मे पुराने चोटी के चित्रकारो की अमर कलाकृतिया मिल गयी थी।

दुकानदार ने जब यह देखा कि उसने किधर अपना ध्यान मोडा है, तो उसे उसमे कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी और वह फिर बडे रोब से आकर दरवाजे के पास अपनी जगह बैठ गया जहा से वह गाहको को घेरता था और उन्हे पुकारकर अपनी दुकान मे बुलाता था

"इधर आइये, मेहरबान, आकर इन तस्वीरो को देखिये तो! आइये तो, बिल्कुल अभी ईजिल पर से उतरकर आयी हैं।" इसी तरह बेकार चिल्लाते-चिल्लाते और सामने अपनी दुकान के दरवाजे मे खडे हुए कबाडी से बाते करते-करते जब वह थक गया, तब आखिरकार उसे याद आया कि उसकी दुकान मे एक गाहक भी है, और दुकान के सामने से गुजरती हुई दुनिया की तरफ पीठ करके वह अदर चला गया। "तो, जनाब, मिली कोई चीज?" लेकिन चित्रकार कुछ देर से किसी आदमी की बडी-सी तस्वीर के सामने बुत बना खडा था जिसका फ्रेम किसी जमाने में बहुत शानदार रहा होगा लेकिन अब

है? रुकिये तो, साहब, इधर तो आइये! दस कोपेक और दे दीजिये तो तस्वीर आपकी। अच्छी बात है, बीस मे ही ले जाइये। बोहनी करता है, पहला गाहक खाली लौटाना नही चाहता।"

उसने मामला निबटाते हुए हाथ इस तरह हिलाया मानो वह रहा हो: "जरा सोचिये, बीस कोपेक मे तस्वीर दे दी!"

इस तरह चर्तकोव ने बिल्कुल कोई इरादा न रखते हुए पुरानी तस्वीर खरीद ली और ऐसा करते हुए मन ही मन सोचने लगा "मैंने इसे खरीदा क्यो? इसका मैं करूगा क्या?" लेकिन अब बच निकलने का कोई रास्ता नही था। उसने जेब से बीस कोपेक निकालकर दुकानदार को दिये और तस्वीर अपनी बगल मे दबाकर चल दिया। रास्ते मे उसे याद आया कि उसने जो बीस कोपेक चुकाये थे वे उसके आखिरी पैसे थे। अचानक उसके दिमाग पर धुधलका छा गया और पूर्ण उदासीनता के साथ मिली हुई भुभलाहट की लहर उसके सारे शरीर पर दौड गयी। "लानत है इस सडी हुई जिदगी पर!" उसने ऐसी घोर निराशा से कहा जिसका शिकार मुसीबत के दिन आने पर हर रूसी हो जाता है। और वह हर चीज से बेखबर लगभग मशीनी रफ्तार से तेज कदम बढाता हुआ चलता रहा। आधे आसमान पर अभी तक सूर्यास्त की लालिमा छायी हुई थी, जिन इमारतो का सामना इस दिशा मे था उन पर उसका हल्का-हल्का गर्म रग झलकता रहा और दूसरी तरफ चाद की ठडी नीली-नीली रोशनी की चमक बढती गयी। इमारतो और राहगीरो की शाम के वक्त की अर्ध-पारदर्शी परछाइया जमीन पर बिछी हुई थी। चित्रकार ने झिलमिलाती हुई कल्पनातीत रोशनी मे नहाये हुए आसमान को ध्यान से देखा और लगभग एक साथ ही कहा "कैसी सुदर आभा है!" और "कैसी भुभलाहट होती है कमबख्त इसको देखकर!" और तस्वीर को सभालते हुए जो बार-बार उसकी पकड से फिसली जा रही थी, उसने अपने कदम तेज़ कर दिये।

थककर चूर और पसीने मे नहाया हुआ वह किसी तरह गिरता-पड़ता वसीलेव्स्की द्वीप पर पद्रहवी लाइन मे पहुचा। हापते हुए वह गदी सीढियो पर चढा जिन पर मैला पानी चारो ओर फैला हुआ था और कुत्तो और बिल्लियो ने अपने नित्यकर्म से जहा-तहा उन्हे सजा रखा था। उसने दरवाज़ा खटखटाया तो कोई जवाब नही मिला,

मदद की है, मुझे कुछ न कुछ सिखाया है। लेकिन सचमुच वे किस काम की हैं? — वे सभी अभ्यास के लिए बनाये गये प्राथमिक चित्रों और रेखाचित्रों की शक्ल में हैं, और वे कभी पूरी नहीं होंगी। और मेरा नाम जाने बिना उन्हे खरीदेगा कौन? किसे जरूरत है मेरे आर्ट स्कूल के दिनो के अभ्यास-चित्रों की, या साइकी के प्रेम के अधूरे चित्र की, या मेरे कमरे की तस्वीरो की, या मेरे निकीता की तस्वीर की, हालाकि वह उन फैशनेबुल चित्रकारो की बनायी हुई तस्वीरो से कही अच्छी है? मैं परेशानी क्यो उठाऊ? मैं मुसीबत क्यो झेलू, स्कूली बच्चे की तरह क-ख-ग मे ही क्यो सिर खपाता रहू जबकि मैं उन्ही जैसा प्रतिभाशाली सफल चित्रकार बन सकता हू और पैसा कमा सकता हू?"

यह कहकर चित्रकार अचानक सिहर उठा और उसका रग पीला पड गया फर्श पर टिके हुए कैनवस मे से उसने एक विद्रूप सरसामी चेहरे को अपनी ओर घूरते देखा। दो डरावनी आखें उसे ऐसे देख रही थी जैसे उसे जिंदा ही खा जायेगी, उस चेहरे के होठ चुप रहने का भयावह आदेश व्यक्त कर रहे थे। डरकर उसने निकीता को पुकारना चाहा, जिसके कान के परदे फाड देनेवाले खर्राटे ड्योढी मे से सुनायी दे रहे थे, लेकिन अचानक वह रुक गया और हस पडा। उसकी डर की भावना तुरत गायब हो गयी। यह वही तस्वीर थी जो उसने अभी कुछ देर पहले खरीदी थी और जिसे वह तबसे भूल भी चुका था। कमरे मे छिटकी हुई चादनी की आभा मे उस तस्वीर मे सप्राणता का एक विचित्र भाव पैदा हो गया था। वह उसे ध्यान से देखने लगा और उसकी गर्द झाडने लगा। उसने स्पज का टुकडा पानी मे भिगोकर कई बार तस्वीर को पोछा, और उस पर जो गर्द और मैल की जो परत जम गयी थी उसे लगभग पूरी तरह साफ कर दिया, उसे अपने सामने दीवार पर टाग दिया और पहले से भी ज्यादा हैरत से उस सराहनीय कलाकृति को एकटक देखने लगा पूरे चेहरे मे जैसे जान पड गयी थी और उसकी आखे उसे ऐसी बेधती हुई नजरो से घूर रही थी कि वह आखिरकार सिहरकर पीछे हट गया और उसने चकित स्वर मे कहा "यह मुझे देख रही है, मुझे बिल्कुल इसानो जैसी आखो से रही है!" तब उसे लियोनार्दो द विंची की बनायी हुई एक तस्वीर का किस्सा याद आया जो उसने बहुत पहले अपने प्रोफेसर से सुना

और उसके बाद अनायास आने वाली और भी हर चीज अधिक सुगमता से और अधिक शांत भाव से प्रवाहित होती हुई लगती है, जबकि कोई दूसरा कलाकार उसी विषय को लेता है और उसे निकृष्ट तथा वीभत्स रूप में प्रस्तुत करता है, हालांकि वह पूरी तरह यथार्थनिष्ठ रहता है। लेकिन नहीं, वह उसमें कोई आन्तरिक आभा नहीं उत्पन्न कर पाता। वह बस एक बहुत अच्छे दृश्य के समान होता है: वह कितना ही भव्य क्यों न हो, फिर भी अगर सूरज न चमकता हो तो ऐसा लगता है कि उसमें किसी चीज का अभाव है।"

वह फिर से उन आश्चर्यजनक आंखों को ध्यान से देखने के लिए तस्वीर के पास गया और एक बार फिर उसे वही डरावना आभास हुआ कि वे उसे देख रही हैं। यह प्रकृति का कोई प्रतिरूप नहीं था, यह तो वह विचित्र, जानदार भाव था जो कब्र में से निकल आनेवाले मुर्दे के चेहरे पर देखने की उम्मीद की जा सकती है। शायद यह स्वप्न जैसी सरसामी हालत चांदनी की वजह से पैदा हो रही थी, जो हर चीज को अपनी मायावी ज्योति से नहलाये दे रही थी, और दिन की रोशनी में दिखायी देनेवाली आकृतियों को मिथ्या रूप प्रदान कर रही थी, या शायद यह कोई दूसरी ही चीज थी, लेकिन अचानक उसे कमरे में अकेले बैठते डर लगने लगा। वह चुपचाप तस्वीर के पास से चला आया, और एक तरफ मुड़कर उसकी ओर न देखने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसकी आंखें थीं कि बरबस उसी ओर मुड़ी जा रही थीं। नौबत यहां तक पहुंची कि उसे कमरे में चलते भी डर लगने लगा, उसे ऐसा लगा कि कोई उसके पीछे आ रहा है और वह डरा-डरा-सा सिर पीछे घुमाकर अपने कंधे के ऊपर से देखने लगा। वह डरपोक किस्म का आदमी नहीं था, लेकिन उसकी कल्पना और उसकी तंत्रिकाएं संवेदनशील थीं और उस रात इस अनायास भय का कारण खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह कोने में बैठा था, लेकिन सहसा उसे आभास हुआ कि कोई उसके कंधे पर झुककर उसका चेहरा देख रहा है। ड्योढ़ी में से आती हुई निकीता के खर्राटों की गूंज उसके इस भय को दूर न कर सकी। आखिरकार वह डरते-डरते उठा, इस बात का ध्यान रखकर कि वह अपनी नज़रें ऊपर न उठाये, परदे के पीछे गया और बिस्तर पर लेट गया। परदे की एक दरार में से उसे

एशियाई ढग का लिबास पहने हुए इस लबे कद के भयानक प्रेत को वह मुह बाये घूरता रहा और इतजार करता रहा कि देखे अब वह क्या करता है। बूढा उसकी पायती बैठ गया और अपने लबादे की सिलवटो के नीचे से कोई चीज निकालने लगा। वह एक थैला था। उसने थैले की डोरी खोली और उसके दोनों कोने पकडकर उसमे जो कुछ था उसे झटककर बाहर उलट दिया· कई लबे-लबे, भारी बेलन जैसे बडल थप-थप की आवाज करते हुए जमीन पर गिर पडे; हर बडल नीले कागज मे लिपटा हुआ था और उस पर लिखा हुआ था: १०,००० रूबल। चौडी-चौडी आस्तीनो मे से अपना लबा हड्डीला हाथ बाहर निकालकर बूढे ने बडलो पर लिपटा हुआ कागज खोलना शुरू किया और उनके अदर से सोने की चमक दिखायी दी। कलाकार अपनी अपार व्यथा और निःसज्ञ कर देनेवाले भय के बावजूद सोने के इन सिक्को की ओर से अपनी नजरे न हटा सका और जैसे-जैसे बडल खुलते गये वह मत्रमुग्ध होकर उनकी चमक को और बूढे के हड्डीले हाथो मे उनकी दबी-दबी खनक को सुनता रहा, और आखिरकार उन्हे फिर कागज मे लपेट दिया गया। उसी वक्त उसने देखा कि एक बडल फर्श पर लुढककर पलग के सिरहाने की ओर चला गया था। वह उन्मादियो की तरह उसकी ओर झपटा और घबराकर देखने लगा कि बूढे ने उसे देख तो नही लिया है। लेकिन बूढा अपने ही काम मे खोया हुआ लग रहा था। उसने अपने सारे बडल बटोरे, उन्हे थैले मे वापस रखा और कलाकार की ओर एक नजर भी देखे बिना परदे के पीछे गायब हो गया। उसके वापस लौटते हुए कदमो की चाप सुनकर चर्तकोव का दिल और भी जोर से धडकने लगा। उसने अपना बडल और भी कसकर पकड लिया वह सिर से पाव तक कापने लगा और अचानक उसने कदमो की चाप फिर परदे की ओर आती हुई सुनी। बूढे को शायद याद आया कि वह एक बडल भूल गया था। घोर निराशा मे डूबकर चित्रकार ने बडल अपनी सारी ताकत से दबोच लिया, आगे कदम आगे बढाने की कोशिश की चिल्लाया—और उसकी आख खुल गयी।

सारे बदन ठडा पसीना छूट रहा था उसका दिल जोर से धडक उसका सीना कसकर इतना सिकुड गया मानो उसकी अन्तिम

थी, उसी तरह चादर से ढकी हुई जैसा कि उसे होना चाहिये था – ठीक उसी हालत मे जैसा कि उसने उसे छोड़ा था। तो यह भी सपना था! लेकिन अब भी उसे अपनी भिंची हुई मुट्ठी मे कोई चीज होने का आभास हो रहा था। उसका दिल बेहद तेज़ी से धड़क रहा था, उसके सीने मे असह्य भारीपन था। वह दरार के पार चादर को एकटक देखता रहा। उसी वक्त उसने चादर को खिसकते हुए बिलकुल साफ़ देखा, जैसे उसके नीचे से किसी के हाथ उसे उतार फेंकने की कोशिश कर रहे हो। "हे भगवान, यह क्या हो रहा है!" वह घबराकर चिल्लाया, आतंकित होकर उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया और जाग पड़ा।

यह भी सपना था! वह उछलकर बिस्तर से नीचे उतर आया, उसके होश-हवास पूरी तरह ठिकाने नही थे और वह समझ नही पा रहा था कि उसे आखिर हो क्या रहा है क्या उसने कोई बुरा सपना देखा था जिसका यह असर था, या कोई दैत्य था, बुखार की सरसामी हालत थी या जीवन की वास्तविकता? अपनी उद्विग्नता को शांत करने के लिए और खून की तूफ़ानी गर्दिश को धीमा करने के लिए उसने खिड़की के पास जाकर उसका पल्ला खोल दिया। हवा के ठंडे झोंके से उसके होश-हवास ठीक हुए। मकानो की छते और सफ़ेद दीवारे अभी तक चादनी मे नहायी हुई थी, हालाकि काले-काले बादलो के छोटे-छोटे टुकडे आसमान पर तेज़ी से दौड रहे थे। चारो ओर खामोशी छायी हुई थी। उसके कानो मे बस कभी-कभी दूर से किसी अनदेखी गली मे धीरे-धीरे चलती हुई घोडागाडी की खड़खड़ाहट की आवाज़ आ जाती थी, जिसका कोचवान अपनी सीट पर सो रहा होगा और उसका मरियल घोडा अपनी लद्धड चाल मे गाडी खीच रहा होगा और दोनो किसी भूली-भटकी सवारी के मिल जाने का इतजार कर रहे होगे। वह बडी देर तक खिडकी के बाहर सिर निकाले खडा खडा रहा। आनेवाले तडके की पहली दमक आसमान पर दिखायी देने लगी थी; आखिरकर धुधले-धुधले नीद ने उसे आ घेरा और यह महसूस करके उसने खिडकी बद की, वहा से चला आया और अपने बिस्तर पर लेटकर गहरी नीद सो गया।

जब वह सुबह बहुत देर से सोकर उठा तो उसे ऐसा लग रहा

वह किसी तरह इस दुःस्वप्न से आजाद नही हो पा रहा था, जैसे कोई बच्चा मिठाई की गठरी के सामने ललचाया हुआ बैठा हो और दूसरों को उसे खाते हुए लालसा से देख रहा हो। आखिरकार दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनकर वह चौंक पड़ा और फिर होश में आ गया। मकान-मालिक एक पुलिस सार्जेंट को साथ लिये हुए अदर आया, जिसकी सूरत देखना गरीब आदमी के लिए उससे भी ज्यादा नागवार होता है जितना कि अमीरों के लिए किसी फरियादी की सूरत देखना होता है। चर्तकोव जिस छोटे-से मकान में रहता था उसका मकान-मालिक उस किस्म के लोगो मे से था जो वसीलेव्स्की द्वीप की पद्रहवीं लाइन, पीटर्सबर्ग की तरफवाले हिस्से या कोलोम्ना जैसे किसी सुदूर कोने के मकान-मालिकों में अक्सर पाये जाते हैं—उस किस्म के लोग जो रूस मे बहुत आम हैं और जिनके चरित्र का वर्णन करना उतना ही मुश्किल है जितना घिसे हुए फ्राक-कोट के रग का। अपनी जवानी के दिनो मे यह मकान-मालिक एक बडबोला कप्तान था, जिसे कभी-कभी गैर-फौजी कामों पर भी लगा दिया जाता था, वह कोडे बरसाने मे बहुत उस्ताद था, बेहद कारगुजार, छैल-चिकनिया और निरा बुद्धू, लेकिन बुढापे मे इन सारे गुणों ने एक-दूसरे मे मिलकर चरित्र की एक धुधली अस्पष्टता का रूप धारण कर लिया था। अब उसकी बीवी मर चुकी थी, वह रिटायर हो चुका था, छैल-चिकनिया नहीं रह गया था, न ही बडबोला रह गया था और न ही जान पर खेल जानेवाला, उसे अब सिर्फ चाय पीने मे और चाय पीते हुए गप लडाने मे दिलचस्पी रह गयी थी, वह अपने कमरे मे टहल-टहलकर अपनी मोमबत्ती की भकभकाती हुई लौ काटकर ठीक करता रहता था, हर महीने के आखिर मे पाबदी के साथ किराया वसूल करने के लिए अपने किरायेदारो के यहा चक्कर लगाता था, अगर वह छत का मुआइना करने के लिए सडक पर निकलता था तो चाभी अपने हाथ में लिये रहता था; घर का दरवान जब भी सोने के लिए चुपके से अपनी कोठरी मे जाता वह उसे वहा से बार-बार खदेडकर बाहर निकाल लाता; दूसरे शब्दो मे, वह उस किस्म के पेशनयाफ्ता लोगो मे से था जिनके पास बेलगाम जवानी बिताने के बाद और अपनी जिंदगी इस तरह काट देने के बाद जैसे गाडी पर बैठकर किसी ऊबड-खाबड

जो इसके रंग पीसता है। सोचने की बात है कि उस सुअर की तस्वीर बनायी जाये – मैं उसके ऐसे कान ऐंठूंगा कि याद करेगा उसने मेरी तमाम चटखनियों की कीलें उखाड़ डाली हैं, चोर कहीं का। जरा देखिये तो इन तस्वीरों को यह इसने अपने कमरे की तस्वीर बनायी है। अगर कोई साफ-सुथरा ढंग का कमरा होता तब भी ठीक था, लेकिन इसने तो जिस हालत में कमरा था उसी की तस्वीर बना दी, चारो तरफ कूड़ा-करकट और गन्दगी फैली हुई। जरा देखिये तो इसने मेरे कमरे की क्या दुर्गत की है, आप खुद ही देख लीजिये। और मेरे कुछ किरायेदार सात-सात साल से यहां रह रहे हैं, शरीफ किरायेदार, कर्नल आन्ना पेत्रोव्ना बुखमिस्तेरोवा नहीं, मैं आपको साफ बता दूं किसी कलाकार को किरायेदार रखने से बुरी तो कोई बात हो ही नहीं सकती वह अपने कमरे को बिल्कुल सुअरों का बाड़ा बना देता है, ऐसे लोगों से तो भगवान ही बचाये।"

इस दौरान बेचारे चित्रकार को चुपचाप खड़े रहकर यह सब कुछ सुनना पड़ रहा था। मार्जेंट ने तस्वीरों और अभ्यास के लिए बनाये गये खाकों को ध्यान से देखना शुरू किया, और ऐसा करते हुए उसने इस बात का परिचय दिया कि उसका दिमाग मकान-मालिक से कहीं अधिक सजग था और कलात्मक प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता से सर्वथा वंचित नहीं था।

"अ-हा," उसने एक तस्वीर को, जिसमें एक नंगी औरत को दिखाया गया था, उंगली से कोंचते हुए कहा, "यह है ज़रा . क्या कहा जाये? मज़ेदार चीज़। लेकिन उस तस्वीर में नाक के नीचे काला धब्बा-सा क्यों है, नसवार गिर पड़ी है या और कुछ है?"

"वह परछाइं है," चर्तकोव ने उसकी ओर देखे बिना रुखाई से जवाब दिया।

"ख़ैर, लेकिन मेरी राय में तो उसे ठीक नाक के नीचे लगाने के बजाय कहीं और लगाना चाहिये था – आंख में खटकता है," मार्जेंट ने कहा, "और यह किसकी तस्वीर है?" वह बूढ़े की तस्वीर के न आकर कहता रहा। "कैसा बदसूरत चेहरा है। क्या वह ज़िंदगी भी ऐसा ही बदसूरत था? देखो तो, देखता कैसे है – डर के मारे . ही निकल जाये! है किसकी तस्वीर?"

खिडकियां, बदहवासी मे उसने अपने लिए बिना कमानी का चश्मा खरीद लिया, और उतनी ही बदहवासी मे उसने ढेरो रेशमी गुलूबंद खरीद लिये, अपनी जरूरत से कही ज्यादा, सैलून मे जाकर अपने बाल घुघराले कराये, किसी वजह के बिना ही गाडी पर बैठकर शहर के दो चक्कर लगाये, पेस्ट्री की दुकान मे जाकर इतनी मिठाइयां छककर खायी कि जी मतलाने लगा और एक फ़ामीसी रेस्तरा में गया जिसके बारे मे उसने उडती-उडती अफवाहे ही सुन रखी थी, और जिससे उसका उतना ही दूर का सबध था जितना चीन से। उसके सिर में शराब पीने की वजह से कुछ धमक होने लगी और जब वह अकडता हुआ बाहर सडक पर निकला तो ऐसा महसूस कर रहा था कि अगर शैतान भी मुकाबले पर आ जाये तो उससे भी वह निबट लेगा। बिना कमानीवाले अपने चश्मे से हर ऐरे-गैरे को घूरता हुआ वह सड़क की पटरी पर ऐडता हुआ चला जा रहा था। पुल पर उसे अपना पुराना प्रोफ़ेसर दिखायी दिया और वह बडी चालाकी से उनसे कतराकर निकल आया, प्रोफ़ेसर साहब पुल पर हक्का-बक्का खडे रह गया और उनका चेहरा विकृत होकर सवालिया निशान की शक्ल का हो गया।

उसने अपनी सारी चीजे – ईजिल, कैनवस, तस्वीरे – उसी दिन शाम को अपने नये शानदार फ्लैट मे पहुचा दी। अपनी सबसे अच्छी तस्वीरे उसने प्रमुख स्थानो मे लगा दी, जो बुरी थी उन्हे एक कोने मे झोंक दिया और फिर अपने शानदार कमरो मे टहलने लगा, उसकी नजरे बार-बार आईनो की ओर मुड जाती थी। उसके हृदय में यह अदम्य इच्छा उमडी आ रही थी कि उसी क्षण ख्याति की गर्दन पकड़कर सारी दुनिया के सामने आ जाये! उसे अभी से यह शोर सुनायी देने लगा था "चर्तकोव, चर्तकोव! तुमने चर्तकोव की तस्वीर देखी? क्या नजाकत है इस चर्तकोव के ब्रश मे भी! कैसा जबर्दस्त कमाल का हुनर है!" वह बहुत उद्विग्न होकर अपने कमरे मे टहलता रहा उसके दिमाग मे इस तरह के विचारो का बवडर उठता रहा। अगले दिन सोन के दस सिक्के लेकर वह एक लोकप्रिय अखबार के प्रकाशक के पास उसकी मदद लेने गया, पत्रकार ने बडे तपाक से उसका स्वागत किया, फौरन उसे "अजीजे-आली" कहकर सबोधित किया, अपने हाथों मे चर्तकोव के दोनो हाथ थामकर हाथ मिलाया, मिजाज के

है कि तुम्हारे पास लोगो का ताता बधा रहे, वे ढेरो पैसा लाकर तुम पर लुटाये, हालाकि हमारे कुछ साथी पत्रकार इसके खिलाफ है, और यही तुम्हारा पुरस्कार हो।"

हमारे चित्रकार ने मन ही मन सतोष अनुभव करते हुए यह लेख पढा ; उसका चेहरा सचमुच खिल उठा। उसकी ख्याति अखबारो तक पहुच गयी थी यह उसके लिए एक महान अवसर था ; उसने उन पक्तियो को बार-बार पढा। वान डाइक और टिशियन से अपनी तुलना की बात उसे विशेष रूप से सतोषप्रद लगी। "ज़िंदाबाद, अद्रेई पेत्रोविच!" के नारे से भी वह बहुत खुश हुआ , छपे हुए अक्षरो मे कोई उसका पहला नाम और बाप का नाम लेकर उसे सबोधित करे, यह उसके लिए ऐसा सम्मान था जिसकी उसने कभी आशा भी नही की थी। वह तेज़-तेज़ कदमो से अपने कमरे मे टहलने लगा और अपने बालो को उलझाता रहा , कभी आराम-कुर्सी पर बैठ जाता, और फिर कभी उछलकर खडा हो जाता और जाकर सोफे पर बैठ जाता और कल्पना करने लगता कि वह किस तरह अपने यहा आनेवाले सज्जनो और महिलाओ का स्वागत करेगा , वह चलकर अपनी बनायी हुई तस्वीर के पास जाता और ब्रश को तेज़ी से घुमाता ताकि उसके हाथ की गति मे शालीनता आ जाये। अगले दिन उसके दरवाज़े की घटी बजी। उसने भागकर दरवाज़ा खोला ; एक महिला अदर आयी। उनके आगे-आगे फर का कॉलर लगी हुई वर्दी पहने एक अर्दली था और उन महिला के साथ एक १८ साल की लड़की थी, जो उनकी बेटी थी।

"श्रीमान चर्तकोव ?" महिला ने पूछा।

जवाब मे कलाकार ने झुककर अभिवादन किया।

"आपके बारे मे इतना कुछ लिखा गया है , लोग कहते है कि आपकी तस्वीरे निष्कलक चित्रकला का चरमोत्कर्ष होती है।" यह कहकर उन्होने अपनी नाक पर बिना कमानी का चश्मा चढाया और दीवारो का मुआइना करने के लिए चल पडी—पर हुआ कुछ ऐसा कि दीवारो पर एक भी तस्वीर नही थी। "लेकिन आपकी तस्वीरे है कहा ?"

"अभी लायी जा रही है," चित्रकार ने कुछ सिटपिटाकर कहा,

बहुत दखल रखती थी और अपने बिना कमानी के चश्मे से इटली की सारी गैलरियां देख चुकी थी)। लेकिन, श्रीमान नॉल, वह बहुत ही लाजवाब चित्रकार है! कमाल का हुनर रखते है! मेरा तो ख्याल है कि उनके चेहरो मे जैसा भाव मिलता है वैसा टिशियन के यहा भी नही दिखायी देता। आप श्रीमान नॉल को नही जानते?"

"यह नॉल कौन साहब है?"

"श्रीमान नॉल। अरे, क्या हुनर पाया है। उन्होने इसकी तस्वीर बनायी थी जब यह बारह साल की थी। आप हमारे यहा जरूर आइयेगा। लीजा, श्रीमान को अपनी एल्बम तो दिखाओ। मैं आपको बता दू कि हम लोग यहा इसलिए आये हैं कि आप इसकी पोर्ट्रेट बनाना फौरन शुरू कर दे।"

"क्यो नही, बेशक, मैं शुरू करने को तैयार हू।"

और पलक झपकते वह ईजिल पास खीच लाया जिस पर चौखटे पर मढा हुआ कैनवस लगा था, अपनी रग की तख्ती उठायी और लडकी के बेरग चेहरे पर अपनी नजर जमायी। अगर वह मानव स्वभाव का पारखी होता तो उसने उस लडकी के चेहरे के हाव-भाव से एक क्षण मे अदाजा लगा लिया होता कि उसके हृदय मे कमसिन लडकियो-वाली नाचने की उमग पैदा होने लगी थी, रात के खाने के समय तक और खाने के बाद की लबी अवधि के प्रति उकताहट और असतोष की भावना, नयी पोशाक पहनकर टहलने के लिए बाहर निकल जाने की इच्छा जागृत होने लगी थी, दिमाग और चेतनाओ को निखारने के लिए मा के जबर्दस्ती करने पर विभिन्न कलाओ की ओर जी न चाहते हुए भी ध्यान देने की गहरी छाप दिखायी देने लगी थी। लेकिन उस छोटे-से नाजुक चेहरे मे चित्रकार जो कुछ देख सका वह थी बस उसकी कलात्मक रहस्यमयी पारदर्शिता, जैसी बढिया चीनी के बर्तनो मे होती है, एक आकर्षक कोमल क्लाति, एक पतली-सी गोरी-गोरी गर्दन और अभिजात वर्ग की नजाकत। उसे अभी से अपनी विजय का पूर्वाभास होने लगा था, वह अपनी तूलिका की सुकोमलता और प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए कृतसकल्प था, जिसे अब तक अपनी अभिव्यक्ति के लिए केवल उसके मॉडलो के कठोर चेहरो, प्राचीनकाल की आकृतियो और क्लासिकी उत्कृष्ट कलाकारो की कृतियो की नकल का ही माध्यम मिल

"बस, बहुत हो गया, पहली बार के लिए इतना काफी है," महिला ने एलान किया।

"जरा-सी देर और," कलाकार ने अपने आपको भूलते हुए कहा।

"नहीं, अब रहने दो! सोचो, तीन बज गया है!" महिला ने अपनी पेटी में सोने की जंजीर में लटकी हुई छोटी-सी घड़ी हाथ में लेकर कहा और फिर अधीर होकर बोली "अरे, वक्त तो देखो!"

"बस, एक मिनट और," चर्तकोव ने सहज भाव से बच्चों जैसे विनीत स्वर में कहा।

ऐसा लग रहा था कि महिला इस बार उसकी कलाकारोंवाली भक को पूरा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी, लेकिन उन्होंने अगली बार उसे और ज्यादा समय देने का वादा किया।

"सचमुच, मुझे बहुत अफसोस हो रहा है," चर्तकोव ने सोचा, "हाथ में प्रवाह तो अब आया है।" और उसे याद आया कि जब वह वसीलेव्स्की द्वीप पर अपने स्टूडियो में काम करता था तब किसी ने कभी उसे टोका नहीं था और न ही बीच में उसका काम रोका था, निकीता एक ही मुद्रा में बिल्कुल निश्चल बैठा रहता था, जितनी देर चाहो उसकी तस्वीर बनाते रहो, उसे जिस मुद्रा में बिठा दिया जाता था उसी में वह सो भी जाया करता था। झुंझलाकर उसने अपना ब्रश और रंगों की तख्ती कुर्सी पर रख दी और उदास भाव से कैनवस के सामने खड़ा रहा। जब उन भद्र महिला ने उसकी प्रशंसा में कुछ शब्द कहे तब जाकर उसका ध्यान भंग हुआ। उन्हें रास्ता दिखाने के लिए वह दरवाजे की ओर झपटा, और सीढ़ियों पर पहुंचने पर उसे अगले हफ्ते किसी दिन उनके यहां खाना खाने के लिए आने का निमंत्रण मिला। वह अपने आपसे बहुत खुश होकर कमरे में वापस आया। इन भद्र महिला ने उसे बिल्कुल मंत्रमुग्ध कर लिया था। अब तक वह इस तरह की हस्तियों को अपनी परिधि के बाहर समझता था, जिन्हें सिर्फ इसलिए पैदा किया जाता था कि वे वर्दी पहने हुए अर्दलियों और भड़कीले कोचवानों के साथ शानदार गाड़ियों में घूमती फिरें और अपना फटीचर ओवरकोट पहने सड़क पर पैदल जाते हुए अभागे राहगीरों पर उचटती हुई नजरें डालती रहें। और अब इसी तरह की एक हस्ती उसके अपने कमरे में आयी थी,

बहुत अच्छा असर पैदा होता है, चेहरे का स्वाभाविक और आकर्षक रूप उभर आता है। लेकिन उसे बताया गया कि उनमें न तो कोई रूप उभरता है और न ही कुल मिलाकर कोई अच्छा असर पैदा होता है, और यह कि ये सारी बातें बस उसकी कल्पना की उपज थी। "बस मुझे एक जगह पीले रंग का एक हल्का-सा हाथ मार लेने दीजिये। मैं आपके हाथ जोड़ता हूं," चित्रकार ने भोलेपन से कहा। लेकिन उसे उसकी भी इजाजत नहीं दी गयी। सूचना दी गयी कि उस दिन लीज़ा कुछ उखड़ी-उखड़ी हुई थी और उसके चेहरे की रंगत में कभी कोई पीलापन नहीं रहा था, बल्कि इसके विपरीत उसके चेहरे में कमाल की ताजगी थी। उदास भाव से वह उन खूबियों पर रंग फेरने लगा जिन्हें कैनवस पर उतार लाने में उसके ब्रश को सफलता मिली थी। कई ऐसी बारीकियां जो मुश्किल से ही दिखायी देती थीं गायब हो गयीं और उनके साथ ही चित्र का सत्याभास भी बहुत कुछ जाता रहा। बेजान हाथों से वह तस्वीर पर वे घिसे-पिटे रंग लगाने लगा जिन्हें कोई भी चित्रकार आंखें मूंदकर लगा सकता है, और जो जीती-जागती आकृतियों को भी बेजान और नीरस बना देते हैं, जैसा कि चित्रकला की पाठ्य-पुस्तकों में देखने को मिलता है। लेकिन महिला बहुत संतुष्ट थी कि आंखों में खटकनेवाले वे रंग मिटा दिये गये थे, और उन्होंने बस इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि तस्वीर पूरी करने में इतना ज्यादा वक्त लग रहा था, और साथ ही यह भी जोड़ दिया कि उन्होंने तो सुन रखा था कि वह दो बैठकों में तस्वीर पूरी कर सकता था। चित्रकार से इसका कोई जवाब देते न बन पड़ा। महिलाएं उठकर चल देने को तैयार हुईं। उसने अपना ब्रश रख दिया, उनके साथ दरवाजे तक गया और उनके चले जाने के बाद बड़ी देर तक अपनी बनायी हुई तस्वीर के सामने निश्चल खड़ा उदास भाव से उसे घूरता रहा; वह स्तंभित रह गया था, उसे उस चेहरे की वे नारी-सुलभ विशेषताएं, रंगों की वे कोमल आभाएं और उनके वे अलौकिक उतार-चढ़ाव याद आ रहे थे जिन्हें वह चित्र में उतार लाने में सफल हो गया था और जिन्हें उसे बड़ी बेरहमी से नष्ट कर देना पड़ा था। इस तरह के विचारों में डूबकर उसने तस्वीर को एक तरफ हटा दिया और साइकी का वह रेखाचित्र ढूंढ निकाला जो उसने बहुत पहले बनाया था। चेहरा बड़ी

चर्तकोव हर दृष्टि से फैशनेबुल चित्रकार बन गया। वह बाहर दावतो मे जाने लगा, महिलाओ के साथ गैलरियो मे और टहलने के लिए भी जाने लगा, भडकीले कपडे पहनने लगा और ऊचे स्वर मे आग्रह करने लगा कि कलाकार को सभ्य समाज का अग होना चाहिये, उसे अपनी ख्याति बनाये रखना चाहिये, कि आम कलाकार मोचियो जैसे कपडे पहनते हैं, उन्हे शिष्ट आचरण नही आता, वे रख-रखाव नही जानते और उन्हे कोई शिक्षा तो बिल्कुल मिलती ही नही। उसने अपने घर और स्टूडियो को साफ-सुथरा रखने का पक्का बदोबस्त कर लिया दो रोबदार अर्दली रख लिये, छैला किस्म के नौजवान छात्रो को शागिर्द बना लिया, दिन मे कई बार अपने कपडे बदलने लगा, अपने बाल घुघराले करवा लिये, मिलने आनेवालो की आवभगत करने का शिष्टाचार अच्छी तरह सीखना शुरू कर दिया, और अपनी बाहरी सज-धज को हर तरह से निखारने मे व्यस्त रहने लगा ताकि महिलाओ पर सबसे अच्छा असर पडे; दूसरे शब्दो मे, जल्दी ही उसे देखकर यह पहचानना भी असभव हो गया कि यह वही विनम्र कलाकार था जो किसी जमाने मे दुनिया की नजरो से ओझल रहकर वसीलेव्स्की द्वीप पर अपने छोटे-से फ़्लैट मे काम करता था। वह अब बेझिझक होकर कलाकारो और उनके काम के बारे मे अपनी राय देता था, उसका मत था कि पुराने उस्तादो को बहुत बढा-चढाकर आका गया है कि रफाएल से पहले वे आदमियो के शरीर नमक-लगी हेरिंग मछलियो जैसे बनाते थे, कि उनकी कृतियो के चारो ओर जो एक पवित्र प्रभा-मडल बना दिया गया है वह केवल सर्वसाधारण की कल्पना की उपज है, कि खुद रफाएल की सारी तस्वीरे इतनी अच्छी नही हैं और उनके कई चित्रो की लोकप्रियता का कारण केवल उनकी ख्याति का रोब है, कि माइकेल एजेलो बडबोला था, क्योकि वह शरीर-रचना के बारे मे अपनी जानकारी का दिखावा करना चाहता था और उसमे रत्ती-भर भी लालित्य नही था, और यह कि वास्तविक प्रतिभा, कलात्मक शक्ति और असली रग तो अब जाकर, इस शताब्दी मे, देखने को मिलते हैं। और मानो अनायास ही इन बातो का सिलसिला स्वय उसकी अपनी चर्चा पर आकर टूटता था।

"मेरी समझ मे यह नही आता," वह कहा करता था, "कि

चर्तकोव हर दृष्टि से फैशनेबुल चित्रकार बन गया। वह बाहर दावतों मे जाने लगा, महिलाओं के साथ गैलरियों मे और टहलने के लिए भी जाने लगा, भड़कीले कपड़े पहनने लगा और ऊंचे स्वर में आग्रह करने लगा कि कलाकार को सभ्य समाज का अंग होना चाहिये, उसे अपनी ख्याति बनाये रखना चाहिये, कि आम कलाकार मोचियों जैसे कपड़े पहनते है, उन्हें शिष्ट आचरण नही आता, वे रख-रखाव नही जानते और उन्हें कोई शिक्षा तो बिल्कुल मिलती ही नही। उसने अपने घर और स्टूडियो को साफ-सुथरा रखने का पक्का बदोबस्त कर लिया, दो रोबदार अर्दली रख लिये, छैला किस्म के नौजवान छात्रों को शागिर्द बना लिया, दिन मे कई बार अपने कपड़े बदलने लगा, अपने बाल घुघराले करवा लिये, मिलने आनेवालो की आवभगत करने का शिष्टाचार अच्छी तरह सीखना शुरू कर दिया, और अपनी बाहरी सज-धज को हर तरह से निखारने मे व्यस्त रहने लगा ताकि महिलाओं पर सबसे अच्छा असर पड़े, दूसरे शब्दो मे, जल्दी ही उसे देखकर यह पहचानना भी असभव हो गया कि यह वही विनम्र कलाकार था जो किसी जमाने मे दुनिया की नजरो से ओभल रहकर वसीलेव्स्की द्वीप पर अपने छोटे-से फ्लैट मे काम करता था। वह अब बेभिभक होकर कलाकारो और उनके काम के बारे मे अपनी राय देता था, उसका मत था कि पुराने उस्तादो को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर आका गया है, कि रफाएल से पहले वे आदमियो के शरीर नमक-लगी हेरिंग मछलियों जैसे बनाते थे, कि उनकी कृतियो के चारो ओर जो एक पवित्र प्रभा-मडल बना दिया गया है वह केवल सर्वसाधारण की कल्पना की उपज है, कि खुद रफाएल की सारी तस्वीरे इतनी अच्छी नही हैं और उनके कई चित्रों की लोकप्रियता का कारण केवल उनकी ख्याति का रोब है, कि माइकेल एजेलो बड़बोला था, क्योकि वह शरीर-रचना के बारे मे अपनी जानकारी का दिखावा करना चाहता था और उसमे रत्ती-भर भी लालित्य नही था, और यह कि वास्तविक प्रतिभा, कलात्मक शक्ति और असली रंग तो अब जाकर, इस शताब्दी मे, देखने को मिलते हैं। और मानो अनायास ही इन बातो का सिलसिला स्वय उसकी अपनी चर्चा पर आकर टूटता था।

"मेरी समझ मे यह नही आता," वह कहा करता था, "कि

था और बाकी काम अपने शागिर्दों पर छोड देता था। पहले तो वह नयी-नयी मुद्राए खोजने, कोई आकर्षक और सशक्त प्रभाव पैदा करने की कोशिश भी करता था, लेकिन अब वह इससे भी उकताने लगा था। उसका दिमाग़ नये-नये विचार सोचकर ढूढ निकालने की लगातार कोशिश से थक गया था। उसके पास न इतनी शक्ति रह गयी थी और न ही इतना वक्त था समाज के जिस भवर में वह फैशन की कसौटी पर खरे उतरनेवाले आदमी की भूमिका अदा करने की कोशिश कर रहा था वह उसे वहाकर काम और विचारो से अधिकाधिक दूर खीचे लिये जा रहा था। उसकी शैली बेजान और नीरस होती गयी, और वह जाने बिना ही घिसी-पिटी और सपाट आकृतियो मे सीमित होकर रह गया। सरकारी और फौजी अफसरो के कठोर और फीके चेहरे-मोहरो मे, जो हमेशा बहुत सजे-सवरे होते थे और, यो समझ लीजिये, तमगो मे कसे रहते थे, उसकी तूलिका को अपना चमत्कार दिखाने का बहुत मौका नही मिलता था उसकी तूलिका शानदार कपडो, आकर्षक मुद्राओ और भावावेशो को भूलने लगी, वर्ग की विशेषताओ, कलात्मक नाटकीयता और उसके उत्कृष्ट तनाव की तो बात ही जाने दीजिये। उसे अब सिर्फ किसी वर्दी, या किसी चोली, या किसी टेल-कोट से सरोकार रह गया था, जिन चीजो से कलाकार का दिमाग ठिठुरकर रह जाता है और उसकी कल्पना का दम घुट जाता है। अब उसकी तस्वीरो मे मामूली से मामूली खूबिया भी बाकी नही रह गयी थीं, लेकिन फिलहाल उनकी ख्याति बनी रही, हालांकि जो सच्चे पारखी और कलाकार थे वे उसकी नवीनतम कृतियो को देखकर बडे अर्थपूर्ण ढग से कधे बिचका देते थे। उनमे से कुछ तो, जो चर्तकोव को पुराने जमाने से जानते थे, यह नही समझ पाते थे कि उसने अपनी वह प्रतिभा कैसे खो दी थी जो उसके कलाकार जीवन के शुरू मे ही इतनी उभरकर सामने आयी थी, और वे व्यर्थ ही इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करते रहते थे कि कोई आदमी ठीक ऐसे समय अपना कोई गुण कैसे खो दे जब उसकी सारी क्षमताए अपने विकास के शिखर पर पहुच गयी हो।

लेकिन नशे मे चूर हमारा कलाकार इन आलोचनाओ को अनसुना करता रहा। वह शरीर और आत्मा दोनो ही की शिथिलता की अवस्था

उस नये चित्रकार की तूलिका की चमत्कारी शक्ति देखकर दंग रह गये थे। ऐसा लगता था कि उस चित्र में सभी कुछ था उदात्त मुद्राओं में प्रतिबिंबित रफाएल की प्रतिध्वनि, तूलिका की चमत्कारी दक्षता में कारेजियो की प्रतिध्वनि। लेकिन सबसे अधिक प्रभावित करता था चित्र मे वह सृजन-शक्ति जो कलाकार की आत्मा में शामिल थी। वह चित्र की छोटी-से छोटी ब्योरे की बातों में व्याप्त थी, और हर जगह संतुलन और आतरिक शक्ति दिखायी देती थी। चित्रकार ने रेखाओं का वह द्रवित होता हुआ प्रवाहमय सुडौलपन अपनी तूलिका के वश में कर लिया था जिसे प्रकृति में केवल सच्चे कलाकार की दृष्टि ही देख सकती है और जिसे घटिया चित्रकार नुकीला बना देता है। यह स्पष्ट था कि चित्रकार बाह्य जगत की जिस चीज को भी अंकित करता था उसे पहले वह अपनी आत्मा मे समो लेता था, जहा से वह सुमधुर और विजयोल्लास से ओत-प्रोत गीत की तरह ऐसे उमड़कर बाहर आती थी जैसे वह आत्मा के किसी जलस्रोत से फूटी पड़ रही हो। अनजान से अनजान आदमी को भी यह बात साफ दिखायी देती थी कि सच्ची कलात्मक कृति और प्रकृति के प्रतिरूप के चित्रण मात्र में कितना बड़ा अतर होता है। उस चित्र को मत्रमुग्ध होकर देखनेवालो पर एक अकथनीय स्तब्धता छायी हुई थी, जरा-सी भी कोई सरसराहट या कोई शब्द बोले जाने की आवाज नहीं सुनायी दे रही थी, और प्रति क्षण वह चित्र और भी ऊंचा उठता हुआ प्रतीत हो रहा था; ऐसा लग रहा था कि वह अपने आपको आस-पास की हर चीज से अलग किये ले रहा है और निरतर अधिक ज्योतिर्मय तथा उत्कृष्ट होता हुआ वह सहसा एक ऐसे क्षण के रूप मे परिवर्तित हो गया था, जो दिव्य प्रेरणा का फल था, उस क्षण के रूप मे जिसके लिए मनुष्य का सारा जीवन केवल एक तैयारी के समान होता है। दर्शकों ने महसूस किया कि उनकी आखो मे आसू छलकते आ रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता था कि सभी रुचिया, सुरुचियो के पथ से बिखरे हुए और गुमराह सभी भटकाव एक मे घुल-मिल गये थे और उन्होने इस दिव्य कलाकृति की वदना मे एक मूक स्तुति का रूप धारण कर लिया था। चर्तकोव मुह बाये चित्र के सामने मूर्तिवत खड़ा रहा, और अतत जब दूसरे दर्शकों और पारखियो ने धीरे-धीरे अपनी स्तब्धता से मुक्त

की चाराराओं से दूर रहकर सबसे अलग-थलग वर्नोनिक्सी द्वीप के अपने उस छोटे-से घर में इतनी शुद्ध लगन से, किसी से कोई फायदा उठाये बिना किसी जमाने में काम किया था। वह अब उनके पास गया और उनमें से हर एक को बड़े ध्यान से जांचने लगा, उसके पुराने दरिद्रतापूर्ण जीवन की झलकियां उसकी याद में उभरने लगीं। "हां " उसने घोर निराशा में डूबकर फैसला किया, "निश्चित रूप से मुझमें प्रतिभा थी। उसके चिह्न हर जगह दिखायी देते हैं. "

वहां खड़े-खड़े वह सिर से पांव तक सिहर उठा· उसकी आंखें दो और आंखों से मिलीं जो उसे एकटक घूर रही थीं। यह वही विचित्र तस्वीर थी जो उसने स्युनिन की दुकान से खरीदी थी। अब तक वह दूसरी तस्वीरों के पीछे ढकी हुई पड़ी थी और उसे उसकी बिल्कुल याद ही नहीं रह गयी थी। जब उसने अपने स्टूडियो में अटी हुई सारी फैशनेबुल तस्वीरों और पोर्ट्रेटों को हटाया था तो वह अब, मानो किसी योजना के अनुसार, उसकी जवानी की दूसरी कृतियों के साथ फिर निकल आयी थी। उसके विचित्र इतिहास को याद करके उसने महसूस किया कि एक तरह से यह विचित्र तस्वीर उसके अंदर होनेवाले इतने बड़े परिवर्तन का कारण थी, कि वह दौलत जो उसे इतने चमत्कारी ढंग से मिल गयी थी उसी ने उसको सारी बेकार की लालसाओं की दिशा में भटकाया था और इस प्रकार उसकी प्रतिभा को नष्ट कर दिया था; उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा में रोष भरता जा रहा है। उसने फौरन हुक्म दिया कि उस घृणित चित्र को तुरंत वहां से हटा दिया जाये। लेकिन इससे उसकी उद्विग्न आत्मा को कोई शांति नहीं मिली उसकी सारी भावनाएं और उसका सारा अस्तित्व जड़ तक हिल गया था, और उसने वह भयावह यातना अनुभव की जो कभी-कभी और असाधारण रूप से प्रकृति में उस समय अभिव्यक्त होती है जब कोई निम्न स्तर की प्रतिभा अपनी मर्यादा से आगे बढ़ने की कोशिश करती है और उसे अभिव्यक्ति नहीं मिल पाती, वह यातना एक नौजवान आदमी को तो महान उपलब्धियों की ओर ले जा है, लेकिन एक ऐसे आदमी में जो अपने स्वप्नों की अंतिम सीमाओं पहुंच गया हो वह केवल कभी न बुझ सकनेवाली प्यास ही बनकर जाती है, एक ऐसी असह्य पीड़ा जो मनुष्य में भयानक कुकृत्यों

बहुत दिन तक नहीं चलता रह सकता था उसके उन्माद का दौरान इतना विस्तार और असन्तुलित था कि उसकी क्षीण शक्ति उसका भार वहन नहीं कर सकती थी। उन्माद के दौरे ने भयानक रोग का रूप धारण कर लिया। वह तेज बुखार और तीव्र गति से बढ़नेवाले उस रोग के ऐसे भीषण प्रकोप से ग्रस्त हुआ कि तीन दिन तक इस हालत में रहने के बाद ही वह सूखकर बिल्कुल कांटा हो गया। इसके साथ ही असाध्य पागलपन के भी सारे चिन्ह दिखायी देने लगे। कभी-कभी तो ऐसा होता कि कई आदमी मिलकर भी उसे काबू में रखने में असमर्थ रहते थे। वह अपनी कल्पना की दृष्टि से उस विलक्षण चित्र की जीती-जागती आंखों को देखने लगा था जिन्हें वह न जाने कब का भूल चुका था और ऐसे क्षणों में उसका क्रोधोन्माद भयानक होता था। अपने पलग के चारों ओर खड़े हुए सारे लोग उसे भयानक तस्वीरों जैसे दिखायी देते थे। उसे उस चित्र के दो-दो, चार-चार प्रतिरूप दिखायी देने लगे थे ऐसा लगता था कि उसकी सभी दीवारों पर ऐसी तस्वीरें टगी हुई थी जिनकी जीती-जागती एक जगह पर जमी हुई आंखें उसे बेधती रहती थी। पैशाचिक चित्र उसे छत पर से, फर्श पर से घूरते रहते थे , कमरा खिंचकर और फैलकर अनत के छोर तक चला गया था , ताकि वे जमी हुई आंखें अधिक से अधिक सख्या में उसमें समा सकें। जिस डाक्टर ने उसका इलाज करने की ज़िम्मेदारी ली थी और जो उसके विचित्र जीवन-वृत्त से कुछ हद तक परिचित भी हो चुका था , उसने उसके मतिभ्रमों और उसके जीवन की घटनाओं के आधारभूत पारस्परिक सबध का पता लगाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन उसे कोई सफलता न मिल सकी। रोगी अपनी यातनाओं को छोड़कर न कुछ समझता था न महसूस करता था, और वह केवल भयानक चीखें मारता रहता था और बडबड करता रहता था जो किसी की समझ में नहीं आती थी। आखिरकार पीड़ा की एक अंतिम मूक लहर उठी और उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी। उसका शव भी देखने भयानक लगता था। उसकी अपार सपदा में से कुछ भी न मिल । , लेकिन जब लोगों ने उन महान कलाकृतियों के फटे हुए टुकड़े जिन्हें उसने करोड़ों की रकम लगाकर खरीदा था तब उनकी समझ आया कि इस धन-सपदा का कैसा भयानक दुरुपयोग किया गया था।

है और जिनके पास बारह और एक बजे के बीच करने को इससे बेहतर कोई काम नहीं होता; और फिर वहा तार-तार कपडो और खाली जेबोवाले वे शरीफ लोग भी थे जो धन के लाभ के किसी विचार की प्रेरणा के बिना ही रोज ऐसी जगहों पर पहुच जाते हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य यह देखना होता है कि आखिर मे क्या हुआ, किसने सबसे ज्यादा कीमत चुकायी, किसने सबसे कम चुकायी, किसने किससे बढकर बोली लगायी और किसे क्या मिला। बहुत-सी तस्वीरें इधर-उधर बिखरी पडी थी; उन्ही के बीच कुछ फर्नीचर की चीजे और ऐसी किताबे थी जिन पर उनके पिछले मालिकों के नामो की चिप्पिया चिपकी हुई थी, जिनके बारे मे यह सदेह किया जा सकता है कि उन्हे वह सराहनीय जिज्ञासा छू भी नही गयी थी जो उन्हे उन किताबो की विषय-वस्तु की जानकारी प्राप्त करने को प्रेरित करती। चीनी गुलदान, मेजो के लिए सगमरमर के पटरे, नयी और पुरानी कमान की तरह भुकी हुई टागोवाली मेज-कुर्सिया जिनके पाये सजावट के लिए उकाब, नरसिंहोवाली आकृतियो और शेर के पजो की शक्ल के बने थे, जिनमे से कुछ पर सुनहरी पालिश की हुई थी और कुछ पर नही, फानूस, तेल से जलनेवाले लैप—यह सब कुछ अस्त-व्यस्त ढेरो मे इधर-उधर पडा था और उनमे कोई उस प्रकार की व्यवस्था दिखायी नही देती थी जैसी कि दुकानो मे पायी जाती है। देखनेवालो को वहा कलाओ का एक गड्ड-मड्ड ढेर ही दिखायी देता था। आम तौर पर नीलामो को देखकर हमारे मन मे उदासी की भावनाए जागृत होती हैं वहा की हर चीज मे जनाजे की बू बसी होती है। जिन बडे-बडे कमरो मे ये नीलाम होते हैं उनमे हमेशा अधेरा रहता है, खिडकियो मे फर्नीचर और तस्वीरो का ढेर अटा रहने की वजह से उनमे बहुत ही थोडी रोशनी आती है, वहा लोगो के निस्तब्ध चेहरो और नीलाम करनेवाले की मातमी आवाज का विचित्र साक्षात होता है, जो हथौडी की चोट से बोली बद करके अभागी कलाकृतियों का मरसिया सुनाता है। इन सब बातों के मिलने से ऐसे अवसरो पर उत्पन्न होनेवाला भयावह वातावरण और भी भयावह हो उठता है।

ऐसा लग रहा था कि नीलाम पूरे ज़ोर पर था। बहुत-से प्रतिष्ठित लोग भुड बाधकर आगे बढ़ आये थे और उत्तेजित होकर बोली लगा

सुरमई रंग के होते हैं जब आसमान पर न तूफान के बादल होते हैं न सूरज होता है, बल्कि कोई ऐसी चीज होती है जिसे सही-सही बयान नही किया जा सकता' कुहरा-सा छा जाता है और हर चीज की रूपरेखा को धूमिल कर देता है। उन लोगो की सूची मे हम रिटायर्ड थियेटर चलानेवालो, रिटायर्ड टाइटुलर काउंसिलरो, बाहर को निकली पड़ रही आंखो और जख्म के निशान लगे हुए होठोवाले युद्ध के पुराने सूरमाओ को भी जोड सकते है। ये लोग बिल्कुल भावशून्य होते हैं चलते वक्त वे न किसी तरफ देखते है, न कुछ बोलते है, न सोचते। उनके कमरो मे आपको सामान के नाम पर ज्यादा कुछ नही मिलेगा, मुमकिन है वहा आपको एक बोतल खालिस रूसी वोद्का के अलावा कुछ भी न मिले, जिसे वे दिन-भर यंत्रवत् घूट-घूट करके पीते रहते है और उन्हे कभी यह महसूस नही होता कि खून उनके दिमाग को चढता जा रहा है, जिसका आनद नौजवान जर्मन दस्तकार लेते है जो उसकी अधिक तगडी खुराक लेना पसद करते हैं, और सो भी उस वक्त जब मेश्चान्स्काया स्ट्रीट के ये बडे आदमी इतवार की अपनी भरपूर शराबखोरी के बाद आधी रात के बाद सडक के किनारे की पटरियो पर अकेले चहलकदमी कर रहे होते हैं।

"कोलोम्ना की जिदगी मे बेहद अकेलापन है घोडागाडी तो वहा कभी-कभार ही दिखायी देती है, शायद कभी आपको कोई भूली-भटकी गाडी अभिनेताओ को ले जाती हुई और अपनी गडगडाहट और खटर-पटर से वहा की चारो ओर की शाति को भग करती हुई दिखायी पड जाये। यहा पैदल चलनेवालो का राज है, गाडीवाले वहा सिर्फ सवारियो के बिना अपने झबरीले घोडो के लिए घास ले जाते हुए दिखायी देते हैं। पाच रूबल महीने पर आपको पूरा फ्लैट किराये पर मिल सकता है, जिसमे सुबह की कॉफी भी शामिल हो सकती है। वहा जो विधवाए अपनी पेंशन पर रहती हैं वे उस समाज का सबसे अभिजात वर्ग होती हैं, उनका आचार-व्यवहार बहुत परिष्कृत होता है, वे अक्सर अपने कमरो मे झाडू लगाकर कूडा बाहर निकाल देती हैं, और अपनी सहेलियो से गोश्त और करमकल्ले की ऊची कीमतो के बारे मे बाते करने मे उन्हे मजा आता है, उनकी मिल्कियत मे आम तौर पर एक नौजवान बेटी होती है, जो शात और

बिगड़नी गयी थी, और उसकी दुर्दशा का सभी को पता था। अचानक राजकुमार कुछ समय के लिए राजधानी से यह बहाना करके चला गया कि वह अपने मामलात को ठीक करने जा रहा है, और जब वह लौटा तो उसके ठाठ ही निराले थे। वह शानदार नाच की पार्टियो और जलसो का आयोजन करने लगा और उसकी ख्याति दरबार तक पहुच गयी। उस सुदर लडकी का बाप उसे सराहना की दृष्टि से देखने लगा, और सारा शहर अत्यत रोमाचकारी शादी की तैयारिया करने लगा। यह कोई भी यकीन के साथ नही बता सकता था कि दूल्हा के भाग्य ने कैसे यह पलटा खाया था, और यह दौलत कहा से मिली थी, लेकिन अफ़वाह फैल रही थी कि उसने किसी अजीब सूदखोर महाजन से कोई सौदा किया था और उसी से उसे यह कर्ज मिला था। बहरहाल, जो भी हो, सारे शहर मे इस शादी की चर्चा थी। दूल्हा और दुल्हन दोनो सभी की ईर्ष्या के पात्र थे। सभी जानते थे कि उन दोनो को एक-दूसरे से कितना गहरा और सच्चा प्रेम था, और यह भी कि दोनो को कितने लबे अर्से तक इतजार करने पर मजबूर किया गया था और दोनो मे कितनी खूबिया थी। उत्साही महिलाए अभी से कल्पना करने लगी थी कि यह नौजवान जोडी कैसे अलौकिक सुख का भोग करेगी। लेकिन घटनाओ ने कुछ दूसरी ही दिशा अपनायी। एक ही साल के अदर पति मे भयानक परिवर्तन आ गया। उसका चरित्र, जो अब तक उदात्त और शालीन था, शका और ईर्ष्या, असहिष्णुता और स्वेच्छाचारिता के विष से दूषित हो गया। वह अत्याचारी हो गया और अपनी पत्नी को यातनाए देने लगा, और, जिस बात की कोई पहले से कल्पना भी नही कर सकता था, वह अत्यत अमानुषिक काम करने लगा, यहा तक कि वह उसे कोडे भी लगाने लगा। साल ही भर बाद कोई उस औरत को पहचान भी नही सकता था, जिसके रोम-रोम से पहले उल्लास फूटा पडता था और जिसके पीछे आज्ञाकारी प्रशसको की भीड चलती थी। आखिरकार जब वह इन मुसीबतो को और ज्यादा बर्दाश्त न कर सकी तो पहले उसी ने तलाक का सुझाव रखा। तलाक की बात सुनते ही उसके पति का गुस्सा भडक उठा। भयकर रोष से प्रेरित होकर वह छुरा चमकाता [illegible] उसके कमरे मे घुस आया और अगर उसे पकडकर रोक न [illegible] तो उसने निश्चित

ही इतनी असाधारण बाते थी कि लोग यह मानने पर विवश थे कि उसमे कोई अलौकिक विद्वेष भरा हुआ था। उसके चेहरे पर बहुत गहरे अंकित सहज ही ध्यान आकर्षित करनेवाले वे लक्षण जो किसी दूसरे के चेहरे पर नही पाये जाते, उसकी कासे की तरह चमकती हुई मूरत, उसकी भवो का बेहद घना भवरापन, उसकी दहकती हुई बमहा आखे, उसके ढीले-ढाले एशियाई पहनावे की सिलवटे – ये सभी चीजे मानो पुकार-पुकारकर कहती थी कि उसके सीने मे जो मनोवेग धधक रहे थे उनकी तुलना मे साधारण मनुष्यो के मनोवेग बहुत माद थे। उसमे मुठभेड हो जाने पर मेरे पिताजी हमेशा ठिठककर खडे रह जाते थे और कभी यह कहने से नही चूकते थे 'पिशाच, बिल्कुल पिशाच!' लेकिन मै जल्दी से आपका परिचय पिताजी से करा दू, जिनके बारे मे लगे हाथ यह बता दिया जाये कि वही इस कहानी के नायक हैं।

"मेरे पिताजी कई बातो की दृष्टि से कमाल के आदमी थे। वह उन दुर्लभ कलाकारो मे से थे, उन चमत्कारी लोगो मे से थे जिन्हे केवल रूस-माता की पवित्र कोख पैदा कर सकती है, वह स्वशिक्षित चित्रकार थे, जो किसी शिक्षक या पाठशाला का, किन्ही नियमो या मार्गदर्शक सिद्धातो का सहारा लिये बिना केवल अपनी आत्मा मे पथ-प्रदर्शन खोजते थे, जो केवल निष्कलकता प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित होते थे और ऐसे सिद्धातो का पालन करते थे जिनसे शायद वह स्वय भी परिचित नही थे, वह उसी मार्ग पर चलते थे जिसकी ओर उनकी आत्मा सकेत करती थी, वह प्रकृति की उन विलक्षण प्रतिभाओ मे से थे जिन्हे उनके समकालीन बहुधा बडे तिरस्कार से अज्ञानी ठहरा देते हैं लेकिन जो आलोचना और विफलता से निरुत्साह नही होते, बल्कि वे उनसे नया उत्साह और नयी शक्ति प्राप्त करते हैं और उन कृतियो से बहुत आगे बढ जाते हैं जिनकी वजह से उन्हे अज्ञानी की सज्ञा दी गयी थी। प्रत्येक वस्तु के आधारभूत अर्थ के बारे मे उनकी समझ बहुत गहरी थी, वह 'ऐतिहासिक चित्र' के वास्तविक महत्व को समझते थे, वह इस बात को समझते थे कि रफाएल, लियोनार्दो द विची, टिशियन या कोरेजियो की बनायी हुई कोई सीधी-सादी मुखाकृति, उनका बनाया हुआ कोई छवि-चित्र क्यो ऐतिहासिक

आवश्यक साधन जुटाने के लिए जरूरत होती थी। इसके अलावा, वह कभी, किसी भी हालत में, दूसरों की सहायता करने से, अपने ज़रूरतमंद साथियों की ओर मदद का हाथ बढ़ाने से इकार नहीं करते थे; वह अपने पूर्वजों के सीधे-सादे पवित्र धर्म का पालन करते थे, और शायद यही कारण था कि संतों का चित्रण करते समय वह उनकी आकृति में वह सौम्य भाव लाने में सफल होते थे जो प्रतिभाशाली कलाकार भी नहीं ला पाते थे। अतत, अपने काम की निरतर उत्कृष्टता की वजह से और अपने चुने हुए मार्ग पर अडिग रूप से चलते रहने की वजह से उन्हें उन लोगों की ओर से भी सम्मान मिलने लगा जो उन्हें अज्ञानी और अनाड़ी कहा करते थे। गिरजाघरों की ओर से लगातार उन्हें चित्र बनाने का काम मिलने लगा और उनके पास काम की कभी कमी नहीं रहती थी। इसी तरह के एक काम में वह विशेष रूप से बिल्कुल तल्लीन हो गये। मुझे अब यह तो ठीक-ठीक याद नहीं रह गया कि उसका विषय क्या था, लेकिन मैं इतना जानता हूं कि उस तस्वीर में कहीं अधकार के दानव का चित्रण करने की ज़रूरत थी। बहुत देर तक वह सोचते रहे कि वह उसे क्या आकृति प्रदान करें, वह उस आकृति में हर उस चीज़ को साकार कर देना चाहते थे जो उत्पीड़क हो, हर वह चीज़ जो मनुष्य पर बोझ हो। इस प्रकार विचार करने के दौरान कभी-कभी उस रहस्यमय सूदखोर की सूरत उनके दिमाग में आती थी और वह सोचने लगते थे 'उसी को मुझे अपने चित्र में पिशाच के लिए नमूना बनाना चाहिये।' उनके आश्चर्य की कल्पना कीजिये कि एक दिन जब वह अपने स्टूडियो में काम कर रहे थे तो उन्हें किसी के दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनायी दी, दरवाज़ा खुला तो वह भयानक सूदखोर अदर आया। अदर ही अदर उनके सारे शरीर में सिहरन दौड़ गयी।

"'आप तस्वीरें बनाते हैं?' आगतुक ने किसी भूमिका के बिना मेरे पिताजी से पूछा।

"'बनाता तो हूं,' मेरे पिताजी ने चकित होकर कहा, और सोचने लगे कि देखें अब आगे क्या होता है।

"'अच्छी बात है। मेरी तस्वीर बना दीजिये। शायद मैं जल्दी ही मर जाऊंगा, और मेरे कोई सतान भी नहीं है, लेकिन मैं नहीं

सही-सही अपने चित्र मे उतार लेने का फैसला किया। पहले-पहल उन्होंने आखो की ओर सबसे अधिक ध्यान दिया। उन आखो मे इतनी अधिक शक्ति थी कि वह उन्हे हूबहू अपने चित्र मे उतार लाने की आशा नही कर सकते थे। फिर भी हर कीमत पर वह उनके हर लक्षण और उनके भाव के हर उतार-चढाव को खोज निकालने के लिए, उनके रहस्य की थाह पाने के लिए कृतसकल्प थे लेकिन जैसे ही उन्होने अपनी तूलिका से उनकी गहराइयो मे उतरने की कोशिश की वैसे ही उनकी आत्मा ऐसी घृणा से, ऐसी विचित्र घुटन से भर उठी कि कुछ देर के लिए वह अपने चित्र से हाथ खीच लेने पर मजबूर हो गये। आखिरकार वह इसे और अधिक सहन न कर सके, उन्हे ऐसा महसूस होने लगा कि उसकी आखे उनकी आत्मा को भुलसे दे रही है और उनके अदर ऐसा भय पैदा कर रही हैं जो उनकी समझ के बाहर था। अगले दिन उनकी दहशत और बढ गयी, और तीसरे दिन तो और भी गहरी हो गयी। वह भयभीत हो उठे, उन्होंने अपनी तूलिका फेक दी और साफ एलान कर दिया कि वह उस काम को जारी नही रख सकते। ये शब्द सुनकर उस विचित्र सूदखोर पर आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया हुई। वह मेरे पिताजी के चरणो मे गिर पडा और गिडगिडाकर उनसे चित्र को पूरा कर देने की प्रार्थना करने लगा, उसने कहा कि इस पर उसकी सारी नियति और इस ससार मे उसका अस्तित्व निर्भर था, कि मेरे पिताजी ने उसकी सजीव आकृति के लक्षणो को अपनी तूलिका से छू लिया था और यह कि अगर वह उन्हे सच्चे रूप मे व्यक्त करने मे सफल हो जाये तो एक अलौकिक शक्ति के माध्यम से उसका जीवन उस चित्र मे सुरक्षित रह सकता था कि उसकी बदौलत वह बिल्कुल मर जाने से बच जायेगा, क्योंकि उसे इस दुनिया मे जीवित रहना है। ये शब्द सुनकर मेरे पिताजी पर आतक छा गया वे उनके कानो मे इतने विचित्र और भयानक लग रहे थे कि उन्होंने अपनी तूलिका और रगो की तख्ती दोनो ही को फेक दिया और भपटकर कमरे से बाहर चले गये।

"जो कुछ हुआ था उसकी याद उन्हे सारे दिन और सारी रात सताती रही, और अगले दिन सवेरे उस सूदखोर के यहा से वह चित्र एक औरत के हाथ उनके पास भिजवा दिया गया उस सूदखोर

उन्हीं को मिलेगा। तस्वीरें प्रतियोगिता में भेजी गयीं, उनकी कृति के मुकाबले अन्य सभी तस्वीरें दिन के सामने रात जैसी थीं। तब फैसला करनेवालों में से एक ने, जो अगर मैं गलती नहीं करता तो तब पादरी था, एक ऐसी अप्रत्याशित आलोचना की जिसे सुनकर सभी दंग रह गये। 'इसमें तो शक नहीं कि कलाकार ने अपनी कृति में बड़ी प्रतिभा का परिचय दिया है,' वह बोले, 'लेकिन उसके चेहरों में कोई पवित्रता का भाव नहीं है, बल्कि इसके विपरीत उन आकृतियों की आंखों में कोई पैशाचिक भाव है, मानो कलाकार ने किसी दूषित प्रभाव से प्रेरित होकर उन्हें बनाया हो।' चित्र को अधिक ध्यान से देखने पर सभी उपस्थित लोग वक्ता की बात से सहमत होने पर विवश हो गये। मेरे पिताजी अपनी बनायी हुई तस्वीर की ओर झपटे मानो स्वयं इस अत्यंत अपमानजनक टिप्पणी के सत्य होने की जांच करना चाहते हों और यह देखकर सहम उठे कि उन्होंने लगभग सभी आकृतियों की आंखें उस सूदखोर की आंखों जैसी बनायी थीं। वे उसे ऐसी पैशाचिक विनाशकारी शक्ति से देख रही थीं कि वह अनायास ही सिहर उठे। उनका चित्र अस्वीकार कर दिया गया, और अकथनीय क्षोभ के साथ उन्होंने देखा कि पुरस्कार उनके शिष्य को मिल गया। वह जिस तरह रोष में भरे हुए घर लौटे उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। वह मेरी मां पर लगभग टूट पड़े, हम बच्चों को भगा दिया, अपनी तूलिकाएं और ईज़िल तोड़ डाला, सूदखोर के चित्र को दीवार पर से उतारा, एक चाकू मंगवाया और चूल्हे में आग सुलगाने को कहा, उनका इरादा उस तस्वीर को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देने और जला देने का था। वह अपनी इस योजना को पूरा करने की तैयारी कर ही रहे थे कि इतने में उनके एक परिचित कमरे में आये, वह भी उन्हीं की तरह चित्रकार थे जो हमेशा खुशमिज़ाज और संतुष्ट रहते थे और कभी किसी दूर की लालसा से चिंतित नहीं होते थे जो काम भी मिल जाता था वही खुश होकर करते रहते थे और अपने दोस्तों के साथ बैठकर खाना खाने या शराब पीने में उन्हें इससे भी ज्यादा सुख मिलता था।

"'क्या कर रहे हो, किस चीज़ को जलाने की तैयारी कर रहे हो?' उन्होंने तस्वीर की ओर बढ़ते हुए पूछा। 'मेरे यार, यह तुम्हारी सबसे अच्छी कृतियों में से है। उस सूदखोर की तस्वीर है न जो अभी

से वह अपने उस मित्र से नही मिले थे जिन्होंने उनसे वह तस्वीर मागी थी। वह उनसे मिलने जाने की योजना ही बना रहे थे कि अचानक वह मित्र उनके कमरे मे आ पहुंचे। थोडी देर शिष्टाचार की बाते होने के बाद उन मित्र ने कहा:

"'सच कहता हू, भाई, तुम उस तस्वीर को जो जला देना चाहते थे तो वह ठीक ही था। भगवान जाने उसमे न जाने कौन-सी ऐसी अजीब बात है. मैं जादू-टोने मे विश्वास नही रखता लेकिन, कसम खाकर कहता हू, उसमे कोई दुष्ट शक्ति छिपी हुई है '

"'क्या मतलब तुम्हारा?' मेरे पिताजी ने पूछा।

"'अरे, जब से मैंने उसे अपने कमरे मे टागा तभी से मुझे इस घुटन का आभास होने लगा जैसे मैं किसी की हत्या कर देना चाहता हू। जिंदगी-भर कभी ऐसा नही हुआ कि मुझे रात को नीद न आती हो, लेकिन अब न सिर्फ यह कि मुझे नीद नही आती थी बल्कि ऐसे भयानक सपने भी दिखायी देते थे कि मैं ठीक से यह भी नही कह सकता कि वे सपने ही होते या कुछ और मुझे ऐसा लगता था कि जैसे कोई भूत मेरा गला घोटे दे रहा है और मुझे वह कमबख्त बूढ़ा दिखायी देता रहता था। सचमुच, मेरी समझ मे नही आता कि मैं अपने दिमाग की हालत कैसे बयान करू। आज तक कभी मैंने ऐसा नही महसूस किया। उन दिनो मैं तमाम वक्त पागलो की तरह एक किस्म का डर महसूस करता हुआ, कोई भयानक बात होने की अरुचिकर आशका लिये इधर-उधर घूमता रहता था। मैं किसी से कोई खुशी की या दिल से निकली हुई बात नही कह सकता था. ऐसा लगता था जैसे कोई छिपकर मुझ पर नजर रख रहा है। और जिस क्षण वह तस्वीर मैंने अपने एक भतीजे को दे दी, जिसने बडी खुशामद करके उसे मुझ से मागा था, मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे कधो पर से किसी पत्थर का बोझ हट गया हो. फौरन मेरी सारी जिंदादिली लौट आयी, जैसा कि तुम देख सकते हो। हा, मेरे दोस्त, तुमने शैतान मे जान डाल दी थी!'

"पिताजी ने बडे ध्यान से उनकी बात सुनी और अत मे पूछा

"'हो-हो! तो अब वह तस्वीर तुम्हारे भतीजे के पास है?'

"'वह भी उसे बर्दाश्त नही कर पाया,' उनके मस्तमौला दोस्त ने

गरम कोट

किसी विभाग मे, लेकिन मैं समझता हू कि सही-सही यह न बताना ही बेहतर होगा कि किस विभाग मे। क्योंकि ये सभी विभाग, रेजिमेंटें और चासलरिया – मतलब यह कि सरकारी नौकरों की सभी कोटिया – बेहद बदमिजाज होती हैं। आजकल तो किसी साधारण नागरिक का भी अगर अपमान कर दिया जाये तो वह उसे पूरे समाज का अपमान समझता है। एक किस्सा बयान किया जाता है कि हाल ही मे किसी शहर के, जिसका नाम हमे याद नही है, पुलिस के दरोगा ने शिकायत भेजी, जिसमे उसने बिल्कुल साफ-साफ शब्दो मे कहा था कि सरकार की व्यवस्थाओ का सत्यानाश होता जा रहा था और उसका अपना पवित्र नाम बिल्कुल बेकार में लिया जा रहा था। इसके सबूत मे उसने अपनी अर्जी के साथ एक मोटी-सी किताब भेजी थी, जो कोई रोमांटिक कृति थी, जिसमे हर दस पृष्ठ के बाद पुलिस के किसी दरोगा की चर्चा की गयी थी, जो कभी-कभी तो बिल्कुल ही नशे मे चूर होता था। इसलिए, इस तरह की किसी भी बदमज़गी से बचने के लिए सबसे अच्छा यही होगा कि जिस विभाग की हम चर्चा कर रहे हैं उसे हम **कोई विभाग** ही कहे।

इस तरह, **किसी विभाग में कोई अफसर** काम करता था; उस अफसर को किसी भी तरह बहुत उल्लेखनीय नहीं कहा जा सकता; उसका कद कुछ नाटा था, मुह पर कुछ-कुछ चेचक के दाग थे, बाल कुछ लाल रग के थे, उसकी नजर कुछ चुधी थी, उसकी खोपड़ी भी सामने से कुछ गजी हो चली थी, उसके दोनो गालो पर झुर्रिया पड़ ~ थी और उसके चेहरे का रग पीला था... खैर, किया भी क्या ~ सकता है! यह तो सेट पीटर्सबर्ग के जलवायु का दोष है। जहा ~ उसके पद का सवाल है (क्योंकि बात यह है कि हमारे यहा

दुला और वरासामी। "यह तो मुझे कोई दंड दिया जा रहा है," वृद्ध महिला बोली, "ऐसे-ऐसे नाम, मैंने तो ऐसे नाम पहले कभी सुने ही नहीं। वरादात या वरख भी होता तो कोई बात थी, लेकिन त्रिफीली और वरासामी तो " उन लोगों ने एक और पृष्ठ खोला और उस पर पवसिकाखी और वख्तीसी के नाम सामने आये। "अच्छा अब मैं समझ गयी," वृद्ध महिला ने कहा, "कि इसमें कुछ तकदीर का हाथ है। अगर यही बात है, तो इससे बेहतर है कि जो नाम बाप का है वही उसका भी रख दिया जाये। बाप का नाम अकाकी है इसलिए बेटे का नाम भी अकाकी ही रहने दो।" इस तरह, अकाकी अकाकियेविच नाम की उत्पत्ति हुई। बच्चे का नामकरण संस्कार संपन्न हुआ, उसके दौरान वह रोने लगा और उसने ऐसा मुंह बनाया जैसे उसे इस बात का पूर्वाभास हो रहा हो कि एक दिन वह टाइटुलर काउंसिलर बनेगा।

"मैं तुम्हारा भाई हू।" ऐसे मौकों पर वह बेचारा नौजवान दोनो हाथो से अपना मुह ढक लेता था। अपने जीवन में कितनी ही बार वह मनुष्य के प्रति मनुष्य की क्रूरता को देखकर, सुसस्कृत, सुशिक्षित और सुसभ्य चमक-दमक के पीछे छिपे हुए द्वेषपूर्ण फूहड़पन को देखकर काप उठा था। और, हे भगवान, यह बात उन लोगो मे भी पायी जाती थी जिन्हे दुनिया नेक और ईमानदार मानती थी।

आपको कोई दूसरा आदमी शायद ही मिल पाता, जिसके लिए काम इस हद तक जीवन का सुख बन गया हो। केवल इतनी ही बात नही थी कि वह बडी लगन से नौकरी करता था, बल्कि वह बड़े प्यार से नौकरी करता था। इसमे, इस नकलनवीसी मे उसे एक रगीन और आकर्षक दुनिया दिखायी देती थी। उसके चेहरे पर उल्लास का भाव आ जाता था, वर्णमाला के कुछ अक्षरो से उसे विशेष लगाव था और जब भी इनमे से कोई अक्षर उसके सामने आ जाता था तो वह खुशी से फूला न समाता था वह चहक उठता था और आख मारता था और तरह-तरह के मुह बनाता था, जिसकी वजह से उसके कलम से लिखे जानेवाले हर अक्षर को उसके चेहरे पर पढा जा सकता था। अगर उसे उचित पुरस्कार मिलता तो अपने अपार उत्साह की वजह से उसे स्टेट काउसिलर बना दिया गया होता – जिस पर उसे स्वय भी बहुत आश्चर्य होता, लेकिन, जैसा कि उसके चुटकुलेबाज साथी कहा करते थे, इस सारे काम के बदले उसे बस यही पुरस्कार मिला था कि सामने एक बिल्ला और पीछे बवासीर। फिर भी यह कहना पूरी तरह सच न होगा कि उसकी ओर कोई ध्यान दिया ही नही जाता था। एक डायरेक्टर ने, जो स्वभाव से नेकदिल आदमी था और उसकी लबी सेवा के लिए उसे पुरस्कार देना चाहता था, आदेश दिया कि उसे आम नकलनवीसी के काम के बजाय कोई अधिक महत्व-पूर्ण काम दिया जाये, अर्थात्, उसे किसी दूसरे दफ्तर के लिए एक ऐसे मामले की रिपोर्ट तैयार करने का काम सौंपा गया जिसकी कार्रवाई पूरी हो चुकी थी, इसमे करना बस इतना था कि शीर्षक बदल दिया ... और इक्का-दुक्का क्रियाओं को उत्तम पुरुष से अन्य पुरुष में बदल ... जाये। यह उसके लिए इतना कठिन काम था कि उसके पसीना ...ने लगा, उसने अपना माथा पोंछकर अत में कहा · "नही, मुझे

लिए मक्खियों समेत और भगवान की दया से जो कुछ भी और उस वक्त मिल जाये उसके साथ एक साथ ले आता गप पी जाता था और साथ का एक टुकड़ा प्याज के साथ खा लेता था। जब वह महसूस करता कि उसका पेट भरने लगा है तो वह मेज पर से उठ जाता और दवात लेकर अपने साथ लाये हुए कागज नकल करने बैठ जाता। अगर इस तरह का कोई कागज न होता तो वह बस जी बहलाने के लिए अपनी तरफ से कोई चीज नकल करने लगता, खास तौर पर अगर वह दस्तावेज उल्लेखनीय होता — अपनी शैली की वजह से नहीं बल्कि इसलिए कि वह जिसे संबोधित करके लिखा गया था वह कोई अनोखा या महत्वपूर्ण आदमी हो।

उस समय भी जब सेंट पीटर्सबर्ग के धुंधले भूरे आसमान पर बिल्कुल अंधेरा छा जाता है और अफसरों की पूरी नस्ल अपने-अपने ढंग से और अपनी-अपनी हैसियत और खाने-पीने के मामले में अपनी पसंद के हिसाब से छककर खा चुकती है जब दफ्तरों में काम करनेवाले सभी लोग अपनी रोज-रोज की कलम-घिसाई से, खुद अपने और दूसरे विभागों की आवश्यक हलचल और झंझटों से, और बेचैन तबियतवाले अपनी मर्जी से जो फालतू और गैर-जरूरी काम अपने जिम्मे ले लेते हैं उससे छुटकारा पाकर आराम कर चुके होते हैं, जब अफसर लोग अपना बचा-खुचा फुरसत का वक्त अधिक आनंददायक कामों में बिताने की जल्दी में होते हैं जो ज्यादा तेज होते हैं वे हड़बड़ाकर थियेटर की ओर भागते हैं, कुछ सड़क पर टहलते हुए औरतों की हैटों के नीचे झांकने में समय बिताते हैं, कुछ पार्टियों में जाते हैं — अफसरों के छोटे-से झुरमुट में सितारे जैसी चमकती हुई किसी परी की प्रशंसा करने में पूरी शाम बिता देते हैं, कुछ — और यह सबसे ज्यादा होता है — बस अपने जैसे किसी अफसर के तीसरी या चौथी मंजिलवाले फ्लैट में जाकर, जहां उसके पास दो कमरे और एक ड्योढ़ी या रसोई होती है जिसमें वह कई रातों के खाने की कुर्बानी देकर या कई शामों की तफरीह हराम करके हासिल की गयी कुछ फैशनेबुल दिखाऊ चीजें, कोई लैंप या कोई और छोटी-मोटी चीजें, सजाकर ने रखता है; दूसरे शब्दों में, जब सारे अफसर स्टार्म ह्विस्ट ने के लिए अपने दोस्तों के छोटे फ्लैटों में बिखर जाते थे, वहां

कि उल्टे पांव वहां से वापस चला जाये लेकिन इसके लिए बहुत देर हो चुकी थी। पेत्रोविच ने अपनी अकेली आंख सिकोड़कर उसे घूरा और अकाकी अकाकियेविच अपने आप ही बोला

"सलाम, पेत्रोविच!"

"सलाम, साहब!" पेत्रोविच ने जवाब में कहा और अकाकी अकाकियेविच के हाथों पर नज़र गड़ाकर देखने लगा कि उसके लिए किस तरह का लूट का माल लाया गया है।

"मैं मैं . बस इसलिए आया था, पेत्रोविच, कि यह "

बात तो यह है कि अकाकी अकाकियेविच अपने विचारों को ज्यादातर परसर्गों, क्रिया-विशेषणों और भांति-भांति के निपातों के माध्यम से व्यक्त कर रहा था जिनका एकदम कोई अर्थ नहीं होता। अगर हालत खास तौर पर अटपटी हो जाती तो वह अपने वाक्य भी पूरे नहीं करता था और अक्सर कुछ इस तरह की बात शुरू करके "हां तो, बात यह है कि दरअसल" वह बाकी बात कहना गोल कर जाता और अंत में सब कुछ भूल जाता, यह समझ बैठकर कि जो कुछ उसे कहना था वह उसने कह दिया है।

"क्या, है क्या?" पेत्रोविच ने अपनी अकेली आंख से उसकी वर्दी को बड़े गौर से देखते हुए पूछा, उसने शुरुआत कालर से की फिर आस्तीन, पीठ, दामन और काजों पर आया हर चीज़ अच्छी तरह उसकी जानी-पहचानी थी, क्योंकि यह सब कुछ उसी का किया हुआ तो था। दर्ज़ियों का यही दस्तूर होता है, और किसी ग्राहक का सामना होने पर सबसे पहले वे यही करते हैं।

"हां तो, बात यह है, पेत्रोविच मेरा यह कोट इसका कपड़ा तुम जानो, बाकी हर जगह से तो यह काफी मजबूत है इस पर जरा गर्द जम गयी है और यह कुछ पुराना-सा लगने लगा है लेकिन दरअसल यह है नया, बस, यहां एक जगह पर यह कुछ यहां पीठ पर और एक कंधे पर भी यह कुछ घिस गया है और यहां इस कंधे पर भी थोड़ा-सा यहां देखो, बस इतना ही। काम ज्यादा बिल्कुल नहीं "

पेत्रोविच ने लबादा ले लिया, पहले उसे मेज पर फैलाया उसे बड़े गौर से [illegible] रहा, अपना सिर हिलाया और खिड़की की ओर

होगा कि जब कड़ाके का जाडा पड़ने लगे तब इसे काटकर पाव पर लपेटने की पट्टिया बना लीजियेगा, क्योकि मोजो से पाव गरम नही रहते है। इनकी ईजाद तो जर्मनो ने लोगो से पैसा ऐठने के लिए की थी," (पेत्रोविच जर्मनो पर चोट करने का कोई मौका नही चूकता था); "और लगता तो यही है कि आपको नया कोट बनवाना पड़ेगा।"

"नया" शब्द सुनते ही अकाकी अकाकियेविच को चक्कर आ गया और कमरे की सारी चीजे उसकी आखो के सामने घूमने लगी। बस एक चीज जो उसे थोडी बहुत साफ दिखायी दे रही थी वह थी पेत्रोविच की नसवार की डिबिया पर बनी हुई जनरल की तस्वीर जिसके चेहरे पर कागज चिपका हुआ था।

"नया बनवाने से क्या मतलब तुम्हारा?" उसने इस तरह पूछा जैसे पूरी तरह होश मे न हो, "मेरे पास तो उसके लिए पैसा नही है!"

"हा, नया," पेत्रोविच ने असह्य भावशून्यता से कहा।

"अच्छा, अगर मुझे नया सिलवाना ही पड़े, तो उसमे एक तरह से कितना, तुम जानो "

"आपका मतलब है, कितना पैसा लगेगा?"

"हा।"

"मैं समझता हू डेढ सौ से ऊपर तो लग ही जाना चाहिये," पेत्रोविच ने बड़े अर्थपूर्ण ढग से अपने होंटो को भीचकर कहा। उसे बात मे घातक प्रभाव पैदा करने का बेहद शौक था, उसे ऐसी बात कहना बहुत अच्छा लगता था कि सुनकर आदमी स्तब्ध रह जाये और तब वह कनखियो से उसके चेहरे पर अपने शब्दो का करिश्मा देखे।

"एक कोट के डेढ सौ रूबल!" बेचारे अकाकी अकाकियेविच ने तड़पकर कहा, अपने जीवन मे शायद पहली बार वह ऊची आवाज मे बोला था, क्योकि वह स्वभाव से ही बेहद नरमी से बोलनेवाला आदमी था।

"जी हा," पेत्रोविच बोला, "कोट मे तो इससे भी बहुत ज्यादा लग सकता है। उसके कॉलर पर चितराले का समूर और रेशमी अस्तर-वाला कनटोप लगवा लीजिये तो कीमत दो सौ के पार पहुच जायेगी।

"बस-बस, पेत्रोविच," अकाकी अकाकियेविच ने गिड़गिड़ाकर

डालकर देखा और घर की ओर लौट पडा। घर पहुचते ही वह अपने बिखरे हुए विचारो को समेटने लगा और उसने अपनी हालत को सही तरीके से देखा; वह अपने आपसे उखडे-उखडे ढग से बिल्कुल भटको के साथ नहीं, बल्कि बडे सुलझे हुए ढग से खुलकर बात कर रहा था, जैसे किसी ऐसे समझदार दोस्त से बाते कर रहा हो जिससे आदमी सदमे अतरग और नाजुक से नाजुक मामलो के बारे मे चर्चा कर सकता है।

"नही, नही," अकाकी अकाकियेविच ने कहा। "इस वक्त पेत्रोविच से बात करने से कोई फायदा नही है वह एक तरह से उसकी बीवी ने उसे धप जमायी होगी। अच्छा यही होगा कि मैं इतवार को सुबह उसके पास जाऊ: बीते सनीचर के बाद जब वह अपनी आख भेगी करके देख रहा होगा, जब वह ऊघ रहा होगा और उसे अपने हवास ठीक करने के लिए एक घूट चढाने की जरूरत होगी, लेकिन उसकी बीवी उसे एक दमडी भी न दे रही होगी, और तब मैं उसे दस कोपेक .. एक तरह से और वह मेरी बात ज्यादा आसानी से मान लेगा और कोट एक तरह से "

इस दलील का सहारा लेकर अकाकी अकाकियेविच ने अपना हौसला बढाया और अगले इतवार तक इतजार करता रहा, जब उसने दूर से देख लिया कि पेत्रोविच की बीवी किसी काम से बाहर निकल गयी है वह फौरन पेत्रोविच के पास जा पहुचा। सनीचर के बाद पेत्रोविच सचमुच भेगी आख से देख रहा था, उसका सिर नीचे को लटका हुआ था और आखे नीद से बोझिल थी, लेकिन जैसे ही उसकी समझ मे आया कि अकाकी अकाकियेविच क्या बात कर रहा है तो उसके सिर पर जैसे शैतान उतर आया।

"नही," वह बोला, "कोट तो नया ही लेना पडेगा।"

इस पर अकाकी अकाकियेविच ने दस कोपेक का एक सिक्का उसके हाथ मे सरका दिया।

"बहुत शुक्रिया, मेहरबान, मैं जरा ताजादम हो लू और आपकी सेहत का जाम पी लू," पेत्रोविच बोला, "लेकिन कोट की कोई फिक्र न कीजिये, पुराना किसी काम का नही रहा, मैं नया बढिया कोट बना दूगा, विश्वास कीजिये।"

पर राजी हो गयी हो—और यह साथी कोई और नहीं बल्कि उसका भारी रूई-भरा गरम कोट था, जिसमे टिकाऊ और मजबूत अस्तर लगनेवाला था। न जाने कैसे उसमे ज्यादा जान आ गयी, और उसका चरित्र अधिक दृढ हो गया, उस आदमी की तरह जिसने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया हो। उसके चेहरे और उसके आचरण से अनिश्चय और ढुलमुलपन, यानी उसके सारे डावाडोल और गोलमोल लक्षण गायब हो गये थे। कभी-कभी उसकी आखे अचानक चमक उठती थी और उसके दिमाग से अत्यत साहसपूर्ण और बहादुरी के विचार होकर गुजर जाते थे शायद बिनराले का कॉलर भी वह आखिरकार लगवा ही लेगा। इसके बारे मे मन ही मन सोचते हुए वह बिल्कुल खो जाता था और एक दिन नकल करने के दौरान वह गलती भी करते-करते बचा, उसके मुह से लगभग जोर से "उफ!" निकल गया और उसने उगलियो से सीने पर सलीब का निशान बनाया। हर महीने कम से कम एक बार वह जरूर पेत्रोविच के यहा कोट की चर्चा करने जाता पूछता कि कपड़ा खरीदने के लिए सबसे अच्छी जगह कौन सी होगी किस रंग का कपड़ा खरीदे, कितनी कीमत चुकाये और यह सब कुछ पूछकर वह हमेशा खुश-खुश घर लौट आता, हालांकि थोड़ा सा चिन्तित भी रहता, लेकिन इस विचार से उसे संतोष मिलता कि वह वक्त तो आयेगा जब वह सचमुच सब कुछ खरीद सकेगा और कोट बनकर तैयार हो जायेगा। उसकी आशा से जल्दी ही वह क्षण आ गया। तमाम आशाओं के विपरीत, डायरेक्टर ने अकाकी अकाकियेविच को चालीस नहीं पैंतालीस नहीं, बल्कि पूरे साठ रूबल का बोनस देना तै किया। उन्हें शायद इस बात का पूर्वाभास हो गया था कि अकाकी अकाकियेविच को कोट की सख्त जरूरत है, या शायद यह केवल संयोग की बात रही हो, लेकिन नतीजा यह हुआ कि अकाकी अकाकियेविच को बीस रूबल ज्यादा मिल गये। घटनाक्रम में अचानक यह मोड़ आ जाने से पूरे सिलसिले की रफ्तार तेज हो गयी। दो-तीन महीने और भूखे रहने के बाद अकाकी अकाकियेविच के पास ठीक अस्सी रूबल की रकम तैयार थी। उसका दिल, जो आम तौर पर शान्त रहता था, जोर से धड़कने लगा। अगले ही दिन वह पेत्रोविच के साथ दुकानों का चक्कर लगाने निकल गया। उन्होंने कोट के लिए

का पूरा आभास था और वह महसूस करता था कि उसने अपने काम से सिद्ध कर दिया था कि उन दर्जियों में जो सिर्फ़ अस्तर टाँकते हैं और मरम्मत करते हैं और उन दर्जियों में जो नये वस्त्रों का सृजन करते हैं कितना ज़मीन-आसमान का अंतर होता है। उसने कोट को उस बड़े से रूमाल में से खोलकर निकाला जिसमें वह उसे लपेटकर लाया था. रूमाल ताज़ा-ताज़ा धोया गया लगता था, इसके बाद ही उसने रूमाल को तह किया और इस्तेमाल करने के लिए उसे अपनी जेब में रख लिया। कोट को ऊपर उठाकर उसने बड़े गर्व से देखा और बड़ी दक्षता से दोनों हाथों से उसे अकाकी अकाकियेविच के कंधों पर डाल दिया, फिर उसे ठीक से सीधा किया, पीछे से उसे खींचकर बराबर किया और उसके बाद बटन लगाये बिना ही उसे अकाकी अकाकियेविच के शरीर पर लपेट दिया। अधेड़ उम्र का आदमी होने की वजह से अकाकी अकाकियेविच उसे ठीक से पहनने को उत्सुक था, पेत्रोविच ने बाँह आस्तीनों में डालने में उसकी मदद की – और आस्तीनों में हाथ डालकर पहनने पर भी वह अच्छा था। मालूम यह हुआ कि ओवरकोट हर तरह से बिल्कुल फ़िट था। पेत्रोविच ने यह कहने का मौक़ा हाथ से नहीं जाने दिया कि महज़ इसलिए कि वह एक छोटी-सी गली में रहता था और उसकी दुकान पर कोई साइनबोर्ड नहीं था, और इसके अलावा वह अकाकी अकाकियेविच को इतने दिन से जानता था उसने उससे इतने कम पैसे लिये थे, जबकि नेव्स्की एवेन्यू पर सिर्फ़ सिलाई के उसे पचहत्तर रूबल देने पड़ते। अकाकी अकाकियेविच इस बारे में पेत्रोविच से बहस नहीं करना चाहता था क्योंकि पेत्रोविच अपने ग्राहकों को चौंकाने के लिए जिन बड़ी-बड़ी रकमों का ज़िक्र करता था उनको सुनकर ही उसे डर लगता था। उसने उसका हिसाब चुकता किया, शुक्रिया अदा किया और नया ओवरकोट पहनकर दफ़्तर की ओर चल दिया। पेत्रोविच भी उसके पीछे ही निकला और वहीं देर तक सड़क पर खड़ा आँखों से दूर जाते हुए कोट को देखता रहा और फिर जान-बूझकर वह एक टेढ़ी-मेढ़ी गली में से चक्कर काटकर दुबारा उसी सड़क पर कुछ आगे उसी जगह आ निकला जहाँ से वह अपने कोट को एक बार फिर देख सकता था, लेकिन इस बार एक दूसरी तरफ़ से – सामने से। इसी बीच अकाकी अकाकियेविच

है कि यह बड़ी शर्म की बात है और उसे न्योता स्वीकार करना पड़ा। बाद में जब उसकी समझ में यह बात आयी कि उसे अपना नया ओवर-कोट पहनकर टहलने का एक और मौका मिलेगा, इस बार शाम को, तो वह खुशी से फूल उठा। यह पूरा दिन अकाकी अकाकियेविच के लिए उल्लास-भरे त्योहार का दिन था। वह घर लौटा तो बहुत खुश था। उसने अपना कोट उतारकर बड़ी सावधानी से हुक पर टांग दिया। एक बार फिर उसके कपड़े और अस्तर को मन ही मन सराहा और फिर दोनों की तुलना करने के लिए उसने अपना पुराना लबादा निकाला, जो बिल्कुल तार-तार हो चुका था। उसे देखकर वह हंस भी पड़ा। कितना जमीन-आसमान का अंतर था! और इसके बाद बड़ी देर तक खाना खाते वक्त जब भी वह अपने पुराने लबादे की दुर्दशा के बारे में सोचता था तो मन ही मन हंस देता था। उसने बहुत खुश होकर खाना खाया और उसके बाद नकल करने का काम नहीं किया, जरा-सा भी नहीं, बल्कि उसके बजाय वह अंधेरा हो जाने तक बिस्तर पर लेटा ऐंडता रहा। फिर जल्दी से उसने कपड़े बदले, अपना नया कोट पहना और सड़क पर निकल गया। जिस अफसर ने पार्टी दी थी वह कहां रहता था यह तो दुर्भाग्यवश हम ठीक-ठीक नहीं बता सकते मेरी याददाश्त बुरी तरह धोखा देने लगी है और सेंट पीटर्सबर्ग की हर चीज, उसकी सारी सड़कें और इमारतें मेरे दिमाग में इतनी बुरी तरह गड्ड-मड्ड हो गयी है कि उसमें से किसी भी चीज को सही-सलामत निकाल पाना कठिन है। बस इतना पूरे यकीन के साथ कहा जा सकता है कि यह अफसर शहर के किसी बेहतर हिस्से रहता था, यानी उसका घर अकाकी अकाकियेविच के घर के कहीं आस-पास भी नहीं था। शुरू में तो अकाकी अकाकियेविच को कुछ सुनसान और धुंधली-धुंधली रोशनीवाली सड़कों से होकर जाना पड़ा, लेकिन जैसे-जैसे वह उस अफसर के फ्लैट के पास पहुंचता गया वैसे-वैसे रास्तों पर ज्यादा चहल-पहल दिखायी देने लगी, वे ज्यादा आबाद दिखायी देने लगे और उन पर रोशनी भी बेहतर थी। पैदल चलनेवालों की संख्या अधिकाधिक बढ़ती गयी, सजीली पोशाकें पहने हुए महिलाएं और ऊदबिलाव की खाल के कालरवाले कोट पहने मर्द भी दिखायी देने लगे; सस्ती किस्म की किराये की उन लकड़ी की बनी हुई जगने-

बहुत से ओवरकोट टंगे हुए थे, जिनमें से कुछ पर ऊदबिलाव की खाल के कॉलर भी लगे हुए थे या कॉलर के पल्लों पर मखमल मढ़ा हुआ था। दीवार के पार उसे आवाजों का एक मिला-जुला शोर सुनायी दे रहा था जो जब दरवाजा खुला और एक नौकर खाली प्यालियों चीनी के जग और बिस्कुटों की टोकरी से सजी हुई ट्रे लेकर बाहर निकला बिल्कुल साफ और तेज सुनायी देने लगा। साफ जाहिर था कि ये अफसर बड़ी काफी देर से जमा थे और चाय की पहली प्याली पी चुके थे। अकाकी अकाकियेविच अपना कोट खुद टांगकर कमरे में घुसा और मोमबत्तियों, अफसरों, पाइपों और ताश की मेजों की भरमार देखकर वह चौंधिया गया, और हर तरफ लोगों के बातें करने के मिले-जुले शोर और कुर्सियां खिसकाये जाने की तेज आवाज से उसके कान गूंजने लगे। वह कमरे के बीच में सिटपिटाया हुआ खड़ा था और चारों ओर नजरें डालकर यह फैसला करने की कोशिश कर रहा था कि उसे क्या करना चाहिये। लेकिन लोगों ने उसे देख लिया था, एक हुल्लड़ के साथ उन्होंने उसका स्वागत किया, और उसी क्षण उसके नये कोट को एक बार फिर देखने के लिये वे ड्योढ़ी में टूट पड़े। अकाकी अकाकियेविच शायद कुछ शरमा रहा था, लेकिन वह इतना भोला-भाला आदमी था कि अपने कोट की भूरि-भूरि प्रशंसा सुनकर वह खुश हुए बिना न रह सका। इसके बाद अलबत्ता सब लोगों ने उसे और उसके ओवरकोट को जहां का तहां छोड़ दिया और जैसा कि हमेशा होता है ह्विस्ट खेलने के लिए सजायी गयी मेजों की ओर वापस चले गये। यह सब कुछ—शोर, लगातार बातें और इतने बहुत-से लोग—अकाकी अकाकियेविच के लिए बिल्कुल अनोखी चीज थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे — अपने हाथ, अपने पांव और अपना पूरा शरीर कहां रखे; आखिरकार, वह ताश खेलनेवालों के पास जाकर बैठ गया, उनके ताश के पत्तों को देखने लगा, उनके चेहरों को घूरने लगा और कुछ देर बाद जम्हाई लेने लगा, वह महसूस कर रहा था कि यह सब कुछ बहुत उबानेवाला सिलसिला है और फिर उसके सोने का वक्त भी तो बहुत देर हुए हो चुका था। उसने अपने मेजबान से विदा लेने की कोशिश की, लेकिन सभी [illegible] उसे किसी तरह जाने ही नहीं दिया, उन्होंने कहा कि उसके [illegible] खुशी मनाने के

बहुत-से ओवरकोट टंगे हुए थे, जिनमें से कुछ पर ऊदबिलाव की खाल के कॉलर भी लगे हुए थे या कॉलर के पल्लों पर मखमल मढ़ा हुआ था। दीवार के पार उसे आवाज़ों का एक मिला-जुला शोर सुनायी दे रहा था जो जब दरवाज़ा खुला और एक नौकर खाली प्यालियों, क्रीम के जग और बिस्कुटों की टोकरी से लदी हुई ट्रे लेकर बाहर निकला बिल्कुल साफ़ और तेज़ सुनायी देने लगा। साफ़ ज़ाहिर था कि ये अफ़सर वहां काफ़ी देर से जमा थे और चाय की पहली प्याली पी चुके थे। अकाकी अकाकियेविच अपना कोट खुद टांगकर कमरे में घुसा और मोमबत्तियों, अफ़सरों, पाइपों और ताश की मेज़ों की भरमार देखकर वह चौंधिया गया, और हर तरफ़ लोगों के बातें करने के मिले-जुले शोर और कुर्सियां खिसकाये जाने की तेज़ आवाज़ से उसके कान गूंजने लगे। वह कमरे के बीच में सिटपिटाया हुआ खड़ा था और चारों ओर नज़रें डालकर यह फ़ैसला करने की कोशिश कर रहा था कि उसे क्या करना चाहिये। लेकिन लोगों ने उसे देख लिया था एक हुल्लड़ के साथ उन्होंने उसका स्वागत किया, और उसी क्षण उसके नये कोट को एक बार फिर देखने के लिये वे ड्योढ़ी में टूट पड़े। अकाकी अकाकियेविच शायद कुछ शरमा रहा था, लेकिन वह इतना भोला-भाला आदमी था कि अपने कोट की भूरि-भूरि प्रशंसा सुनकर वह खुश हुए बिना न रह सका। इसके बाद अलबत्ता सब लोगों ने उसे और उसके कोट को जहां का तहां छोड़ दिया और जैसा कि हमेशा होता है व्हिस्ट खेलने के लिए सजायी गयी मेज़ों की ओर वापस चले गये। यह सब कुछ—शोर, लगातार बातें और इतने बहुत-से लोग—अकाकी अकाकियेविच के लिए बिल्कुल अनोखी चीज़ थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे अपने हाथ, अपने पांव और अपना पूरा शरीर कहां रखे; आखिरकार, वह ताश खेलनेवालों के पास जाकर बैठ गया, उनके ताश के पत्तों को देखने लगा, उनके चेहरों को घूरने लगा और कुछ देर बाद जम्हाई लेने लगा, वह महसूस कर रहा था कि यह सब कुछ बहुत उबानेवाला सिलसिला है और फिर उसके सोने का वक्त भी तो बहुत देर हुए हो चुका था। उसने अपने मेज़बान से विदा लेने की कोशिश की, लेकिन सभी लोगों ने उसे किसी तरह जाने नहीं दिया, उन्होंने कहा कि उसके नये कोट की खुशी मनाने के

के मकान और लकडी की चाग्दीवारिया मिलने लगी थीं, दूर-दूर तक कोई आदमी-आदमजाद दिखायी नही देता था; सिर्फ सडक पर पडी हुई बर्फ की दमक दिखायी पड रही थी और नीची छतोंवाली झोपडिया अपने अंधेरे किवाडों के पीछे उदास भाव से सो रही थीं। अब वह उस जगह के पास पहुच गया था जहा सडक एक बडे-से चौक में जाकर निकलती थी, जो एक भयानक खाली निर्जन विस्तार था, जिसके उस पार की इमारते भी मुश्किल से दिखायी देती थी।

कहीं बहुत दूर उसे पुलिस के सतरी की चौकी की टिमटिमाती हुई रोशनी दिखायी दे रही थी, ऐसा लग रहा था कि यह चौकी दुनिया के छोर पर बनी हुई है। यहा पहुचकर अकाकी अकाकियेविच की सारी मस्ती स्पष्टत मद पडती दिखायी दी। अपने मन में एक अज्ञात भय लेकर उसने चौक को पार करना शुरू किया, मानो अदर ही अदर उसे कोई अशुभ बात होने का पूर्वाभास हो गया हो। उसने अपने पीछे और इधर-उधर देखा ऐसा लग रहा था कि वह खुले समुद्र मे चला जा रहा है। "नही, किसी तरफ न देखना ही बेहतर होगा," उसने सोचा और आखे मूदे चलता रहा, और जब यह देखने के लिए कि वह चौक के छोर से कितनी दूर रह गया है उसने अपनी आखे खोली तो अचानक उसने देखा कि ठीक उसकी नाक के सामने बडी-बडी मूछोवाले कुछ लोग खडे हैं, हालाकि वह ठीक से समझ नही पाया कि वे कौन है। उसकी आखो के सामने धुंधलका छा गया और उसका दिल धडकने लगा। "अरे, यह कोट तो मेरा है!" उनमे से एक ने उसका कालर पकडकर धमकी-भरे स्वर मे कहा। अकाकी अकाकियेविच मदद के लिए किसी को पुकारने ही जा रहा था कि दूसरे आदमी ने अपना घूसा – जो किसी भी सरकारी नौकर की खोपडी के बराबर था – उसके मुह की ओर बढाया और बोला: "चिल्लाकर तो देख!" अकाकी अकाकियेविच ने सिर्फ यह महसूस किया कि उन लोगों ने उसका कोट उतार लिया, फिर किसी ने उसको ठोकर मारी और वह पीठ के बल बर्फ पर गिर पडा; उसके बाद उसने कुछ भी ... नहीं किया। कुछ मिनट बाद उसे होश आया और वह उठकर अपने पावों पर खडा हो गया; लेकिन तब वहा कोई भी दिखायी नहीं

होगी भी कि नही। उस पूरे दिन वह जीवन मे पहली बार दफ्तर से ग़ैर-हाज़िर रहा।

अगले दिन उतरा हुआ चेहरा लिये और अपना पुराना लबादा पहने, जो अब पहले से भी ज्यादा दयनीय लगने लगा था, वह काम पर पहुंचा। कोट लुटने का किस्सा सुनकर अफसरो को बहुत रज हुआ, हालांकि उनमे से कुछ ऐसे भी थे जिन्हे इस मुसीबत के वक्त मे भी अकाकी अकाकियेविच की हसी उडाने मे कोई सकोच नही हुआ। अफसरो ने फौरन उसके लिए चदा जमा करने का फैसला किया लेकिन बहुत ही छोटी-सी रकम जमा हो सकी क्योकि विभाग के कर्मचारी पहले ही चदो मे बहुत-सी रकम दे चुके थे, पहले तो डायरेक्टर की एक तस्वीर के लिए, फिर किसी नयी किताब के लिए, जिसकी सिफारिश उनके सेक्शन के बडे अफसर ने की थी, क्योकि वह उस किताब के लेखक का मित्र था। नतीजा यह हुआ कि वे बहुत ही थोडा पैसा जुटा पाये। उनमे से एक ने, दया के भाव से द्रवित होकर, कम से कम एक उपयोगी सलाह देकर अकाकी अकाकियेविच की मदद करने का फैसला किया, उसने उससे कहा कि वह पुलिस सार्जेंट के पास न जाये, क्योकि सार्जेंट अपने ऊपर के अफसरो की वाहवाही लूटने की उत्सुकता मे कोट किसी न किसी तरह बरामद भले ही कर ले, पर जब तक उसकी मिल्कियत का कानूनी सबूत न दे दिया जाये तब तक वह रहेगा थाने मे ही। इसके बजाय उसे जाकर एक **बडी हस्ती** से मिलना चाहिये, और वह **बडी हस्ती** सही लोगों से सपर्क करके और सही लोगों को चिट्ठिया भेजकर मामले को सही ढर्रे पर लगा देगी। अकाकी अकाकियेविच के लिए इस **बड़ी हस्ती** से मिलने के अलावा कोई चारा ही नही था।

इस **बड़ी हस्ती** का ओहदा सही-सही क्या था, और उसमे क्या आशय निहित था, यह तो आज तक एक रहस्य है। सिर्फ यही मालूम है कि **इन बडी हस्ती** को अभी हाल ही मे बडी हस्ती बनाया गया था और उससे पहले उनकी हस्ती बहुत मामूली थी हालांकि उनके पद को कुछ दूसरी उनसे भी बडी हस्तियो के पदो की तुलना मे कोई खास महत्त्वपूर्ण नही समझा जाता था। लेकिन जिन आदमियों को कुछ लोग बड़ी हस्ती नही मानते हैं वे ही दूसरे कुछ लोगो के लिए बडे

साहब को अकाकी अकाकियेविच का आचरण ढिठाई सा लगा।

"क्या है, भले आदमी," वह उसी कठोर स्वर में कहते रहे "तुम्हें कायदा-कानून कुछ मालूम नहीं? जानते हो तुम कहां हो? या इस तरह के मामलात को पेश करने का सही तरीका क्या है? तुम्हें पहले इसके बारे में इस दफ्तर में अर्जी देनी चाहिये थी वह हेड-क्लर्क को भेजी जाती, फिर विभाग के प्रधान को और फिर वह सेक्रेटरी के हवाले की जाती और सेक्रेटरी उसे खुद मेरे पास लेकर आता"

"लेकिन, महामहिम," अकाकी अकाकियेविच ने अपने बचे-खुचे साहस के सारे साधन जुटाने की कोशिश करते हुए और साथ ही बुरी तरह पसीने में नहाकर कहा "मैंने, महामहिम, आपको तकलीफ देने की जुर्रत इसलिए की है कि, बात यह है सेक्रेटरियों पर एक तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता"

"क्या कहा?" वह बड़ी हस्ती बोले, "इस तरह के रवैये तुम्हारे मन में कहा से पैदा हुए हैं? इस तरह के ख्याल तुम्हारे दिमाग में आये कहा से? नौजवान पीढ़ी के लोगों का क्या हाल हो गया है कि अपने हाकिमों और बड़ों के खिलाफ ऐसा बागियाना रुख अपनाते हैं!"

उस बड़ी हस्ती ने, जाहिर है, इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया था कि अकाकी अकाकियेविच पचास की उम्र पार कर चुका था। किसी ऐसे आदमी की अपेक्षा जो सत्तर की उम्र पार कर चुका हो, उसे अलबत्ता नौजवान कहा जा सकता था।

"मालूम है किससे बात कर रहे हो? जानते हो तुम्हारे सामने कौन खड़ा है? क्या यह बात तुम्हारी समझ में आती है, कुछ आती है समझ में? मैं तुमसे सवाल पूछ रहा हूं।"

यहां पहुंचकर उन्होंने जोर से अपना पांव पटका और अपनी आवाज इतनी ऊंची उठायी कि अकाकी अकाकियेविच ही नहीं, कोई भी आदमी डर जाता।

अकाकी अकाकियेविच को जैसे सांप सूंघ गया, वह सिर से पांव तक कांपने लगा, उससे ठीक से खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था अगर नौकरों ने उसी वक्त लपककर उसे सहारा न दिया होता तो वह फर्श पर गिर पड़ता। उसे लगभग बेहोशी की हालत में बाहर ले जाया गया। बड़ी हस्ती को इस बात की बहुत खुशी थी कि उनके

जीवन का हर्जाना हो। पर ऐसा हुआ और हमारी यह सपाट कहानी बहुत ही अप्रत्याशित और कल्पनातीत ढंग से समाप्त हुई। सेंट पीटर्सबर्ग में अचानक हर तरफ ये अफवाहें फैलने लगी कि कालींकिन पुल के पास और उससे बहुत दूर परे तक रात को एक भूत दिखायी देता है। यह भूत एक अफसर के भेस में होता है जो किसी चोरी चले गये ओवरकोट को खोजता रहता है और, ओहदे और रुतबे की कोई परवाह किये बिना, अपना कोट वापस लेने के बहाने हर आदमी के कंधों पर से कोट उतार लेता है बिल्ली की खाल और ऊदबिलाव की खाल के अस्तर लगे हुए कोट, रुई-भरे कोट, वाह, लोमड़ी और रीछ की खाल के कोट, मतलब यह कि हर उस तरह के समूर और खाल के कोट जो इसान ने खुद अपनी खाल को ढकने के लिए कभी भी इस्तेमाल किये हैं। विभाग के एक अफसर ने उस भूत को खुद अपनी आंखों से देखा था और फौरन पहचान लिया था कि वह अकाकी अकाकियेविच था; लेकिन इस बात से उसके दिल में ऐसा डर समाया कि वह दुम दबाकर भागा और इसलिए उसे अच्छी तरह देख नहीं पाया, वह बस इतना ही देख सका कि वह दूर खड़ा उसकी ओर उंगली हिलाकर उसे धमका रहा था। इस तरह की शिकायतों का तांता बंध गया कि नागरिकों को – टाइटुलर काउंसिलरों को ही नहीं बल्कि प्रिवी काउंसिलरों तक को – अपनी पीठ और कंधों पर बुखार के हमले का खतरा था क्योंकि उनके कोट रात को चुरा लिये जाते थे। पुलिस ने हुक्म जारी कर दिया कि किसी भी कीमत पर उस भूत को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ लिया जाये और दूसरों को सबक सिखाने के लिए उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाये, और वे अपनी इस हिदायत को अमल में पूरा करने में लगभग कामयाब भी हो गये थे। किर्यूश्किन गली में गश्त करनेवाले एक संतरी ने अपराध के घटनास्थल पर ही इस मुर्दे का कॉलर उस वक्त दबोच भी लिया था जब वह किसी बूढ़े रिटायर्ड संगीतज्ञ की पीठ पर से, जो किसी ज़माने में बांसुरी बजाया करता था, उसका कोट ज़बर्दस्ती उतार ले रहा था। उसका कॉलर पकड़कर उसने अपने दो साथियों को चिल्लाकर बुला लिया था और उन्हें उस भूत को पकड़े रहने की हिदायत देकर उसने खुद जल्दी से अपने बूट में से नसवार की डिबिया निकाली थी कि अपनी ज़िंदगी में छ बार

तो अपने अन्तःकरण की धिक्कार सुनकर उन्हें गहरा आघात पहुंचा, और वह उस पूरे दिन कुछ उखड़े-उखड़े-से रहे। किसी तरह अपना मन बहलाने और इस बोझिल छाप को अपने दिमाग से निकाल देने की इच्छा से वह एक दोस्त के यहां शाम का वक्त बिताने के लिए चल पड़े, जिनके घर में उन्हें भले लोगों की सोहबत मिली और सबसे अच्छी बात तो यह थी कि वहां सभी लोग एक ही हैसियत के थे, जिसकी वजह से उन्हें किसी भी प्रकार के संकोच का आभास नहीं हुआ। उनकी मनोदशा पर इसका बेहद अच्छा प्रभाव पड़ा। उनका सारा तनाव दूर हो गया, वह बेहद खुशमिज़ाजी से बातचीत करते रहे, सबके साथ बड़ी मिलनसारी के साथ पेश आये और सारांश यह कि उन्होंने उस शाम का पूरा आनंद लिया। खाने के वक्त उन्होंने एक-दो गिलास शैम्पेन के पिये, जो आदमी को खुशमिज़ाज बना देने का जाना-माना तरीका है। शैम्पेन पीकर उनके मन में चुलबुलेपन की तरंग उठी और उन्होंने सीधे घर न जाकर अपनी जान-पहचान की करोलीना इवानोव्ना नामक एक महिला के यहां जाने का फ़ैसला किया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह जर्मन मूल की थी, और जिसके साथ उनके बेहद दोस्ताना ताल्लुकात थे। यहां हम यह बता दें कि वह बड़ी हस्ती अब नौजवान नहीं थे, वह बस अपनी पत्नी के लिए अच्छे पति और अपने बच्चों के लिए अच्छे बाप थे। उनके दोनों बेटे, जिनमें से एक सरकारी नौकरी पर लग चुका था, और उनकी सोलह साल की सुंदर बेटी, जिसकी नाक आगे से कुछ मुड़ी हुई होने के बावजूद ख़ूबसूरत थी, रोज़ उनका हाथ चूमकर कहते थे "Bonjour, papa!"*। उनकी पत्नी जिनके रंग-रूप में अभी तक काफ़ी ताज़गी थी, और जो किसी तरह अनाकर्षक भी नहीं थी, पहले उनके चूमने के लिए अपना हाथ उनकी ओर बढ़ाती थी और फिर उसे उलटकर ख़ुद उनका हाथ चूमती थी। लेकिन उन बड़ी हस्ती ने इन घरेलू पारिवारिक प्यार-भरी बातों से पूरी तरह संतुष्ट रहने के बावजूद, इस बात को बिल्कुल भद्र समझा कि वह शहर के दूसरे हिस्से में एक महिला के साथ मित्रता का संबंध स्थापित करें। उनकी जान-पहचान

* "नमस्ते, पापा!" (फ़्रांसीसी)

मास के साथ कब्र का भयानक आभास देते हुए ये शब्द कहे "अहा! तो तुम हाथ आ ही गये! आखिरकार एक तरह से तुम्हारी गर्दन मेरे पंजे मे आ ही गयी! मुझे तुम्हारे ही ओवरकोट की तो तलाश थी! तुम मेरी मदद नही करना चाहते थे और तुमने उल्टे मुझे फटकारा भी था! तो लाओ, उतार दो अपना कोट!"

बदनसीब **बड़ी हस्ती** की तो डर के मारे जान ही निकल गयी। दफ्तर मे और आम तौर पर अपने से नीचे दर्जे के लोगो के साथ अपने बर्ताव की सख्ती के बावजूद, और अपने तमाम मर्दाना डील-डौल और सूरत-शक्ल के बावजूद, जिन्हे देखकर लोग कह उठा करते थे "सचमुच, क्या आन-बान का पक्का आदमी है!"—इस वक्त, बहादुरो जैसी सूरत-शक्ल के बहुत-से दूसरे लोगो की तरह, वह ऐसी दहशत महसूस करने लगे कि उन्हे डर लगा कि कही उन्हे कोई दौरा न पड जाये। उन्होने जितनी जल्दी हो सका अपना कोट उतार दिया और कोचवान से अस्वाभाविक स्वर मे चिल्लाकर कहा "गाडी घर की तरफ मोड लो, जल्दी करो!"

कोचवान ने उनकी वह आवाज़ सुनकर, जो आम तौर पर निर्णय के क्षणो मे इस्तेमाल की जाती है और जिसके साथ आम तौर पर कोई इससे भी ज्यादा ज़ोरदार बात जुडी होती है, बडी सावधानी बरतते हुए अपना सिर कंधो के बीच दुबका लिया, चाबुक फटकारी और वे इस तरह सरपट आगे बढ चले जैसे कमान से कोई तीर छोड दिया गया हो। लगभग छ मिनट मे वह बडी हस्ती अपने घर के फाटक पर पहुच चुके थे। करोलीना इवानोव्ना के यहा जाने की योजना त्यागकर, उतरा हुआ चेहरा और दिल मे गहरी दहशत का आघात लिये वह कोट के बिना ही अपनी बर्फगाडी पर घर पहुचे थे। किसी तरह लडखडाते हुए वह अपने कमरे मे घुसे और सारी रात उन्होंने ऐसी बेचैनी मे काटी कि अगले दिन सवेरे उनकी बेटी ने उनसे साफ-साफ कहा "पापा, आज आपका चेहरा बिल्कुल उतरा हुआ लग रहा है।" लेकिन पापा ने अपनी जबान नही खोली और इसके बारे मे किसी से एक शब्द भी नही कहा कि क्या हुआ था, वह कहा गये थे और कहा जाने की योजना बना रहे थे। इस घटना का उन पर बेहद गहरा असर पडा। उन्होंने अब हर मौके पर अपने से नीचे दर्जे के लोगो

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

रादुगा प्रकाशन,

१७ ज़ूबोव्स्की बुलवार
मास्को, सोवियत संघ।